1-11-81

सेवा की सफलता की कुंजी

सदा कृपालु, दयालु, अव्यक्त बापदादा अपने ईश्वरीय सेवाधारियों प्रति बोले:

''आज बापदादा सर्व बच्चों को किस रूप में देख रहे हैं अर्थात् अपने खुदाई खिदमतगार बच्चों को देख रहे हैं। जो हैं ही खुदाई खिदमतगार उन्हों को सदा स्वत: ही खुदा और खिदमत अर्थात् बाप और सेवा दोनों साथ-साथ याद रहती ही हैं। वैसे भी आजकल की दुनिया में कोई किसका कार्य नहीं करता वा सहयोगी नहीं बनता तो एक दो को कहते हैं – भगवान के नाम से यह काम करो। वा खुदा के नाम से यह काम करो। क्योंकि समझते हैं – भगवान के नाम से सहयोग मिल जायेगा और सफलता भी मिल जायेगी। कोई असम्भव कार्य वा होपलेस बात होती है तो भी यही कहते हैं – ''भगवान का नाम लो तो काम हो जायेगा।'' इससे क्या सिद्ध होता है?असम्भव से सम्भव, ना उम्मीद से उम्मीदवार कार्य बाप ने आकर किये हैं तब तो अब तक भी यह कहावत चलती आती है। परन्तु आप सब तो हैं ही 'खुदाई खिदमतगार'। सिर्फ़ भगवान का नाम लेने वाले नहीं लेकिन भगवान के साथी बन श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं। तो खुदाई खिदमतगार बच्चों के हर कार्य सफल हुए ही पड़े हैं। खुदाई खिदमतगार के कार्य में कोई असम्भव बात नहीं। सब सम्भव और सहज है।। खुदाई खिदमतगार बच्चों को विश्व-परिवर्तन का कार्य क्या मुश्किल लगता है? हुआ ही पड़ा है। ऐसे अनुभव होता है ना? सदा यही अनुभव करते हो-कि यह तो अनेक बार किया हुआ है। कोई नई बात ही नहीं लगती। होगा, नहीं होगा, कैसे होगा, यह क्वेश्चन ही नहीं उठता। क्योंकि बाप के साथी हो। जबकि अब तक सिर्फ़ भगवान के नाम से ही काम हो जाते तो साथ में कार्य करने वाले बच्चों का हर कार्य तो सफल हुआ ही पड़ा है। इसलिए बापदादा बच्चों को सदा सफलतामूर्त कहते हैं। सफलता के सितारे अपने सफलता द्वारा विश्व को रोशन करने वाले। तो सदा अपने को ऐसे सफलतामूर्त अनुभव करते हो? अगर चलते-चलते कभी असफलता या मुश्किल का अनुभव होता है तो उसका कारण सिर्फ़ खिदमतगार बन जाते हो। खुदाई खिदमत-गार नहीं होते। खुदा को खिदमत से जुदा कर देते हो। इसलिए अकेले होने के कारण सहज भी मुश्किल हो जाता और सफलता दूर दिखाई देती है। लेकिन नाम ही है – खुदाई खिदमतगार। तो कम्बाइन्ड को अलग नहीं करो। लेकिन अलग कर देते हो ना! सदा यह नाम याद रहे तो सेवा में स्वत: ही खुदाई जादू भरा हुआ होगा। सेवा के क्षेत्र में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के स्व प्रति वा सेवा प्रति विघ्न आते हैं, उसका भी कारण सिर्फ़ यही होता, जो स्वयं को सिर्फ़ सेवाधारी समझते हो। लेकिन ईश्वरीय सेवाधारी, सिर्फ़ सर्विस नहीं लेकिन गाडली-सर्विस – इसी स्मृति से याद और सेवा स्वत: ही कम्बाइन्ड हो जाती है। याद और सेवा का सदा बैलेन्स रहता है। जहाँ बैलेन्स है वहाँ स्वयं सदा ब्लिसफुल अर्थात् आनन्द स्वरूप और अन्य के प्रति सदा ब्लैसिंग अर्थात् कृपा-दृष्टि सहज ही रहती है। इसके ऊपर कृपा करूँ, यह सोचने की भी आवश्यकता नहीं। हो ही कृपालु। सदा का काम ही कृपा करना है। ऐसे अनादि संस्कार स्वरूप हुए हैं! जो विशेष संस्कार होता है वह स्वत: ही कार्य करते रहते हैं। सोच के नहीं करते लेकिन हो ही जाता है। बार-बार यही कहते हो – मेरे संस्कार ऐसे हैं, इसलिए हो ही गया। मेरा भाव नहीं था, मेरा लक्ष्य नहीं था लेकिन हो गया। क्यों ? संस्कार हैं। कहते हो ना-ऐसे? कई कहते हैं – हमने क्रोध नहीं किया लेकिन मेरे बोलने के संस्कार ही ऐसे हैं। इससे क्या सिद्ध हुआ? अल्पकाल के संस्कार भी स्वत: ही बोल और कर्म कराते रहते हैं। तो सोचो-अनादि,आरिजनल संस्कार आप श्रेष्ठ आत्माओं के कौन से हैं? सदा सम्पन्न और सफलतामूर्त। सदा वरदानी और महादानी- तो यह संस्कार स्मृति में रहने से स्वत: ही सर्व के प्रति कृपा-दृष्टि रहती ही है। अल्पकाल के संस्कारों को अनादि संस्कारों से परिवर्तन करो। तो भिन्न-भिन्न प्रकार के विघ्न, अनादि संस्कार इमर्ज होने से सहज समाप्त हो जायेंगे। बापदादा को अब तक भी बच्चों की स्व-परिवर्तन वा विश्व-परिवर्तन की सेवा में मेहनत देख सहन नहीं होता। खुदाई खिदमतगार और मेहनत! जब नाम से काम निकाल रहे हैं, तो आप तो अधिकारी हो। आप लोगों की मेहनत कैसे हो सकती है? फिर छोटी सी ग़लती करते हो-कौन सी? ग़लती करते हो-कौन सी? ग़लती करते हो, जानते हो? जानते भी अच्छी तरह से हो फिर क्यों करते हो? मजबूर बन जाते हो। सिर्फ़ छोटी सी ग़लती –''मेरा संस्कार,मेरा स्वभाव'', अनादि काल के बजाए मध्यकाल के समझ लेते हो। मध्यकाल के संस्कार, स्वभाव को मेरा संस्कार, मेरा स्वभाव सम-झना यही ग़लती है। यह रावण का स्वभाव है, आप का नहीं है। पराई चीज़ को अपना मानना, यही ग़लती करते हो। मेरा कहने और समझने से मेरे में स्वत: ही झुकाव हो जाता है। इसलिए छोड़ने चाहते भी छोड़ नहीं सकते । समझा – ग़लती क्या है?

तो सदा याद रखो – खुदाई खिदमतगार हैं। ''मैंने किया'' – नहीं, खुदा ने मेरे से कराया। इस एक स्मृति से सहज ही सर्व विघ्नों के बीज को सदा के लिए समाप्त कर दो। सर्व प्रकार के विघ्नों का बीज दो शब्दों में है। वह कौन से दो शब्द हैं जिन शब्दों से ही विघ्न का रूप आता है? विघ्न आने के दरवाज़े को जानते हो? तो वह नामीग्रामी दो शब्द कौन-से हैं? विस्तार तो बहुत है लेकिन दो शब्दों में सार आ जाता है– 1. अभिमान और 2. अपमान। सेवा के क्षेत्र में विशेष विघ्न इन दो रास्तों से आता है। या तो ''मैंने किया'', यह अभिमान और अपमान की भावना भिन्न-भिन्न विघ्नों के रूप में आ जाती है। जब है ही खुदाई खिदमतगार, करन-

www.bkzone.in

करावनहार बाप है तो छोटी-सी ग़लती है ना! इसलिए कहा जाता कि खुदा को जुदा नहीं करो। सेवा में भी कम्बाइन्ड रूप याद रखो। खुदा और खिदमत। तो यह करना नहीं आता? बहुत सहज है। मेहनत से छूट जायेंगें। समझा क्या करना है? अच्छा।

ऐसे सदा अनादि संस्कार स्मृति स्वरूप, सदा स्वयं को निमित्त मात्र और बाप को करन-करावनहार अनुभव करने वाले, सदा स्वयं अनादि स्वरूप अर्थात् ब्लिसफुल, किसी भी प्रकार के विघ्नों के बीज को समाप्त करने में समर्थ आत्मायें, ऐसे सदा बाप के साथी, ईश्वरीय सेवाधारियों को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।''

अधरकुमारों से :– सभी अपने को बाप के स्नेही और सहयोगी श्रेष्ठ आत्मायें समझते हो ना? सदा यह नशा रहता है कि हम श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ आत्मायें हैं क्योंकि बाप के साथ पार्ट बजाने वाली हैं। सारे चक्र के अन्दर इस समय बाप के साथ पार्ट बजाने के निमित्त बने हो। ऊंच-ते ऊंच पार्ट बजाने के निमित्त बने हो। ऊंचे-ते-ऊंचे भगवान के साथ पार्ट बजाने वाले कितनी ऊंची आत्मायें हो गई। लौकिक में भी कोई पद वाले के साथ काम करते हैं, उनको भी कितना नशा रहता है! प्राइम मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेटरी को भी कितना नशा रहता! तो आप किसके साथ हो? ऊंचे-ते-ऊंचे बाप के साथ और फिर उसमें भी विशेषता यह है कि एक कल्प के लिए नहीं, अनेक कल्प यह पार्ट बजाया है और सदा बजाते ही रहेंगे। बदली नहीं हो सकता। ऐसे नशे में रहो तो सदा निर्विघ्न रहेंगे। कोई विघ्न तो नहीं आता है ना? वायुमण्डल का, वायब्रेशन का, संग का कोई विघ्न तो नहीं है? कमलपुष्प के समान हो? कमल-पुष्प समान न्यारा और प्यारा। बाप का कितना प्यारा बना हूँ, उसका हिसाब न्यारेपन से लगा सकते हो। अगर थोड़ा-सा न्यारा है, बाकी फंस जाते हैं तो प्यारे भी इतने होंगे। जो सदा बाप के प्यारे हैं उनकी निशानी है – स्वत: याद। प्यारी चीज़ स्वत: सदा याद आती है ना! तो यह कल्प-कल्प की प्रिय चीज़ है। एक बार बाप के नहीं बने हो, कल्प-कल्प बने हो। तो ऐसी प्रिय वस्तु को कैसे भूल सकते! भूलते तब हो जब बाप से भी अधिक कोई व्यक्ति या वस्तु को प्रिय समझने लगते हो। अगर सदा बाप को प्रिय समझते तो भूल नहीं सकते। यह नहीं सोचना पड़ेगा कि याद कैसे करें, लेकिन भूले कैसे – -यह आश्चर्य लगेगा! तो नाम अधर-कुमार है लेकिन हो तो ब्र.कु.। ब्रह्माकुमार सदा नशे और खुशी में रहेंगे। तो निश्चयबुद्धि विजयी हो ना? अधरकुमार तो अनुभवी कुमार हैं। सब अनुभव कर चुके। अनुभवी कभी भी धोखा नहीं खाते। पास्ट के भी अनुभवी और वर्तमान के भी अनुभवी। एक-एक अधरकुमार अपने अनुभवों द्वारा अनेंकों का कल्याण कर सकते हैं। यह है विश्व-कल्याणकारी ग्रुप। अच्छा।

माताओं को :– प्रवृत्ति में रहते एक बाप दूसरा न कोई इसी स्मृति में रहती हो, यह चेकिंग करती हो? क्योंकि प्रवृत्ति के वायुमण्डल में रहते, उस वायुमण्डल का असर न हो, सदा बाप के प्यारे रहें इसके लिए इसी बात की चेकिंग चाहिए। निमित्त मात्र प्रवृत्ति है लेकिन बाप की याद में रहना। परिवार की सेवा का कितना भी पार्ट बजाना पड़े लेकिन ट्रस्टी होकर बजाना है। ट्रस्टी होंगे तो नष्टोमोहा हो जायेंगे। गृहस्थीपन होगा तो मोह आ जायेगा। बाप याद नहीं आता माना मोह है। बाप की याद से हर प्रवृत्ति का कार्य भी सहज हो जायेगा क्योंकि याद से शक्ति मिलती है। तो बाप के याद की छत्रछाया के नीचे रहती हो ना? छत्रछाया के नीचे रहने वाले हर विघ्न से न्यारे होंगे। मातायें तो बापदादा को अति प्रिय हैं क्योंकि माताओं ने बहुत सहन किया है। तो बाप ऐसे बच्चों को सहन करने का फल – सहयोग और स्नेह दे रहे हैं। सदा सुहागवती रहना। इस जीवन में कितना श्रेष्ठ सुहाग मिल गया है। जहाँ सुहाग है वहाँ भाग्य तो है ही। इसलिए सदा सुहागवती भव!

यू.पी.और गुजरात ज़ोन बापदादा के सामने बैठा है, बापदादा उनकी विशेषता सुना रहे हैं

सर्व स्थानों की अपनी-अपनी विशेषता है। यू.पी. भी कम नहीं तो गुजरात भी कम नहीं। दिल्ली के बाद यू.पी. निकला। जो आदि में स्थापना के निमित्त बने हैं उन्हों का भी ड्रामा में विशेष पार्ट है। फिर भी आदि वालों ने डबल लाटरी तो ली है ना! साकार और निराकार। डबल लाटरी मिली है। यह भी कोई कम पार्ट है क्या! कल्प-कल्प के चरित्र में सदा साथ रहने का भी यादगार है। यह भी विशेष भाग्य है। अभी भी बापदादा अव्यक्त रूप में सब पार्ट बजाते हैं लेकिन साकार तो साकार है। साकार वालों की अपनी विशेषता इन्हों की फिर अपनी विशेषता है। यह अव्यक्त से साकार का स्नेह खींचने वाले हैं। कई हैं जो साकार के साथ रहने वालों से भी अधिक अनुभव अभी करते हैं। तो सब एक-दो से आगे हैं। अच्छा!

आज यू.पी. वालों का चांस है। नदियों के किनारे पर यू.पी. ज्यादा है। जमुना नदी के किनारे पर राजधानी और रास दिखाते हैं लेकिन यू.पी. की पतित पावनी मशहूर है,यानी यू.पी. को सेवा का स्थान दिखाया है। तो ऐसा कोई यू.पी.से निकला ज़रूर जो अनेकों की सेवा के निमित्त बने। ऐसा कोई तैयार हो जायेगा। जैसे अमेरिका से एक से अनेकों की सेवा हो रही है,ऐसे यू.पी. से भी कोई निकल आयेगा जो एक से अनेकों की सेवा हो जायेगी। आवाज़ तो फैलेगा ना! जब विदेश से आवाज़ आयेगा तब सब जाग जायेंगे। अभी एकदम बड़ा वी.आई.पी. नहीं निकला है। अभी तक जो वी.आई.पी. निकले हैं उनसे ज्यादा नामीग्रामी तो वही विदेश का कहेंगे ना! जो प्रैक्टिकल अनेकों को सन्देश दिलाने के निमित्त बन रहे हैं। भारत भी आगे जा सकता है, लेकिन अभी की बात है। आखिर जय-जयकार तो भारत में ही होनी है ना! विदेश से भी जय-जयकार के नारे लगाते-लगाते पहुँचेंगे तो भारत में ही ना! उन्हों के मुख से भी यही निकलेगा – हमारा भारत। भारत में बाप आये हैं, ऐसे नहीं कहेंगे कि यू.एन. में बाप आये हैं। विदेश

इस समय रेस में आगे जा रहा है। अभी की बात है, कल दूसरा भी बदल सकता है। एक-दो को देख करके और ही आगे बढ़ेंगे। अभी यू.पी. का कोई वी.आई.पी. लाओ। पतित-पावनी! कोई को पावन करके छू मंत्र करो।

गुजरात वृद्धि में नम्बरवन हो गया है। वी.आई.पीज़ भी स्टेज पर आ जायेगे। ऐसे वी.आई.पीज़ हो जो बेहद की सेवा करें। गुजरात का गुजरात में किया वह तो छोटा माइक हो गया। चारों ओर करें उसको कहेंगे बड़ा माइक। अच्छा!

प्रश्न: जो संगम पर मास्टर नालेजफुल बन जाते हैं, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:मा.नालेजफुल सदा मायाजीत होंगे। क्योंकि वह जानते हैं कि माया किस रूप से और क्यों आती है? माया के आने का मुख्य कारण अपनी कमज़ोरी है। कमज़ोरी ही माया को जन्म देती है। संकल्प या संस्कार में जब कमज़ोरी होती है तो माया को जन्म मिल जाता है। इसलिए नालेजफुल बच्चे, कारण को जानकर पहले ही सदाकाल का निवारण कर देते हैं। संगम पर हर बात में नालेज़फुल बनना है, तन के भी नालेजफुल, मन के भी नालेजफुल और धन के भी नालेजफुल। ऐसे नालेजफुल ही पावरफुल बन मायाजीत, जगतजीत बन जाते हैं। अच्छा!

3-11-81

योद्धा नहीं, दिलतख्तनशीन बनो

दूर देश में रहने वाले परदेशी बापदादा बोले:-

''आज दूरदेश में रहने वाले परदेशी अपने बच्चों से मिलने आये हैं। बच्चों को भी स्वदेश की स्मृति दिलाने आये हैं। और समर्थ बनाए साथ ले जाने आये हैं। स्वदेश स्मृति में आ गया है ना? यह पराया देश और पराया राज्य है,जिसमें पुराना-ही-पुराना दिखाई देता है। व्यक्ति देखो वा वस्तु देखो सब क्या दिखाई देता है? सब जड़जड़ीभूत हो गये हैं। चारों ओर अंधकार छाया हुआ है। ऐसे देश में आप सभी बंधनों में बंधे हुए बन्धनयुक्त आत्मा बन गये तब बाप आकर स्वरूप और स्वदेश की स्मृति दे बन्धनमुक्त बनाए स्वदेश में ले जाते हैं। साथ-साथ स्वराज्य के अधिकारी बनाते हैं। तो सभी बच्चे अपने स्वदेश में जाने के लिए तैयार हो? वा जैसे आप लोग एक ड्रामा दिखाते हो,स्वर्ग में जाने के लिए चाहते हुए भी कोई विरला तैयार होता है। ऐसे ही बातें बनाकर ''चलेंगे-चलेंगे कहने वाले तो नहीं हो? हिसाब-किताब समाप्त कर लिया है वा अभी कुछ रहा हुआ है? अपने हिसाब-किताब के समाप्ति का समाप्ति समारोह मना लिया है वा अभी तक तैयारी ही कर रहें हो? ऐसे तो नहीं समझते हो कि अन्त में यह समाप्ति समारोह मनायेंगे? समाप्ति समारोह अब से मनायेंगे तब अन्त में सम्पूर्णता समारोह मनायेंगे। यह पुराना हिसाब-किताब समाप्त करना है। वह अब करने से बहुतकाल के बन्धनमुक्त,बहुतकाल के जीवनमुक्त पद को पा सकेंगे। नहीं तो अन्त तक युद्ध करने वाले योद्धा ही रह जायेंगे। जो अन्त तक योद्धा जीवन में रहता उसकी प्रालब्ध क्या होगी? योद्धा जीवन तो बचपन का जीवन है। अब तो स्वराज्य-अधिकारी हो गये। स्मृति का तिलक,बाप के दिलतख्तनशीन हो गये। तख्तनशीन योद्धे होते हैं क्या? युद्ध की प्रालब्ध तख्त और ताज मिल गया। क्या यह वर्तमान प्रालब्ध वा प्रत्यक्षफल प्राप्त नहीं हुआ है? संगमयुग की प्रालब्ध पा ली है वा पानी है? गीत क्या गाते हो? पाना था वह पा लिया वा पाना है? जबकि वर्तमान के साथ भविष्य का सम्बन्ध है तो भविष्य प्रालब्ध 2500 वर्ष है तो क्या वर्तमान प्रालब्ध अन्त के 5-6 मास होगी वा 5 दिन होगी वा 5 घण्टे होगी वा संगम का बहुकाल होगा? अगर संग-मयुग की प्रालब्ध बहुकाल नहीं होगी तो भविष्य प्रालब्ध बहुकाल कैसे होगी? वहाँ के 2500 वर्ष, यहाँ के 25 वर्ष भी नहीं होगी? डायरेक्ट बाप के बच्चे बन संगमयुग का सदाकाल का वर्सा न पाया तो पाया ही क्या? सर्व खज़ानों के खानों के मालिक उसके बालक बन खज़ानों से सम्पन्न नहीं बने तो मालिक के बालक बनकर क्या किया?

''सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है'' – यह कहते सदा सफलता का अनुभव नहीं किया तो जन्मसिद्ध अधिकारी बनके क्या किया? भाग्य विधाता के दोनों बाप के बच्चे बने फिर भी सदा पद्मापद्म भाग्यशाली न बने तो दो बाप के बच्चे बनके क्या किया? श्रेष्ठ कर्मों की वा श्रेष्ठ चरित्र बनाने की अति सहज विधि वरदाता बनके बाप ने दी फिर भी सिद्धि स्वरूप नहीं बने तो क्या किया?

क्या युद्ध करना, मेहनत करना, धीरे-धीरे आराम से चलना,यही पसन्द है क्या? युद्ध का मैदान पसन्द आता है? दिलतख्त पसन्द नहीं है क्या? अगर तख्त ही पसन्द है, तो तख्तनशीन के पास माया आ नहीं सकती। तख्त से उतर युद्ध के मैदान में चले जाते हो तब मेहनत करनी पड़ती है। जैसे कई बच्चे होते हैं, लड़ने-झगड़ने के बिना रह नहीं सकते,और कोई नहीं मिलेगा तो अपने से ही कोई-न-कोई कशमकश करते रहेंगे। युद्ध के संस्कार राज्य तख्त छुड़ा के भी युद्ध के मैदान में ले जाते हैं। अब युद्ध के संस्कार समाप्त करो। राज्य कें संस्कार धारण करो। प्रालब्धी बनो। तब बहुकाल के भविष्य प्रालब्धी भी बनेंगे। अन्त तक योद्धेपन की जीवन होगी तो क्या बनेंगे? चन्द्रवंशी बनाना पडेंगा।

सूर्यवंशी की निशानी – सदा खुशी की रास करने वाले। सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले। चन्द्रवंशी राम को कब झूले में नहीं झुलाते हैं। रास नहीं दिखाते हैं। युद्ध का तीर कमान ही दिखाते हैं। पीछे का राज्य भाग्य मिलेगा। आधा समय का राज्य बहुकाल तो नहीं हुआ ना! तो सदा झूले में झूलते रहो। सर्व से रास मिलाते हुए,खुशी की रास करते रहो। इसको कहा जाता है –

संगमयुग की प्रालब्ध स्वरूप। पुरुषार्थी हैं, यह शब्द भी कहाँ तक ?

अभी-अभी पुरुषार्थी,अभी-अभी प्रालब्धी। संगम के पुरुषार्थी, सतयुग के प्रालब्धी नहीं। संगमयुग के प्रालब्धी के बनना है। अभी अभी बीज बोओ, अभी-अभी फल खाओ। जब साइंस वाले भी हर कार्य में प्राप्ति के गति को तीव्र बना रहे हैं, तो साइलेंस की शक्ति वाले अपने गति को उससे भी ज्यादा तीव्र करेंगे ना! वा एक जन्म में करना और दूसरे जन्म में पाना ? वे लोग आवाज़ की गति से भी तेज जाने चाहते हैं। सब कार्य सेकेण्ड की गति से भी आगे करना चाहते हैं। इतने सारे विश्व का विनाश कितने थोड़े समय में करने के लिए तैयार हो गये हैं? तो स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्मायें सेकेण्ड में करना,सेकेण्ड में पाना,ऐसी तीव्र गति के अनुभवी नहीं होंगे। तो समझा – अभी क्या करना है ? प्रत्यक्ष फल खाओ। प्रत्यक्षफल नहीं अच्छा लगता ? मेहनत करने वाला फल अच्छा लगता है ? मेहनत का सूखा फल खा के तो ऐसे कमज़ोर बन गये, नयनहीन, बुद्धिहीन, श्रेष्ठ कर्महीन बन गये। अब तो ताजा प्रत्यक्षफल खाओ। मेहनत को मुहब्बत में बदल दो। अच्छा।

ऐसे सदा राज्य वंश के संस्कार वाले, सदा सर्व ख़ज़ानों के अधिकारी अर्थात् बालक सो मालिक, सदा संगमयुगी प्रालब्धी संस्कार वाले, प्रत्यक्षफल खाने वाले, ऐसे सदा प्राप्ति स्वरूप, सदा सर्व बन्धनमुक्त, संगमयुगी जीवनमुक्त, ऐसे तख्त, ताजधारी बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।''

पार्टियों के साथ पर्सनल मुलाकात

1. सदा रूहानी नशे में स्थित रहते हो ? रूहानी नशा अर्थात् आत्म-अभिमानी बनना। सदा चलते-फिरते आत्मा को देखना यही है रूहानी नशा। रूहानी नशे में सदा सर्व प्राप्ति का अनुभव सहज ही होगा। जैसे स्थूल नशे वाले भी अपने को प्राप्तिवान समझते हैं, वैसे यह रूहानी नशे में रहने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप बन जाते हैं। इस नशे में रहने से सर्व प्रकार के दु:ख दूर हो जाते हैं। दु:ख और अशान्ति को विदाई हो जाती है। जब सदाकाल के लिए सुखदाता के, शान्तिदाता के बच्चे बन गये तो दु:ख अशान्ति को विदाई हो गई ना! अशान्ति का नामनिशान भी नहीं। शान्ति के सागर के बच्चे अशान्त कैसे हो सकते ? रूहानी नशा अर्थात् दु:ख और अशान्ति की समाप्ति। उसकी विदाई का समारोह मना दिया ? क्योंकि दु:ख अशान्ति की उत्पत्ति होती है अपवित्रता से। जहाँ अपवित्रता नहीं वहाँ दु:ख अशान्ति कहाँ से आई। पतित पावन बाप के बच्चे मास्टर पतित पावन हो गये। जो औरों को पतित से पावन बनाने वाले हैं वह स्वयं भी तो पावन होंगे ना! जो पावन पवित्र आत्मायें हैं उनके पास सुख और शान्ति स्वत: ही है। तो पावन आत्मायें,श्रेष्ठ आत्मायें विशेष आत्मायें हो। विश्व में महान आत्मायें हों क्योंकि बाप के बन गये। सबसे बड़े ते बड़ी महानता है – पावन बनना। इसलिए आज भी इसी महानता के आगे सिर झुकाते हैं। वह जड़ चित्र किसके हैं? अभी मन्दिर में जायेंगे तो क्या समझेंगे ? किसकी पूजा हो रही है ? स्मृति में आता है-कि यह हमारे ही जड़ चित्र हैं। ऐसे अपने को महान आत्मा समझकर चलो। ऐसे दिव्य दर्पण बनो जिसमें अनेक आत्माओं को अपनी असली सूरत दिखाई दे।

2.सदा चढ़ती कला में जा रहे हो ? हर कदम में चढ़ती कला के अनुभवी। संकल्प, बोल, कर्म, सम्पर्क और सम्बन्ध सबमें सदा चढ़ती कला। क्योंकि समय ही है चढ़ती कला का, और कोई भी युग चढ़ती कला का नहीं है। संगमयुग ही चढ़ती कला का युग है, तो जैसा समय वैसा ही अनुभव होना चाहिए। जो सेकण्ड बीता उसके आगे का सेकण्ड आया, तो चढ़ती कला। ऐसे नहीं – दो मास पहले जैसे थे वैसे ही अभी हो। हर समय परिवर्तन। लकिन परिवर्तन भी चढ़ती कला का। किसी भी बात में रुकने वाले नहीं। चढ़ती कला वाले रुकते नहीं हैं, वे सदा औरों को भी चढ़ती कला में ले जाते हैं।

प्रश्न :– जो सदा उड़ते पंछी होंगे उनकी निशानी क्या होगी ?

उत्तर :– वह चक्रवर्ती होंगे। आलराउन्ड पार्टधारी। उड़ती कला वाले ऐसे निर्बन्धन होंगे जो जहाँ भी सेवा हो वहाँ पहुँच जायेंगे। और हर प्रकार की सेवा में सफलतामूर्त बन जायेंगे। जैसे बाप आलराउन्ड पार्टधारी है, सखा भी बन सकते तो बाप भी बन सकते, ऐसी उड़ती कला वाले जिस समय जो सेवा की आवश्यकता होगी उसमें सम्पन्न पार्ट बजा सकेंगे, इसको ही कहा जाता है – आलराउन्ड उड़ता पंछी। अच्छा!

6-11-81

विशेष युग का विशेष फल

सदा कल्याणकारी शिव बाबा विश्व-कल्याण के आधारमूर्त बच्चों प्रति बोले:-

''आज विश्व-कल्याणकारी बाप अपने विश्व-कल्याण के कार्य के आधारमूर्त बच्चों को देख रहे हैं। यही आधारमूर्त विश्व के परिवर्तन करने में विशेष आत्मायें हैं। ऐसी विशेष आत्माओं को बापदादा भी सदा विशेष नज़र से देखते हैं। हरेक विशेष आत्मा की विशेषता सदा बापदादा के पास स्पष्ट सातने है। हर बच्चा महान है,पुण्य आत्मा है। पुरुषोत्तम अर्थात् देव आत्मा है। विश्व-परिवर्तन के निमित्त आत्मायें हैं। ऐसे हरेक अपने को समझकर चलते हो ? क्या थे और क्या बन गये हैं? यह महान अन्तर सदा सामने रहता

है? यह अन्तर महामन्त्र स्वरूप स्वत: बना देता है। ऐसा अनुभव करते हो? जैसे बाप के सामने सदा हरेक बच्चा विशेष आत्मा के रूप में सामने रहता है वैसे आप सब भी अपनी विशेषता और सर्व की विशेषता यही सदा देखते हो? सदा कीचड में रहने वाले कमल को देखते हो? वा कीचड़ और कमल दोनों को देखते हो? संगमयुग विशेष युग है और इसी विशेष युग में आप सर्व विशेष आत्माओं का विशेष पार्ट हैं। क्योकि बापदादा के सहयोगी हो। विशेष आत्माओं का कर्त्तव्य क्या है? स्व की विशेषता द्वारा विशेष कार्य में रहना अर्थात् अपनी विशेषता का सिर्फ़ मन में वा मुख से वर्णन नहीं करना लेकिन विशेषता द्वारा कोई विशेष कार्य कर दिखाना। जितना अपनी विशेषता को मंसा वा वाणी और कर्म की सेवा में लगायेंगे तो वही विशेषता विस्तार को पाती जायेगी। सेवा में लगाना अर्थात् एक बीज से अनेक फल प्रगट करना। ऐसे स्व की चेकिंग करो कि बाप द्वारा इस श्रेष्ठ जीवन में जो जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में विशेषता मिली है उसको सिर्फ़ बीज रूप में ही रखा है वा बीज को सेवा की धरनी में ड़ाल विस्तार को पाया है? अर्थात् अपने स्वरूप वा सेवा के सिद्धि स्वरूप के अनुभव किये हैं? बापदादा ने सर्व बच्चों की विशेषता के तकदीर की लकीर जन्म से ही खींच ली है। जन्म से हर बच्चे के मस्तक पर विशेषता के तकदीर का सितारा चमका हुआ ही है। कोई भी बच्चा इस तकदीर से वंचित नहीं है। यह तकदीर जगा करके ही आये हो। फिर अन्तर क्या हो जाता ? जो सुनाया कि कोई इस वरदान के बीज को, तकदीर के बीज को वा जन्मसिद्ध अधिकार के बीज को विस्तार में लाते, कोई बीज को कार्य में न लाने के कारण शक्तिहीन बीज कर देते हैं। जैसे बीज को समय पर कार्य में नहीं लगाओ तो फल दायक बीज नहीं रहता। कोई फिर क्या करते? बीज को सेवा की धरनी में ड़ालते भी हैं लेकिन फल निकलने से पहले वृक्ष को देख उसी में ही खुश हो जाते हैं कि मैंने बीज को कार्य में लगाया। इसकी रिजल्ट क्या होती? वृक्ष बढ़ जाता, डाल-डालियाँ शाखायें उपशाखायें निकलती रहती, लेकिन वृक्ष बढ़ता लेकिन फल नहीं आता। देखने में वृक्ष बड़ा सुन्दर होता लेकिन फल नहीं निकलता। अर्थात् जो जन्मसिद्ध अधिकार रूप में विशेषता मिली उससे न स्वयं सफलता रूपी फल पायेगा, न औरों को उस विशेषता द्वारा सफलता स्वरूप बना सकेगा। विशे-षता के बीज का सबसे श्रेष्ठ फल है – ''सन्तुष्टता''। इसीलिए आजकल के भक्त सन्तोषी माँ की पूजा ज्यादा करते हैं। तो सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट रखना – यह है विशेष युग का विशेष फल।

कई बच्चे ऐसे फलदायक नहीं बनते। वृक्ष का विस्तार अर्थात् सेवा का विस्तार कर लेंगे लेकिन बिना सन्तुष्टता के फल के वृक्ष क्या काम का? तो विशेषता के वरदान वा बीज को सर्वशक्तियों के जल से सींचो तो फल दायक हो जायेंगे। नहीं तो विस्तार हुआ वृक्ष भी समय प्रति समय आये हुए तूफान से हिलते-हिलते कब कोई डाली,कब कोई डाली टूटती रहेगी। फिर क्या होगा? वृक्ष होगा सूखा हुआ वृक्ष। कहाँ एक तरफ सूखा वृक्ष-जिसमें आगे बढ़ने का उमंग, उत्साह, खुशी, रूहानी नशा कोई भी हरियाली नहीं, न बीज में हरियाली, न वृक्ष में। और साथ-साथ दूसरे तरफ सदा हराभरा फलदायक वृक्ष। कौन-सा अच्छा लगेगा? इसलिए बाप-दादा ने विशेषता के वरदान का शक्तिशाली बीज सब बच्चों को दिया है। सिर्फ़ विधिपूर्वक फलदायक बनाओ। यह रही स्व के विशेषता की बात। अब विशेष आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा रहते हो क्योंकि ब्राह्मण परिवार अर्थात् विशेष आत्माओं का परिवार। तो परिवार के सम्पर्क में आते हरेक की विशेषता को देखो। विशेषता देखने की ही दृष्टि धारण करो। अर्थात् विशेष चश्मा पहन लो। आजकल फैशन और मजबूरी चश्में की है। तो विशेषता देखने वाला चश्मा पहनो। तो दूसरा कुछ दिखाई नहीं देगा। जब साइंस के साधनों द्वारा लाल चश्मा पहनो तो हरा भी लाल दिखाई दे सकता है। तो इस विशेषता की दृष्टि द्वारा विशेषता ही देखेंगे। कीचड़ को नहीं देख, कमल को देखेंगे और हरेक की विशेषता द्वारा विश्व-परिवर्तन के कार्य में विशेष कार्य के निमित्त बन जायेंगे। तो एक बात – अपनी विशेषता को कार्य में लगाओ, विस्तार कर फलदायक बनाओ, दूसरी बात – सर्व में विशेषता देखो। तीसरी बात – सर्व की विशेषताओं को कार्य में लगाओ। चौथी बात – विशेष युग की विशेष आत्मा हो, इसलिए सदा विशेष संकल्प, बोल और कर्म करना है। तो क्या हो जायेगा? विशेष समय मिल जायेगा। क्योंकि विशेष न समझने के कारण स्वयं द्वारा स्वयं के विघ्न और साथ-साथ सम्पर्क में आने से भी आये हुए विघ्नों में समय बहुत जाता है। क्योंकि स्वयं की कमजोरी वा औरों की कमजोरी, इसकी कथा और कीर्तन, दोनों बड़े लम्बे होते हैं। जैसे आपके यादगार ''रामायण'' को देखा-तो कथा और कीर्तन दोनों ही बड़े दिलचस्प और लम्बे हैं। लेकिन है क्या? विशेषता न देख ईर्ष्या में आये तो कितना लम्बा कीर्तन और कहानी हो गई! ऐसे विशेषता को न देखने से लक्ष्मी-नारायण की कथा के बजाए रामकथा बन जाती है। और इसी कथा कीर्तन में स्वयं का, सेवा का समय व्यर्थ गंवाते हो। और भी मजे की बात करते हो, सिर्फ़ अकेला कीर्तन कथा नहीं करते लेकिन कीर्तन मण्डली भी तैयार करते हैं – इसीलिए सुनाया कि इस व्यर्थ कीर्तन कथा से समय बचने के कारण विशेष समय भी मिल जाता है। तो समझा क्या करना है, क्या नहीं करना है? जैसे आजकल की दुनिया में किसी को कहते हो – भक्ति का फल प्राप्त करो,सहज राजयोगी बनो तो ज्यादा किसमें रुचि रखते हैं? भक्ति के कथा-कीर्तन में ज्यादा रुचि रखते हैं ना! मनोरंजन समझते हैं। ऐसे कई विशेष आत्मायें भी व्यर्थ की रामकथा की मण्डली में वा कीर्तन-मण्डली में बड़ा मनोरंजन समझती हैं। ऐसे समय पर उन आत्माओं को कहो – छोड़ो इस कीर्तन को, शान्ति में रहो तो मानेंगे नहीं क्योंकि संस्कार पड़े हुए हैं ना! अब इस कीर्तन मण्डली को समाप्त

करो। समझा? विशेष आत्माओं की सभा में बैठे हो ना! और ग्रुप भी विशेष है। दोनों ही गद्दी वाले हैं। एक प्रवेशता की गद्दी, दूसरी राजगद्दी। वह राज्य की चाबी मिलने की गद्दी (कलकत्ता) और वह है राज्य करने की गद्दी (दिल्ली) तो दोनों ही गद्दी हो गई ना! तो दोनों की विशेषता हुई ना! चाबी नहीं मिलती तो राज्य भी नहीं करते। इसलिए विशेषता को नहीं भूलना अच्छा!

ऐसे सदा विशेषता को देखने वाले, विशेषता को कार्य में लगाने वाले, विशेष समय सेवा में लगाए सेवा का प्रत्यक्ष फल खाने वाले, सदा सन्तुष्ट आत्मा, सदा सन्तुष्टता की किरणें द्वारा सर्व को सन्तुष्ट करने वाले, ऐसे विशेष आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।''

पार्टियों के साथ

1. आवाज़ से परे जाने की युक्ति जानते हो? अशरीरी बनना अर्थात् आवाज़ से परे हो जाना। शरीर है तो आवाज़ है। शरीर से परे हो जाओ तो साइलेंस। साइलेंस की शक्ति कितनी महान है! इसके अनुभवी हो ना? साइलेंस की शक्ति द्वारा सृष्टि की स्थापना कर रहे हो। साइंस की शक्ति से विनाश, साइलेंस की शक्ति से स्थापना। तो ऐसे समझते हो कि हम अपनी साइलेंस की शक्ति द्वारा स्थापना का कार्य कर रहे हैं। हम ही स्थापना के कार्य के निमित्त हैं तो स्वयं साइलेंस रूप में स्थित रहेंगे तब स्थापना का कार्य कर सकेंगे। अगर स्वयं हलचल में आते तो स्थापना का कार्य सफल नहीं हो सकता। विश्व में सबसे प्यारे से प्यारी चीज़ है – शान्ति अर्थात् साइलेंस। इसके लिए ही बड़ी-बड़ी कानफ्रेंस करते हैं। शान्ति प्राप्त करना ही सबका लक्ष्य है। यही सबसे प्रिय और शक्तिशाली वस्तु है। और आप समझते हो – साइलेंस तो हमारा स्वधर्म है। आवाज़ में आना जितना सहज लगता है उतना सेकेंड में आवाज़ से परे जाना- यह अभ्यास है? साइलेंस की शक्ति के अनुभवी हो? कैसी भी अशान्त आत्मा को शान्त स्वरूप होकर शान्ति की किरणें दो तो अशान्त भी शान्त हो जाए। शान्ति स्वरूप रहना अर्थात् शान्ति की किरणें सबको देना। यही काम है। विशेष शान्ति की शक्ति को बढ़ाओ। स्वयं के लिए भी, औरों के लिए भी शान्ति के दाता बनो। भक्त लोग शान्ति देवा कहकर याद करते हैं ना? देव यानी देने वाले। जैसे बाप की महिमा है शान्ति दाता,वैसे आप भी शान्तिदेवा हो। यही सबसे बड़े ते बड़ा महादान है। जहाँ शान्ति होगी वहाँ सब बातें होंगी। तो सभी शान्ति देवा हो, अशान्त के वातावरण में रहते स्वयं भी शान्त स्वरूप और सबको शान्त बनाने वाले, जो बापदादा का काम है,वही बच्चों का काम है। बापदादा अशान्त आत्माओं को शान्ति देते हैं तो बच्चों को भी फालों फादर करना है। ब्राह्मणों का धन्धा ही यह है। अच्छा!

2-ब्राह्मणों का विशेष कर्त्तव्य है – ज्ञान सूर्य बन सारे विश्व को सर्वशक्तियों की किरणें देना। सभी विश्व-कल्याणकारी बन विश्व को सर्वशक्तियों की किरणें दे रहे हो? मास्टर ज्ञान सूर्य हो ना! तो सूर्य क्या करता है? अपनी किरणों द्वारा विश्व को रोशन करता है। तो आप सभी भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन सर्वशक्तियों की किरणें विश्व में देते रहते हो? सारे दिन में कितना समय इस सेवा में देते हो? ब्राह्मण जीवन का विशेष कर्त्तव्य ही यह है। बाकी निमित्त मात्र। ब्राह्मण जीवन वा जन्म मिला ही है विश्व-कल्याण के लिए। तो सदा इसी कर्त्तव्य में बिजी रहते हो? जो इस कार्य में तत्पर होंगे। वह सदा निर्विघ्न होंगे। विघ्न तब आते हैं जब बुद्धि फ्री होती है। सदा बिजी रहो तो स्वयं भी निर्विघ्न और सर्व के प्रति भी विघ्न-विनाशक। विघ्न-विनाशक के पास विघ्न कभी भी आ नहीं सकता। अच्छा-

3-संगमयुग पर ब्राह्मणों का विशेष स्थान है – बापदादा का दिलतख्त। सभी अपने को बापदादा के दिलतख्त नशीन अनुभव करते हो ? ऐसा श्रेष्ठ स्थान कभी भी नहीं मिलेगा। सतयुग में हीरे सोने का मिलेगा लेकिन दिलतख्त नहीं मिलेगा। तो सबसे श्रेष्ठ आप ब्राह्मण और आपका श्रेष्ठ स्थान दिलतख्त। इसलिए ब्राह्मण चोटी अर्थात् ऊंचे ते ऊंचे हैं। इतना नशा रहता है कि हम तख्तनशीन हैं? ताज भी हैं, तख्त भी है, तिलक भी है। तो सदा ताज, तख्त, तिलकधारी रहते हो? स्मृति भव का अविनाशी तिलक लगा हुआ है ना? सदा इसी नशे में रहो कि सारे कल्प में हमारे जैसा कोई भी नहीं। यही स्मृति सदा नशे में रखेगी और खुशी में झूमते रहेंगे।

4-रूहानी सेवाधारी का कर्त्तव्य है – लाइट हाउस बन सबको लाइट देना। सदा अपने को लाइट हाउस समझते हो? लाइट हाउस अर्थात् ज्योति का घर। इतनी अथाह ज्योति अर्थात् लाइट जो विश्व को लाइट हाउस बन सदा लाइट देते रहें। तो लाइटहाउस में सदा लाइट रहती ही है तब वह लाइट दे सकते हैं। अगर लाइट हाउस खुद लाइट के बिना हो तो औरों को कैसे दें? हाउस में सब साधन इकट्ठे होते हैं। तो यहाँ भी लाइट हाउस अर्थात् सदा लाइट जमा हो, लाइट हाउस बनकर लाइट देना यह ब्राह्मणों का आक्यूपेशन है। सच्चे रूहानी सेवाधारी, महादानी अर्थात् लाइट हाउस होंगे। दाता के बच्चे दाता होंगे। सिर्फ़ लेने वाले नहीं लेकिन देना भी है। जितना देंगे उतना स्वत: बढ़ता जायेगा। बढ़ाने का साधन है – देना।

5-सर्व वरदानों से सम्पन्न बनने का समय है – संगमयुग। इस श्रेष्ठ समय के महत्व को वा समय के वरदान को जानते हो ना? सारे कल्प में वरदानी समय कौन-सा है? (संगम) तो इस वरदानी समय पर स्वयं को वरदानों से सम्पन्न बनाया है? क्योंकि यह भी जानते हो कि विधाता द्वारा वरदानों का भण्डार भरपूर भी है और खुला भण्डार है, जो जितना चाहे उतना अपने को मालामाल बना सकते हैं। तो ऐसे मालामाल बनाया है? थोड़ा सा ख़ज़ाना ले करके, थोड़े में सन्तुष्ट नहीं होंना। लेना है तो पूरा ही लेना है,

थोड़ा नहीं। जो अधिकारी आत्मायें होंगी वह थोड़े में खुश नहीं होगी। बनना है तो नम्बरवन बनना है, लेना है तो सम्पन्न ही लेना है। तो ऐसा ही लक्ष्य और लक्षण दोनों समान हों।

सदा हर बात में बैलेंस रखो। बैलेंस से ही बाप द्वारा और सर्व द्वारा ब्लेसिंग मिलती रहेगी और ब्लिसफुल लाइफ बन जायेगी। बैलेंस रख ब्लेसिंग लेना और ब्लेसिंग देना – यही मुख्य सौगात मधुबन से लेकर जाना। यही है यहाँ की रिफ्रेशमेंट। अच्छा-ओम् शान्ति।

8.11.81

अन्तर सम्पन्न करने का साधन – 'तुरन्त दान महापुण्य'

गुणों के सागर अव्यक्त बापदादा बोले:-

''आज बापदादा सवेरे प्रात:काल की वतन की,बापदादा दोनों के रूह-रूहान की चित्रों सहित कहानी सुनाते हैं। कहानी सुनने में सबको रुचि होती है ना! तो आज की कहानी क्या थी? ब्रह्मा बाप वतन के बगीचे में सैर कर रहे थे। सैर करते हुए सामने कौन थे? बाप के सामने सदा कौन रहते हैं? यह तो सभी अच्छी तरह से जानते हो ना? बाप बच्चों की माला स्मरण करते। कौन-सी माला? गुण माला। तो ब्रह्मा बाप गुण माला स्मरण कर रहे थे। शिव बाप ने ब्रह्मा से पूछा – ''क्या स्मरण कर रहे हो?'' ब्रह्मा बाप बोले – ''जो आपका काम सो मेरा काम'' बच्चों के गुण-मालाओं को देख रहे थे। शिव बाप पूछे – ''क्या-क्या देखा?'' क्या देखा होगा? कोई बच्चों की सिर्फ़ नैकलेस के माफिक माला थी और कोई बच्चों की पाँव तक लम्बी माला थी। कोई बच्चों की कई लड़ियों की माला थी। कोई बच्चे इतनी मालाओं से सजे हुए थे जैसे मालायें उनकी ड्रेस बन गई थी।

ब्रह्मा बाप वैरायटी गुण-मालाओं से सजे हुए बच्चों को देख-देख हर्षित हो रहे थे। आप हरेक अपनी गुण-माला को जानते हो? कितने सजे हुए हो, यह अपना चित्र देखते हो? ब्रह्मा बाप चित्र-रेखा बन चित्र खींच रहे थे। अर्थात् चित्र में तकदीर की रेखायें खींच रहे थे। आप स्वयं भी स्वयं का चित्र अर्थात् तकदीर की तस्वीर खींच सकते हो ना? फोटो खींच सकते हो ना? फोटो निकालने आता है? अपना वा दूसरे का? अपना फोटो खींचने आता है? तो आज सबका फोटो वतन में था। कितना बड़ा कैमरा होगा! सिर्फ़ आप लोगों का नहीं, सभी ब्राह्मणों का फोटो था। मालाओं का श्रृंगार देखते कोई-कोई बच्चों की विशेषता क्या देखी – हर गुण हीरों के रूप में वैरायटी रूप रेखा और रंग वाले थे। विशेष चार प्रकार के रंग थे। जिसमें मुख्य चार सब्जेक्टस के चार रंग थे। सब्जेक्ट तो जानते हो ना? ज्ञान-योग-धारणा और सेवा।

ज्ञान स्वरूप की निशानी कौन-सा रंग होगा? ज्ञान स्वरूप की निशानी – गोल्डन कलर जो हल्का-सा गोल्ड कलर होने के कारण उस एक ही हीरे से सर्व रंग दिखाई देते थे। एक ही हीरे से भिन्न-भिन्न रंगों की किरणों के माफिक चमक दिखाई देती थी। दूर से ऐसे अनुभव करेंगे जैसे चमक रहा है। और यह उससे भी सुन्दर सूर्य। क्योंकि सर्व रंगो की किरणें दूर से ही स्पष्ट दिखाई देती थीं। चित्र सामने आ रहा है ना! कैसे चमक रहा है हीरा?

याद की निशानी – यह तो सहज है ना? याद में यहाँ भी बैठते हो तो क्या करते हो? लाल रंग। लेकिन इस लाल रंग में भी गोल्डन रंग मिक्स था, इसलिए आपकी इस दुनिया में वह रंग नहीं है। कहने में तो लाल रंग आयेगा।

धारणा की निशानी सफेद रंग। लेकिन सफेदी में भी जैसे चन्द्रमा की लाईट के बीच सुनहरी रंग मिक्स करो या चाँदनी के रंग में हल्का-सा पीला रंग एड करो तो दिखाई चांदनी जैसा देगा लेकिन हल्का सा सुनहरी होने के कारण उसकी चमक और ही सुन्दर हो जाती है। यहाँ वह रंग बना नहीं सकेंगे। क्योंकि वे चमकने वाले रंग हैं। कितनी भी ट्रायल करो लेकिन वतन के रंग यहाँ कहाँ से आयेंगे?

सेवा की निशानी हरा रंग। सेवा में चारों ओर हरियाली कर देते हो ना! कांटो के जंगल को फूलों का बगीचा बना देते हो।

तो अभी सुना चार रंग कौन से हैं? इन चार रंगो के हीरों से सजी हुई मालायें सबके गले में थीं। इसमें भिन्न-भिन्न साइज़ और चमक में अन्तर था। कोई की ज्ञान स्वरूप की माला बड़ी थी तो कोई की याद स्वरूप की माला बड़ी थी। और कोई-कोई की चार ही मालायें थोड़े से अन्तर में थी। जिन्हों की चार ही रंगों की अनेक मालायें थीं- वह कितने सुन्दर लगते होंगे? तो बापदादा सबकी रिजल्ट मालाओं के रूप में देख रहे थे। दूर से हीरे ऐसे चमक रहे थे जैसे छोटे-छोटे बल्बों की लाइन-यह था चित्र। अब इस चित्रों द्वारा रिजल्ट देख ब्रह्मा बाप बोले – ''समय की रफ्तार प्रमाण सर्व बच्चों का श्रृंगार सम्पन्न हुआ है?'' क्योंकि रिजल्ट में तो अन्तर था। तो इस अन्तर को सम्पन्न कैसे करें? ब्रह्मा बाप बोले – ''बच्चे मेहनत तो बहुत करते हैं! मेहनत के साथ सबकी इच्छा भी है, संकल्प भी करते हैं''। बाकी क्या रह गया? जानते तो सब हो ना! नालेजफुल तो बन गये हो। तो बताओ क्या अन्तर रह जाता है, जिससे कोई की नैकलेस, कोई की पाँव तक लम्बी मालायें, वह भी अनेक मालायें? सुनते भी एक हो, सुनाते भी एक हो, विधि भी सबकी एक है और विधाता भी एक है, विधान भी एक है, बाकी क्या अन्तर रह जाता है? संकल्प भी एक है, संसार भी

एक है? फिर अन्तर क्यों?

ब्रह्मा बाप को आज बच्चों पर बहुत-बहुत स्नेह आ रहा था। सभी चित्रों को सम्पन्न बनाने के लिए तीव्र उमंग आ रहा था कि अभी का अभी ही सबको मालाओं से सजा दें। बाप तो सजा भी दें लेकिन धारण करने की समर्थी भी चाहिए! सम्भालने की समर्थी भी चाहिए। तो ब्रह्मा ने शिव बाप से पूछा – क्या बात है? बच्चे साथ चलने के लिए सम्पूर्ण सजते क्यों नहीं हैं? साथ में तो सजे सजाये ही जायेंगे। कारण क्या निकला? शिव बाप बोले – अन्तर तो छोटा-सा है। सोचते सब हैं, करते भी सब हैं लेकिन कोई-कोई हैं जो सोचते और करते एक ही समय पर हैं। अर्थात् सोचना और करना साथ-साथ है, वह सम्पन्न बन जाते हैं और कोई-कोई हैं जो सोचते हैं और करते भी हैं लेकिन सोचने और करने के बीच में मार्जिन रह जाती है। सोचते बहुत अच्छा हैं लेकिन करते कुछ समय के बाद हैं। उसी समय नहीं करते हैं। इसलिए संकल्प मे जो उस समय की तीव्रता, उमंग-उल्लास-उत्साह होता है वह समय पड़ने से परसेन्टेज कम हो जाती है। जैसे गर्म वा ताजी चीज़ का अनुभव और ठण्डी वा रखी हुई चीज़ का अनुभव में अन्तर आ जाता है ना! ताज़ी चीज़ की शक्ति और रखी हुई चीज़ की शक्ति में अन्तर पड़ जाता है ना! चीज़ कितनी भी बढ़िया हो लेकिन रखी हुई तो उसकी रिजल्ट वही नहीं निकल सकती। ऐसे संकल्प जो करते हैं वह उसी समय प्रैक्टिकल में करना-उसकी रिजल्ट, और सोचना आज, करना कब, उसकी रिजल्ट में अन्तर पड़ जाता है। बीच में समय की मार्जिन होने के कारण, एक तो सुनाया कि परसेन्टेज सब की कम हो जाती है। जैसे ताज़ी चीज़ के विटामिन्स में फर्क पड़ जाता है। दूसरा – मार्जिन होने के कारण समस्याओं रूपी विघ्न भी आ जाते हैं। इसलिए सोचना और करना साथ-साथ हो। इसको कहा जाता है – ''तुरन्त दान महापुण्य।'' नहीं तो महापुण्य के बजाए पुण्य हो जाता है। तो अन्तर हो गया ना? महापुण्य की प्राप्ति और पुण्य की प्राप्ति में अन्तर हो जाता है। समझा कारण क्या है? छोटा सा कारण है। करते भी हो सिर्फ़ 'अब' के बजाए 'कब' करते हो इसलिए मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है। तो ब्रह्मा बाप बच्चों से बोले – ''अब इस कारण का निवारण करो।'' सुना आज की कहानी! दोनों बाप के बीच की कहानी। अब क्या करेंगे? निवारण करो। निवारण करना ही निर्माण करना हो जायेगा। तो स्व में भी नव-निर्माण और विश्व में भी नव-निर्वाण। अच्छा! ऐसे सदा सजे-सजाये, सोचना और करना समान बनाने वाले, सदा बाप समान तुरन्त दानी महापुण्य-आत्मायें, दोनों बाप के शुभ इच्छा को पूर्ण करने वाले, ऐसे सम्पन्न आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

टीचर्स के साथ– सेवाधारी अमृतवेले से लेकर रात तक सेवा की स्टेज पर हो? अगर आराम भी करते हो तो भी स्टेज पर हो, स्टेज पर भी सोने का पार्ट बजाते हैं ना! सबकी नज़र होती है कि कैसे सोये हुए हैं। इस रीति सेवाधारी अर्थात् 24 घण्टे स्टेज पर पार्ट बजाने वाले। तो हर कदम, हर सेकण्ड सारी विश्व के आगे हैं। सेवाधारी सदा हीरो पार्टधारी समझ करके चलें, सेंटर पर नहीं बैठे हो लेकिन स्टेज पर बैठे हो, विश्व की स्टेज पर। तो इतना अटेन्शन रहने से हर संकल्प और कर्म स्वत: ही श्रेष्ठ होंगे ना! नैचुरल अटेन्शन होगा। अटेन्शन देना नहीं पड़ेगा लेकिन रहेगा ही क्योंकि स्टेज पर हो ना! और सदा अपने को पूज्य आत्मा समझो तो पूज्य आत्मा अर्थात् पावन आत्मा। कल्प-कल्प पूज्य हैं। पूज्य समझने से संकल्प और स्वप्न भी सदा पावन होंगे। तो ऐसा नशा रहता है? वैसे भी सेवाधारी मैजारटी कुमारियाँ हैं। कुमारियाँ डबल कुमारियाँ हो गई, ब्रह्माकुमारी भी और कुमारी भी। तो कितनी महान हो गई। कुमारी की, अब 84 वें अन्तिम जन्म में भी, चरणों की पूजा होती है। तो इतनी पावन बनी हो तब इतनी पूजा हो रही है। कुमारियों को कभी भी झुकने नहीं देंगे। कुमारियों के चरणों में सब झुकते हैं। चरण धोकर पीते हैं। तो वह कौन सी कुमारियाँ हैं? ब्रह्माकुमारियाँ हैं ना! तो सेवाधारी ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें हो। किसकी पूजा हो रही है? आप लोगों की। गीत भी है ना – पूजा होती है घर-घर में...। इसलिए बोलो – हमारी पूजा होती है। बापदादा भी देखो नमस्ते करते हैं ना! तो इतनी पूज्य हो तब तो बाप भी नमस्ते करते हैं। इसी स्मृति स्वरूप में रहने से सदा वृद्धि होती रहेगी। अपनी भी और सेवा की भी। सब विघ्न खत्म हो जायेंगे। इसी स्मृति में सब विशेषतायें भरी हैं। अच्छा-

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात:-

1.जीवन की अनेक समस्याओं का हल-तीर्थ स्थान की स्मृति– भाग्य विधाता की भूमि पर पहुँचना यह भी बहुत बड़ा भाग्य है। यह कोई खाली स्थान नहीं है, महान तीर्थस्थान है। वैसे भी भक्ति मार्ग में मानते हैं कि तीर्थ स्थान पर जाने से पाप खत्म हो जाते हैं, लेकिन कब होते हैं, कैसे होते हैं, यह जानते नहीं हैं। इस समय तुम बच्चे अनुभव करते हो कि इस महान तीर्थस्थान पर आने से पुण्य आत्मा बन जाते हैं। यह तीर्थस्थान की स्मृति जीवन की अनेक समस्याओं से पार ले जायेगी। यह स्मृति भी एक तावीज का काम करेगी। जब भी याद करेंगा तो यहाँ के वातावरण की शान्ति और सुख आपके जीवन में इमर्ज हो जायेगा। तो पुण्य आत्मा हो गये ना! इस धरनी पर आना भी भाग्य की निशानी है। इसलिए बहुत-बहुत भाग्यशाली हो। अब भाग्यशाली तो बन गये लेकिन सौभाग्यशाली बनना वा पद्मापद्म भाग्यशाली बनना यह आपके हाथ में है। बाप ने भाग्यशाली बना दिया, यही भाग्य समय प्रति समय सहयोग देता रहेगा। कोई भी बात हो तो मधुवन में बुद्धि से पहुँच जाना। फिर सुख और शान्ति के झूले में झूलने का अनुभव करेंगे। अच्छा!

2.स्वदर्शन चक्रधारी की निशानी है – सफलता स्वरूप। सभी अपने को स्वदर्शन चक्रधारी समझते हो, बाप की जितनी महिमा है, उसी महिमा स्वरूप बने हो? जैसे बाप के हर कर्म चरित्र के रूप में अभी भी गाये जाते हैं ऐसे आपके भी हर कर्म चरित्र समान हो रहे हैं? ऐसे चरित्रवान बने हो, कभी साधारण कर्म तो नहीं होते हैं? जो बाप के समान स्वदर्शन चक्रधारी बने हैं उनसे कभी भी साधारण कर्म हो नहीं सकते। जो भी कार्य करेंगे उसमें सफलता समाई हुई होगी। सफलता होगी या नहीं होगी, यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। निश्चय होगा कि सफलता हुई पड़ी है। स्वदर्शन चक्रधारी मायाजीत होंगे। मायाजीत होने के कारण सफलतामूर्त्त होंगे। और जो सफलतामूर्त्त होंगे वह सदा हर कदम में पद्मापद्मपति होंगे। ऐसे पद्मापद्मपति अनुभव करते हो? इतनी कमाई जमा कर ली है जो 21 जन्मों तक चलती रहे। सूर्यवंशी अर्थात् 21 जन्मों के लिए जमा करने वाले। तो सदा हर सेकेण्ड में जमा करते रहो। अच्छा।

3.चैतन्य छीपमाला के दीपकों का कर्त्तव्य है-अंधकार में रोशनी करना। अपने को सदा जगे हुए दीपक समझते हो? आप विश्व के दीपक अविनाशी दीपक हो जिसका यादगार अभी भी दीपमाला मनाई जाती है। तो यह निश्चय और नशा रहता है कि हम दीपमाला के दीपक हैं? अभी तक आपकी माला कितनी सिमरण करते रहते हैं? क्यों सिमरण करते हैं? क्योंकि अंधकार को रोशन करने वाले बने हो। स्वयं को ऐसे सदा जगे हुए दीपक अनुभव करो। टिमटिमाने वाले नहीं। कितने भी तूफान आयें लेकिन सदा एकरस, अखण्ड ज्योति के समान जगे हुए दीपक। ऐसे दीपकों को विश्व भी नमन करती है और बाप भी ऐसे दीपकों के साथ रहते हैं। टिम-टिमाते दीपकों के साथ नहीं रहते। बाप जैसे सदा जागती ज्योति है, अखण्ड ज्योति है, अमर ज्योति है, ऐसे बच्चे भी सदा 'अमर ज्योति'! अमर ज्योति के रूप में भी आपका यादगार है। चैतन्य में बैठे अपने सभी जड़ यादगारों को देख रहे हो। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें हो। अच्छा!

11-11-81

बिन्दु का महत्व

ज्योति-बिन्दु शिव बाबा निराकार, ज्योति-बिन्दु आत्माओं प्रति बोले:-

आज स्नेह के सागर बाप अपने स्नेही आत्माओं से मिलने आये हैं। बाप के स्नेह में दूर-दूर से भागते हुए मिलन स्थान पर पहुँच गये। बापदादा ऐसी स्नेही आत्माओं को स्नेह का रिटर्न स्नेह ओर सहयोग सदा देते हैं, अब भी दे रहे हैं और देते रहेंगे।

सर्व स्थानों की स्नेही आत्मायें अब भी सूक्ष्म फ़रिश्तों के रूप में इस मिलन सभा में सम्मुख हैं। बापदादा डबल सभा देख रहे हैं। एक साकारी शरीरधारी इस धरनी पर बैठे हुए हैं दूसरे आकारी रूपधारी जिन्हों को इस धरनी के स्थान की आवश्यकता नहीं, धरनी से ऊपर लाइट रूप में लाइट के आसनधारी, जो थोड़े स्थान पर बहुत दिखाई दे रहे हैं। तो दोनों सभाओं को बापदादा देख हर्षित हो रहे हैं।

बापदादा बच्चों के स्नेह की शक्ति देख रहे हैं कि स्नेह की शक्ति के आधार पर सेकेण्ड में कितनी भी दूर से समीप पहुँच जाते हैं। जितनी स्नेह की शक्ति महान है, उतनी सम्मुख पहुँचने की स्पीड महान है। कितने अमूल्य रतन सामने आ रहे हें। एक-एक रत्न की महिमा महान है। किस-किस महारथी का वर्णन करें। शमा के ऊपर परवाने आ रहे हैं। सभी बच्चों को बापदादा सदा सहजयोगी भव का वरदान दे रहे हैं। सिर्फ़ एक बिन्दी को याद करो। सबसे सरल मात्रा बिन्दी है। तो बापदादा सिर्फ़ बिन्दी का ही हिसाब बताते हैं। स्वयं भी बिन्दु रूप बनो, याद भी बिन्दु को करो और ड्रामा के हर दृश्य को जाने,करने के बाद बिन्दु की मात्रा लगा दो। एक बिन्दु की मात्रा में आप, बाप और रचना, सब आ जाता है। तो जानना ही क्या है – ''बिन्दु''। करना भी क्या है –''बिन्दु को याद''। इसी बिन्दु की मात्रा के महत्व को जान सदा सहजयोगी बन सकते हो। कितना भी बड़ा विस्तार है लेकिन समाया हुआ बिन्दु में है। बीज बिन्दु, उसी में सारा वृक्ष समाया हुआ है। आत्मा बिन्दु उसी में 84 जन्मों के संस्कार समाये हुए हैं। 5 हजार वर्ष के ड्रामा को अब संगम के अन्त में समाप्त कर रहे हो, अब ड्रामा का चक्र पूरा हुआ। अर्थात् जो चक्र बीत चुका उसको फुल स्टाप अर्थात् बिन्दी लगाये, बिन्दी बन,अब घर जाना है। बिन्दु के साथ बिन्दु बनकर जाना है। घर भी सर्व बिन्दुओं का घर है। संकल्प, कर्म, संस्कार सब मर्ज अर्थात् बिन्दी लगी हुई है। समाप्ति की मात्रा है ही बिन्दु। सर्वगुण,सर्वज्ञान के ख़ज़ानों के सागर...लेकिन सागर भी है – बिन्दु। सम्बन्ध और सम्पर्क मे भी आओ तो सर्व के मस्तक में क्या चमक रहा है – बिन्दु। सर्व कार्यकर्ता कौन हैं? बिन्दु ही हैं ना! चाहे धरनी से चन्द्रमा तक पहुँचे तो भी बिन्दु पहुँचा। चाहे आप साइलेन्स की शक्ति से 3 लोकों तक पहुँचते तो भी कौन पहुँचता – बिन्दु। साइंस की शक्ति या साइलेन्स की शक्ति, निर्माण करने की शक्ति वा निर्वाण में जाने की शक्ति है तो बिन्दु ना! बीज से इतना सारा वृक्ष विस्तार को पाता लेकिन विस्तार के बाद समाता किसमे है? बीज अर्थात् बिन्दु में। तो अनादि अवि-नाशी है ही बिन्दु। आप भी तीन कालों की नालेज, तीन लोकों की नालेज प्राप्त करते हो लेकिन प्राप्त करने वाला कौन? ''बिन्दु''। आदि से अन्त तक वैरायटी पार्ट बजाया लेकिन पार्टधारी कौन? किसने पार्ट बजाया? बिन्दु ने। तो महत्व सारा बिन्दु

का है। और बिन्दु को जाना तो सब कुछ जाना। सब कुछ पाया। बिन्दु रूप में स्थित हो जो संकल्प करो, जो भावना रखो, जो बोल बोलो, जो कर्म करो, जैसे बिन्दु महान है वैसे सर्व बातें महान हो जाती हैं अर्थात् स्वत: श्रेष्ठ हो जाती हैं।

आत्मिक एनर्जी भी बिन्दु है, जो स्थापना की एनर्जी है और विनाशकारी भी एटामिक एनर्जी बिन्दु है। विनाश भी बिन्दु से होता,स्थापना भी बिन्दु से होती। सृष्टि चक्र के आदि में भी बिन्दु बन उतरते हो और अन्त में भी बिन्दु बन जाते हो। तो आदि अन्त का स्वरूप भी बिन्दु हुआ। कितना सहज हो गया। एक बिन्दु को याद करना मुश्किल है क्या? स्कूल में भी छोटे बच्चे बिन्दु की मात्रा सहज लगा सकते हैं। कहाँ भी पैन्सिल को रख दें तो बिन्दु हो जायेगी। तो इतनी सहज मात्रा याद नहीं रहती? इससे सहज और क्या बता सकते हैं। इससे सहज कुछ है? भक्ति में तो लम्बा चौड़ा आकार याद करते। बुद्धि में भावना द्वारा चित्र बनाते, तब भक्ति सिद्ध होती। यहाँ तो नालेज द्वारा सिर्फ़ क्या सामने रखते? बिन्दु। इसी बिन्दु की स्मृति द्वारा स्वयं ही सिद्धि स्वरूप बन जाते। तो क्या सहज हुआ? बुद्धि में बिन्दु लगाना या आकार इमर्ज करना? इसीलिए सहजयोगी बनो। बिन्दु को जानो तो सदा सहज है। तो स्नेह का रिटर्न सहज साधन द्वारा सहजयोगी भव। तो सभी सहजयोगी बन गये ना! विस्तार में जाते हो तो मुश्किल में चले जाते हो। क्योंकि विस्तार में जाने से क्वेश्चनमार्क बहुत लग जाते हैं। इसलिए जैसे क्वेश्चनमार्क की मात्रा स्वयं ही टेढी हैं, तो क्या-क्या के क्वेश्चनमार्क के टेढ़े मार्ग पर चले जाते हो। बिन्दु बन विस्तार में जाओ तो सार मिलेगा। बिन्दु को भूल विस्तार मे जाते हो तो जंगल में चले जाते हो। जहाँ कोई सार नहीं। बिन्दु रूप में स्थित रहने वाले सारयुक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वरूप का अनुभव करेंगे। उन्हों की स्मृति, बोल और कर्म सदा समर्थ होंगे। बिना बिन्दु बनने के विस्तार में जाने वाले सदा क्यों, क्या के व्यर्थ बोल और कर्म में समय और शक्तियाँ भी व्यर्थ गंवायेंगे क्योंकि जंगल से निकलना पड़ता है। तो सदा क्या याद रखेंगे? एक ही बात – बिन्दु। सहज है ना? इसमें भाषा जानो, न जानो लेकिन बिन्दु तो सब भाषा में है। और कुछ भी न जान सको लेकिन बिन्दु शब्द को तो जान जायेंगे। समझा-क्या करना है? बिन्दु शब्द ही कमाल का शब्द है। जादू का शब्द है। बिन्दु बनो और आर्डर करो तो सब तैयार है। संकल्प की ताली बजाओ और सब तैयार हो जायेगा। लेकिन बिन्दु की ताली प्रकृति भी सुनेगी, सर्व कर्मइन्द्रियाँ भी सुनेंगी और सर्व साथी भी सुनेंगे। बिन्दु बन करके ताली बजाने आती है? अच्छा!

सदा अनादि अविनाशी स्वरूप रूप में स्थित रहने वाले, बिन्दु के महत्व को जान सदा महान रहने वाले,बिन्दु स्वरूप हो सर्व ख़ज़ानों के सार को पाने वाले, सारयुक्त, योगयुक्त, जीवनमुक्त आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।''

टीचर्स के साथ– सभी रूहानी सेवाधारी हो- रूहानी सेवाधारी का अर्थ ही है रूहानी खज़ानों से सम्पन्न। तब ही रूहानी सेवाधारी बन सकते हो। सेवाधारी अर्थात् देने वाला। सेवा द्वारा सुख देने वाला, इसको कहते हैं सेवाधारी। तो देने वाला ज़रूर स्वयं सम्पन्न होगा तब तो औरों को दे सकेगा! तो सेवाधारी अर्थात् मास्टर सुख दाता, मास्टर शान्ति दाता, मास्टर ज्ञान दाता। दाता सदा सम्पन्न मूर्त होते हैं। जैसे स्वयं होंगे वैसे औरों को बनायेंगे। अगर स्वयं में किसी भी शक्ति की कमी है तो औरों को भी सर्व शक्तिवान नहीं बना सकते हैं। रूहानी सेवाधारी अर्थात् सर्वशक्तिवान। रूहानी सेवाधारी अर्थात् एवररेडी और आलराउन्ड। आलराउन्ड सेवाधारी ही सच्चे सेवाधारी हैं। तो सच्चे सेवाधारी के सर्व लक्षण अपने में अनुभव करते हो? जो सम्पन्न होंगे वह सदा सन्तुष्ट होंगे और सर्व को सन्तुष्ट करेंगे। किसी भी प्रकार की अप्राप्ति, असन्तुष्टता पैदा करती है। सर्व प्राप्ति हैं तो सदा सन्तुष्ट। सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, उसकी विधि है – सम्पन्न और दाता। दोनों बातें चाहिए। कोई सम्पन्न हो लेकिन दाता न हो तो भी सन्तुष्ट नहीं कर सकते। तो दाता भी और सम्पन्न भी।

यह खुशी तो सभी को है ना कि हम विशेष आत्मायें हैं? सारे विश्व में से कितनी थोड़ी सी आत्मायें सदा बाप की सेवा में तत्पर रहने वाली निमित्त बनती हैं। तो जो कोटो में कोई, कोई में कोई आत्मायें निमित्त बनती हैं उसमें हमारा ही पार्ट है, हमारा नाम है, यह कितनी बड़ी खुशी है! कोटों में कोई...यह हमारा गायन है, यह रूहानी नशा रहता है? रूहानी नशा सदा जितना ऊंचा उतना नम्र बनायेगा। देहभान का नशा होगा थोड़ा लेकिन घमण्ड से, अभिमान से ऊंचा समझेंगे। सच्चे नशे में रहने वाले सदा नम्रचित होंगे। नम्रता से ही सबको अपने आगे झुकायेंगे। सुखदाता, नम्रचित आत्मा बन सकती है। अभिमान नम्रचित बनने नहीं देता। नम्रचित नहीं तो सेवा हो नहीं सकती। तो सेवाधारी की विशेषता – सदा नम्रचित, स्वयं झुका हुआ होगा तब औरों को झुका सकेगा। तो रूहानी सेवाधारी! 'रूहानी' शब्द सदा याद रखो। चलते-फिरते, बोलते... कर्म में रूहानियत दिखाई दे। साधारणता नहीं, रूहानियत।

सन्तुष्ट आत्मा को ही सेवाधारी का टाइटल मिल सकता है। सन्तुष्ट नहीं तो सेवा लेंगे। तो सेवा लेने वाले हो या सेवा करने वाले हो? रूहानी सेवाधारी लेने वाले नहीं, आज यह हुआ, कल यह हुआ... ऐसी बातों के पीछे समय गंवाकर सेवा तो नहीं लेते हो! यह सब बचपन ही बातें हैं। अब बचपन समाप्त हुआ। अभी जो लिया उसका रिटर्न करना है। अभी कोई भी कचहरी न होनी चाहिए। बड़ों का एक्स्ट्रा समय नहीं लेना है। किस्से-कहानियाँ समाप्त। अगर अभी तक भी सेवा लेने वाले हो तो आज से समाप्त कर देना। बिन्दी लगा देना। बीती सो बीती, बिन्दी लग गई ना! तो समाप्ति की बिन्दी लगाकर जाना। बिन्दी लगाकर सदा सन्तुष्ट रहना और सबको सन्तुष्ट करना, यही पाठ सदा याद रखना। अच्छा!

निर्मलशान्ता दादी से :– महान आत्मा अर्थात् सफलता मूर्त्त। तो सदा सफलतामूर्त्त हो ना? जो जितने हल्के रहते हैं, उतना सहज और स्वत: कार्य हो जाता है। जो ज्यादा कार्य का बोझ उठाते हैं तो बोझ के कारण निर्णय शक्ति काम नहीं कर सकती है इसलिए सफलता में फर्क पड़ जाता है। कार्य करने के पहले सदा स्वयं डबल लाइट,वायुमण्डल भी लाइट,स्वयं भी लाइट, साथी भी सब लाइट-तो लाइट हाउस का कार्य हो ही जाता है।

लेकिन कोई भी कार्य जब शुरू करते हैं तो लक्ष्य ठीक रखते हैं, फिर बीच में वह लक्ष्य मर्ज हो जाता है। आदि शक्तिशाली होता,मध्य में परसेन्टेज कम हो जाती है। जैसे आदि में प्लैन के समय अटेन्शन रखते,ऐसे जब प्रैक्टिकल कार्य में बिजी हो जाते हो तब भी अटेन्शन रहे। आदि-मध्य-अन्त एक समान रहे तो सफलता सहज हो जायेगी। अच्छा-

इस बारी मेले में शान्ति कुण्ड बनाना। जिससे सब समझें कि यहाँ आवाज़ होते भी शान्ति है। वृत्ति और अनुभूति ही बदल जाए। (बापदादा कलकत्ते में आवें) ज़रूर, हाँ वह समय दिखायेगा, क्योंकि बच्चे बुलावें बाप न आवें – यह हो नहीं सकता। लेकिन किस रीति से आयेंगे यह देखना। कुछ नया होना चाहिए ना! अच्छा- जो बनायेंगे उसमें सफल हो जायेंगे, क्योंकि सच्ची दिल पर साहब राज़ी। यह मेला भी बाप के दर्शन करने का स्थान है। भक्त दर्शन करेंगे और बच्चे मिलन मनायेंगे। अच्छा है, यह भी एक साधन है स्व के लिए और अन्य आत्माओं के लिए। ब्राह्मण भी उमंग-उत्साह में आ जाते हैं और अन्य की भी सेवा हो जाती है। स्व की भी सेवा और औरों की भी सेवा। अच्छा!

विदाई के समय :– सभी ने सुना तो बहुत है, बाकी कुछ सुनना रह गया है क्या? सिर्फ़ एक ही बात रह गई है-वह कौन सी? पाना था वो पा लिया काम क्या बाकी रहा? सब समाप्त हो गया है, क्या रहा है? अभी सिर्फ़ एक बात बापदादा देखना चाहते हैं। सभी 16 श्रृंगारधारी सजी-सजाई सजनियाँ अर्थात् 16 कला सम्पन्न। 16 श्रृंगार ही 16 कला हैं। तो सभी 16 कला सम्पन्न अर्थात् 16 श्रृंगारधारी बनें। अभी तक कोई 8 कला, कोई 10 कला, कोई 11कला... लेकिन सभी 16 कला बन जाएं। अपने-अपने नम्बर अनुसार सभी 16 कला तो होंगे ना! जैसे और धर्मों की भी अपने हिसाब से गोल्डन स्टेज होती है। तो यहाँ भी सभी की अपने हिसाब से 16 कला होंगी ना! कहना,करना और सोचना सब समान हो तो सम्पन्न बन जायेंगे। बापदादा अब इसी स्वरूप में सबको देखना चाहते हैं। वह कब होगा? इसके लिए सब तैयारी भी करते हैं, संकल्प भी करते हैं, इच्छा भी यही एक है। बाकी क्या रह जाता है? स्टेज पर जब बैठते हो तो क्या सुनाते हो कि बस, अब सम्पन्न बनना है! तो इच्छा भी सबको है, लेकिन बाकी क्या रह जाता है? अगर और सब इच्छाओं से इच्छा मात्रम अविद्या हो जाओ तो यह इच्छा पुरी हो जाये। छोटी-छोटी और इच्छायें इस एक इच्छा को पूर्ण करने नहीं देती हैं। अच्छा।

पार्टियों से

प्रश्न– कौन-सी पहचान बुद्धि मे स्पष्ट है तो समर्थ आत्मा बन जायेंगे?

उत्तर– समय की और स्वयं की पहचान अगर बुद्धि में स्पष्ट है तो समर्थ आत्मा बन जायेंगे, क्योंकि यह संगम का समय ही है श्रेष्ठ तकदीर बनाने का। सारे कल्प के श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ तकदीर अभी ही बना सकते हो। संगम पर ही बाप द्वारा सर्व अधिकार प्राप्त होते हैं। तो अधिकारी आत्मा हो, श्रेष्ठ आत्मा हो, श्रेष्ठ प्रालब्ध पाने वाले हो। सदा यह स्मृति में रखो तो समर्थ हो जायेंगे। समर्थ होने से मायाजीत बन जायेंगे। समर्थ आत्मा विघ्न-विनाशक होती है। संकल्प में भी विघ्न आ नहीं सकता। मास्टर सर्वशक्तिवान सदा विघ्न-विनाशक होंगे। अच्छा!

13-11-81

परखने और निर्णय शक्ति का आधार– साइलेंस की शक्ति

शान्ति के सागर शिव बाबा अपने शान्ति मूर्त्त बच्चों प्रति बोले:-

आज निर्वाण अर्थात् वाणी से परे शान्त स्वरूप स्थिति का अनुभव करा रहे हैं। आप आत्माओं का स्वधर्म और सुकर्म, स्व-स्वरूप, स्वदेश है ही – शान्त। संगमयुग की विशेष शक्ति भी साइलेंस की शक्ति है। आप सभी संगमयुगी आत्माओं का लक्ष्य भी यही है कि अब स्वीट साइलेन्स होम में जाना है। इसी अनादि लक्षण—शान्त स्वरूप रहना और सर्व को शान्ति देना– इसी शक्ति की विश्व में आवश्यकता है। सर्व समस्याओं का हल इसी साइलेन्स की शक्ति से होता है। क्यों? साइलेन्स अर्थात् शान्त स्वरूप आत्मा एकान्तवासी होने के कारण सदा एकाग्र रहती है और एकाग्रता के कारण विशेष दो शक्तियाँ सदा प्राप्त होती हैं। एक– परखने की शक्ति। दूसरी– निर्णय करने की शक्ति। यही विशेष दो शक्तियाँ व्यवहार वा परमार्थ दोनों की सर्व समस्याओं का सहज साधन है।

परमार्थ मार्ग में विघ्न- विनाशक बनने का साधन है– माया को परखना। और परखने के बाद निर्णय करना। न परखने के कारण ही भिन्न-भिन्न माया के रूपों को दूर से भगा नहीं सकते हैं। परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रायल ईश्वरीय रूप रच करके आती है।

जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए। और एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है।
वर्तमान समय ब्राह्मण आत्माओं में तीव्रगति का परिवर्तन कम है। क्योंकि माया के रायल ईश्वरीय रोल्ड गोल्ड को रीयल गोल्ड समझ लेते हैं। जिस कारण वर्तमान न परखने के कारण बोल क्या बोलते हैं– मैंने जो किया वा कहा, वह ठीक बोला। मैं किसमें रांग हूँ! ऐसे ही तो चलना पड़ेगा! रांग होते भी अपने को रांग नहीं समझेंगें। कारण? परखने की शक्ति की कमी। माया के रायल रूप को रीयल समझ लेते। परखने की शक्ति न होने के कारण यथार्थ निर्णय भी नहीं कर सकते। स्व-परिवर्तन करना है वा पर-परिवर्तन होना है, यह निर्णय नहीं कर सकते। इसलिए परिवर्तन की गति तीव्र चाहिए। समय तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है। लेकिन समय प्रमाण परिवर्तन होना और स्व के श्रेष्ठ संकल्प से परिवर्तन होना– इसमें प्राप्ति की अनुभूति में रात-दिन का अन्तर है। जैसे आजकल की सवारी कार चलाते हो ना! एक है सेल्फ स्टार्ट होना और दूसरा है धक्के से स्टार्ट होना। तो दोनों में अन्तर है ना! तो समय के धक्के से परिवर्तन होना यह है पुरुषार्थ की गाड़ी धक्के से चलाना। सवारी में चलना नहीं हुआ, सवारी को चलाना हुआ। समय के आधार पर परिवर्तन होना अर्थात् सिर्फ़ थोड़ा-सा हिस्सा प्राप्ति का प्राप्त करना। जैसे एक होते हैं मालिक, दूसरे होते हैं थोड़े से शेयर्स लेने वाले। कहाँ मालिकपन, अधिकारी और कहाँ अंचली लेने वाले। इसका कारण क्या हुआ? साइलेन्स के शक्ति की अनुभूति नहीं है जिसके द्वारा परखने और निर्णय करने की शक्ति प्राप्त होने के कारण परिवर्तन तीव्रगति से होता है। समझा– साइलेन्स की शक्ति कितनी महान है! साइलेन्स की शक्ति क्रोध-अग्नि को शीतल कर देती है। साइलेन्स की शक्ति व्यर्थ संकल्पों की हलचल को समाप्त कर सकती है। साइलेन्स की शक्ति ही कैसे भी पुराने संस्कार हों, ऐसे पुराने संस्कार समाप्त कर देती है। साइलेन्स की शक्ति अनेक प्रकार के मानसिक रोग सहज समाप्त कर सकती है। साइलेंन्स की शक्ति, शान्ति के सागर बाप से अनेक आत्माओं का मिलन करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति अनेक जन्मों से भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति करा सकती है। महान आत्मा, धर्मात्मा सब बना देती है। साइलेन्स की शक्ति सेकण्ड में तीनों लोकों की सैर करा सकती है। समझा कितनी महान है? साइलेन्स की शक्ति- कम मेहनत, कम खर्चा बालानशीन करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति- समय के खज़ाने में भी एकानामी करा देती है अर्थात् कम समय में ज्यादा सफलता पा सकते हो। साइलेन्स की शक्ति हाहाकार से जयजय-कार करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति सदा आपके गले में सफलता की मालायें पहनायेंगी। जयजयकार भी हो गई, मालायें भी पड़ गई, बाकी क्या रहा? सब कुछ हो गया ना! तो सुना आप कितने महान हो? महान शक्ति को कार्य में कम लगाते हो।
वाणी से तीर चलाना आ गया है, अब ''शान्ति'' का तीर चलाओ। जिससे रेत में भी हरियाली कर सकते हो। कितना भी कड़ा सा पहाड़ हो लेकिन पानी निकाल सकते हो। वर्तमान समय ''शान्ति की शक्ति'' प्रैक्टिकल में लाओ। मधुबन की धरनी भी क्यों आकर्षण करती है? शान्ति की अनुभूति होती हैं ना! ऐसे ही चारों और के सेवाकेन्द्र और प्रवृत्ति के स्थान– ''शान्ति कुण्ड'' बनाओ। तो चारों ओर शान्ति की किरणें विश्व की आत्माओं को शान्ति की अनुभूति की तरफ आकर्षित करेंगी। चुम्बक बन जायेंगे। ऐसा समय आयेगा जो आपके सर्व स्थान शान्ति प्राप्ति के चुम्बक बन जायेंगे, आपको नहीं जाना पड़ेगा वह स्वयं आयेंगे। लेकिन तब, जब सर्व में शान्ति की महान शक्ति निरन्तर संकल्प बोल और कर्म में हो जायेगी। तब ही मास्टर शान्तिदेवा बन जायेंगे। तो अभी समझा क्या करना है? अच्छा!
(आज सुबह मधुबन में कर्नाटक ज़ोन के एक भाई ने अचानक हार्ट फेल होने से शरीर छोड़ दिया जिसका अन्तिम संस्कार आबू में ही किया गया)
आज क्या पाठ पढ़ा? कर्नाटक के ग्रुप ने क्या पाठ पक्का कराया? सदा एवररेडी रहने का पाठ पक्का किया? सदा देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थ, संस्कार सब का पेटी बिस्तरा सदा ही बन्द हो। चित्रों में भी समेटने की शक्ति को क्या दिखाते हो? पेटी बिस्तर पैक, यही दिखाते हो ना! संकल्प भी न आये यह करना था, यह बनना था, अभी कुछ रह गया है? सेकण्ड में तैयार? समय का बुलावा हुआ और एवररेडी। तो यह पाठ पक्का किया ना? यह भी आत्मा के भाग्य की लकीर खींच गई। वैसे तो संस्कार के समय एक पण्डित को या ब्राह्मण को बुलाते हैं और वह भी नामधारी और यहाँ कितने ब्राह्मणों का हाथ लगा? महान तीर्थस्थान और सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण। ''स्मृति भव'' का सहयोग, कितना श्रेष्ठ भाग्य हो गया! तो सदा एवररेडी रहने का विशेष पाठ सभी ने पढ़ लिया। (उसकी युगल को देखते हुए बाबा बोले) क्या पाठ पढ़ा? अपना सफलता स्वरूप दिखाया। बहादुर हो। शक्ति रूप का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाया। अच्छा-
सदा अपने स्व-स्वरूप, स्वधर्म, श्रेष्ठ कर्म, स्वदेश की स्मृति स्वरूप, शान्त मूर्ति, सदा शान्ति की शक्ति द्वारा सर्व को शान्त स्वरूप बनाने वाले, शान्ति के सागर की, शान्ति की लहरों में सदा लहराते हुए अनेंकों प्रति धर्मात्मा, महान आत्मा, बनने वाले, ऐसे शान्ति के शक्ति स्वरूप श्रेष्ठ पुण्य आत्मा बनने वाले, आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''
पार्टियों से:-
1. महावीर बच्चों का वाहन है श्रेष्ठ स्थिति और अलंकार हैं सर्वशक्तियाँ:– सभी अपने को महावीर समझते हो ना? महावीर

अर्थात् सदा शस्त्रधारी। शक्तियों को वा पाण्डवों को सदा वाहन में दिखाते हैं और शस्त्र भी दिखाते हैं। शस्त्र अर्थात् अलंकार। तो वाहनधारी भी और अलंकारधारी भी। वाहन है श्रेष्ठ स्थिति और अलंकार हैं सर्वशक्तियाँ। ऐसे वाहनधारी और अलंकारधारी ही साक्षात्कारमूर्त्त बन सकते हैं। तो साक्षात बन सब को बाप का साक्षात्कार कराना यह है महावीर बच्चों का कर्त्तव्य।

महावीर अर्थात् सदा उड़ने वाले। तो सभी उड़ने वाले अर्थात् उड़ती कला वाले हो ना! अब चढ़ती कला भी समाप्त हो गई, जम्प भी समाप्त हो गया, अब तो उड़ना है। उड़ा और पहुँचा। उड़ती कला में जाने से और सब बातें नीचे रह जायेंगी। नीचे की चीज़ों को, परिस्थितियों को, व्यक्तियों को पार करने की ज़रूरत ही नहीं, उड़ते जाओं तो नदी नाले, पहाड़, वृक्ष सब पार करते जायेंगे। बड़ा पहाड़ भी एक गेंद हो जायेगा। उड़ती कला वाले के लिए परिस्थितियाँ भी एक खिलौना हैं। ऊपर जाओ तो इतने बड़े-बड़े देश गाँव सब क्या लगते हैं? खिलौने लगते हैं ना, माडल लगते हैं। तो यहाँ भी उड़ती कला वाले के लिए कोई भी परिस्थिति वा विघ्न खेल वा खिलौना है, चींटी समान है। चीटीं भी मरी हुई, जिन्दा नहीं, जिन्दा चींटी भी कभी-कभी महावीर को गिरा देती है। तो चींटी भी मरी हुई। पहाड़ भी राई नहीं, रुई समान। महावीर हो ना! अच्छा-

मुरल का सार

परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने का साधन है– माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना। परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से प्राप्त होती है। साइलेन्स की शक्ति द्वारा परखने और निर्णय की शक्ति प्राप्त होने के कारण परिवर्तन तीव्र गति से होता है। साइलेन्स की शक्ति महान है। साइलेन्स की शक्ति क्रोधाग्नि को शीतल कर देती है, व्यर्थ संकल्पों की हलचल को समाप्त कर देती है, पुराने संस्कार समाप्त कर देती है, तड़पती हुई आत्माओं को जीय-दान दे सकती है, शान्ति के सागर बाप से मिलन कराती है, भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने का अनुभव करा सकती है.... साइ-लेन्स की शक्ति महान पुण्य-आत्मा बनाती है, अत: इस शक्ति को कार्य में लगाते रहो।

16-11-81

विजयमाला में नम्बर का आधार

अव्यक्त बापदादा अपने विजयी रत्नों, बच्चों के प्रति बोले:-

''आज बापदादा अपने सिकीलधे श्रेष्ठ आत्माओं से फिर से मिलने आये हैं। याद आता है कि – इसी समय, इसी रूप में कितने बार मिले हो? अनेक बार मिलन की स्मृति स्पष्ट रूप में अनुभव में आती है? नालेज के आधार पर, चक्र के हिसाब से समझते हो वा अनुभव करते हो? जितना स्पष्ट अनुभव होगा उतना ही श्रेष्ठ वा समीप की आत्मा होंगे। वर्तमान सर्व प्राप्ति और भविष्य श्रेष्ठ प्रालब्ध की अधिकारी आत्मा होंगे। अपने आपको इसी अनुभव के आधार पर जान सकते हो कि मुझ आत्मा का विजय माला में कौन सा नम्बर है! वर्तमान समय बापदादा भी बच्चों के पुरुषार्थ और प्राप्ति के आधार पर नम्बरवार याद करते अर्थात् माला और यादगार रूप की विजय माला, जिसको वैजयन्ती माला कहते हैं। तो दोनों मालाओं में मेरा नम्बर कौन-सा है, यह जानते हो? अपने नम्बर को स्वयं ही जानते हो वा यह कहेंगे कि बापदादा सुनावें? बापदादा तो जानते ही हैं, लेकिन अपने आप को जानते ज़रूर हो। बाहर से वर्णन करो, न करो लेकिन अन्दर तो जानते हो ना? हाँ कहेंगे, वा न कहेंगे? अभी अगर बापदादा माला निकलवायें तो क्या अपना नम्बर नहीं दे सकते? संकोच वश न सुनाओ वह दूसरी बात है। अगर नहीं जानते तो क्या कहेंगे? औरों को चैलेन्ज करते हो, निश्चय और फखुर से कहते हो कि हम अपने 84 जन्मों की जीवन कहानी जानते हैं, यह कहते हो ना सभी? तो 84 जन्म में यह वर्तमान का जन्म तो सबसे श्रेष्ठ है ना! इसको नहीं जान सकते हो? मैं कौन? इस पहेली को अच्छी तरह से जाना है ना? तो यह भी क्या हुआ? मैं कौन की पहेली। जानने का हिसाब बहुत सहज है। एक है– याद की माला, तो जितना स्नेह और जितना समय आप बाप को याद करते उतना और उसी स्नेह से बाप भी याद करते हैं। तो अपना नम्बर निकाल सकते हो। अगर आधा समय याद रहता और स्नेह भी 50 का है, वा 75 का है तो उसी आधार से सोचो 50 स्नेह और आधा समय याद तो माला में भी आधी माला समाप्त होने के बाद आयेंगे। अगर याद निरन्तर और सम्पूर्ण स्नेह, सिवाए बाप के और कोई नज़र ही नहीं आता, सदा बाप और आप भी कम्बाइन्ड हैं तो माला में भी कम्बाइन्ड दाने के साथ-साथ आप भी कम्बाइन्ड होंगे। अर्थात् साथ-साथ मिले हुए होंगे। सदा सब बातों में नम्बर वन होंगे। तो माला में भी नम्बरवन होंगे। जैसे लौकिक पढ़ाई में फर्स्ट डिवीजन, सेकेण्ड, थर्ड होती हैं, वैसे यहाँ भी महारथी, घोड़े सवार और पैदल तीन डिवीजन हैं।

फर्स्ट डिवीजन– सदा फास्ट अर्थात् उड़ती कला वाले होंगे। हर सेकेण्ड, हर संकल्प में बाप के साथ का, सहयोग का, स्नेह का अनुभव करेंगे। सदा बाप के साथ और हाथ में हाथ की अनुभूति करेंगे। 'सहयोग दो,'यह नहीं कहेंगे। सदा स्वयं को सम्पन्न अनुभव करेंगे।

सेकेण्ड डिवीजन– चढ़ती कला का अनुभव करेंगे लेकिन उड़ती कला का नहीं। चढ़ती कला में आये हुए विघ्नों को पार करने में

कभी ज्यादा, कभी कम समय लगायेंगे। उड़ती कला वाले ऊपर से क्रास करने के कारण ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई विघ्न आया ही नहीं। विघ्न को विघ्न नहीं लेकिन साइडसीन समझेंगे, रास्ते के नज़ारे हैं। और चढ़ती कला वाले- रुकेंगे, विघ्न है यह महसूस करेंगे। इसलिए ज़रा-सा लेसमात्र कभी-कभी पार करने की थकावट वा दिलशिकस्त होने का अनुभव करेंगे।

तीसरी डिवीजन– उसको तो जान गये होंगे। रुकना और चलना और चिल्लाना। कभी चलेंगे, कब चिल्लायेंगे। याद की मेहनत में रहेंगे। क्योंकि सदा कम्बाइन्ड नहीं रहते। सर्व सम्बन्ध निभाने के प्रयत्न में रहते हैं। पुरुषार्थ में ही सदा लगे रहते हैं। वह प्रयत्न में रहते और वह प्राप्ति में रहते।

तो इससे अभी समझो– ''मेरा नम्बर कौन-सा?'' माला के आदि में है अर्थात् फर्स्ट डिवीजन में है वा माला के मध्य में अर्थात् सेकेण्ड डिवीजन में वा माला के अन्त में अर्थात् थर्ड डिवीजन में है? तो याद और विजय दोनों के आधार से अपने आपको जान सकते हो। तो जानना सहज है वा मुश्किल है? तो हरेक का नम्बर निकलवायें? निकाल सकेंगे ना?

बापदादा सदा अमृतवेले से बच्चों की माला सिमरण करने शुरू करते हैं। हरेक रत्न की वा मणके की विशेषता देखते हैं। तो अमृतवेले सहज ही अपने आपको भी चेक कर सकते हो। याद की शक्ति से, सम्बन्ध की शक्ति से, स्पष्ट रूहानी टी.वी. में देख सकते हो कि बापदादा किस नम्बर में मुझे सिमरण कर रहे हैं। उसके लिए विशेष बात– बुद्धि की लाइन बहुत क्लीयर चाहिए। नहीं तो स्पष्ट नहीं देख सकेंगे। अच्छा, समझा मैं कौन हूँ!

अब तो समय की समीपता कारण स्वयं को बाप के समान अर्थात् समानता द्वारा समीपता में लाओ। संकल्प, बोल, कर्म, संस्कार और सेवा सब में बाप जैसे समान बनना अर्थात् समीप आना। चाहे पीछे आने वाले हों चाहे पहले। लेकिन समानता से समीप आ सकते हो। अभी सभी को चांस है। अभी सीट फिक्स की सीटी नहीं बजी है। इसलिए जो चाहो वह बन सकते हो। अभी 'टू लेट' का बोर्ड नहीं लगा है। इसलिए क्या करेंगे? महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश दोनों हैं ना! महाराष्ट्र का तो नाम ही ''महा'' है। तो महान ही हो गया ना! मध्यप्रदेश की क्या विशेषता है? जानते हो? बापदादा की सेवा के आदि में पहली नज़र मध्यप्रदेश की तरफ गई। बच्चों को भी भेजा था। तो सेवा के क्षेत्र में पहली नज़र जब मध्य प्रदेश पर गई तो मध्य प्रदेश की सेवा में और सेवा का प्रत्यक्षफल खाने में पहला नम्बर होगा ना? क्योंकि बापदादा की विशेष नज़र पड़ी। जहाँ नज़र पड़ी वा नम्बरवन नज़र से निहाल हो गये ना! इसलिए दोनों ही महान हो।

महाराष्ट्र में बापदादा के साकार में चरण पड़े। चरित्र भूमि भी महाराष्ट्र को बनाया। तो महाराष्ट्र क्या करेगा? महाराष्ट्र को तो डबल फल देना पड़ेगा। क्या डबल फल देंगे? देखें, पहले टच होता है कि क्या फल देना है? अगर टच नहीं होता तो महाराष्ट्र से मध्य प्रदेश वन नम्बर हो जायेगा।

एक है वारिस और दूसरे हैं वी. आई. पीज.। तो वारिस भी निकालने हैं और वी. आई. पीज. भी निकालने हैं, यह है डबल फल। कहाँ वी. आई. पीज. निकालते, कहाँ वारिस निकालते लेकिन दोनों निकालने हैं। वारिस भी नामीग्रामी हों और वी. आई. पीज. भी नामीग्रामी हों। तो इसमें कौन नम्बरवन लेगा? फारेन लेगा, महाराष्ट्र लेगा वा मध्यप्रदेश लेगा? कौन लेगा? और भी ले सकते हैं लेकिन आज तो यह सामने बैठे हैं? अच्छा तो क्या सुना? जो ओटे सो अर्जुन गाया हुआ है ना? इसमें जो भी आगे जाये जा सकता है। अभी नम्बर आउट नहीं हुई हैं इसलिए जो भी निमित्त बन नम्बरवन आने चाहे वह आ सकते है। समझा क्या करना है? उसका साधन भी सुनाया–''उड़ती कला''। चढ़ती कला नहीं उड़ती कला। उसके लिए सदा डबल लाइट रहो। यह तो जानते हो ना! जानते सब हो अभी स्वरूप और अनुभव में लाओ। अच्छा!

ऐसे सदा बाप के साथी, हर संकल्प, बोल और कर्म में बाप समान अर्थात् बाप के समीप रत्न, सदा स्वरूप और सफलता स्वरूप, विजय माला के समीप रत्नों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

18-11-81

सम्पूर्णता के समीपता की निशानी

सदा दिलखुश, खुशनसीब बच्चों प्रति बापदादा बोले:–

''आज दिलाराम बाप अपने दिलतख्तनशीन बच्चों से दिल की बातें करने आये हैं। सभी बच्चे जानते हैं कि दिलाराम के दिल में कौन सी एक बात रहती है? दिलाराम बाप की दिल में सदा सर्व को आराम देने वाले, ऐसे दिल वाले बच्चे दिल में रहते हैं। बाप की दिल में सर्व बच्चों के प्रति एक ही बात यही है कि हर एक बच्चा विशेष आत्मा विश्व का मालिक बने। विश्व के राज्य भाग अधिकारी बनें। हरेक बच्चा एक दो से श्रेष्ठ सजा-सजाया, गुण सम्पन्न, शक्ति सम्पन्न नम्बर वन बने। हर एक की विशेषता एक दो से ज्यादा आर्कषणमय हो जो विश्व देखकर हरेक के गुण गाये। हरेक विश्व की आत्माओं के लिए लाइट हाउस हो, माइट हाउस

हो, धरती के चमकते हुए सितारे हो। हरेक सितारे की श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संकल्प द्वारा जमा की हुई विशेषताएं वा ख़ज़ाने इतने अखुट हों जो हरेक सितारे की अपनी विशेष दुनिया दिखाई दे। हरेक देख-देख अपने दु:ख भूलकर सुख की अनुभूति कर हर्षित हो जायें। सर्व प्राप्तियों की हरेक की अलौकिक दुनिया देख वाह-वाह के गीत गाएं। यह है दिलाराम बापदादा के दिल की बात।

अब बच्चों के दिल में क्या है हरेक अपनी अपनी दिल को अच्छी तरह से जानते हो? दूसरों की दिल को भी जानते हो? वा सिर्फ़ अपने को जानते हो? जब आपस में रूह-रुहान करते हो तो अपने दिल के उमंग उत्साह सुनाते हो ना! उसमें मुख्य क्या वर्णन करते हो? सबका विशेष यही संकल्प रहता ही है कि जो बाप कहते हैं वह करके दिखायेंगे। वा बाप समान बन ही जाएंगे। तो बाप की दिल और बच्चों के दिल की बात तो एक ही है। फिर भी नम्बरवार पुरुषार्थी क्यों? सभी नम्बरवन क्यों नहीं? क्या सभी नम्बर वन हो सकते हैं? सब विश्व के राजे बन सकते हैं कि वह भी नहीं बन सकते हैं? सिर्फ़ एक विश्व का राजा बनेगा या और भी बनेंगे अपने अपने समय पर विश्व के राजे बनेंगे? फिर सभी क्यों कहते हो कि हम विश्व का राज्य ले रहे हैं वा विश्व के राज्य-अधिकारी बन रहे हैं? राज्य में आयेंगे या राज्य करेंगे कोई करने वाले और कोई राज्य में आने वाले बनेंगे वा सब करने वाले बनेंगे, क्या होगा? प्रजा तो और बहुत मिल जायेगी, उसकी चिंता नहीं करो। बस सिर्फ़ राज्य में आने के लिए ही इतनी मेहनत कर रहे हो? राज्य पाने के लिए नहीं, राज्य में आने के लिए? तो राज्य सब करेंगे ना? हरेक समझता है मैं तो करूँगा बाकी कोई आवे, करें वह वो जाने। राजयोग सीख रहे हो ना? राजा बनने का योग सीख रहे हो या राज्य में आने का योग सीख रहे हो? राजयोगी हो ना? राज्य में आने वाले योगी तो नहीं हो ना? ऐसे ही सब नम्बरवन बनेंगे या नम्बरवार ही अन्त तक रहेंगे?

पहले भी सुनाया था कि हरेक अपनी स्टेज के अनुसार, अपने हिसाब से नम्बर वन तो बनेंगे ना! उनके लिए तो वही नम्बर वन गोल्डन स्टेज होगी ना! सबसे श्रेष्ठ नम्बर वन स्टेज, उसके हिसाब से तो अन्त में बन ही जायेंगे ना! अपने हिसाब से सम्पन्न और सम्पूर्ण तो बनेंगे ही ना! सारे कल्प के अन्दर उस आत्मा की नम्बरवन श्रेष्ठ स्टेज तो वही होगी ना! उस हिसाब में नम्बरवार होते भी नम्बरवन बन जायेंगे। हरेक आत्मा की अपनी सम्पूर्ण स्टेज है। जैसे ब्रह्मा की पुरुषार्थी और सम्पूर्ण स्टेज दोनों देखी और अनुभव भी कर रहे हो कि सम्पूर्ण स्टेज पर पहुँचने से क्या-क्या विशेषताएं अव्यक्त रूप में भी पार्ट में ला रहे हैं। जैसे ब्रह्मा बाप की सम्पूर्ण स्टेज और पुरुषार्थी स्टेज, दोनों का अन्तर अनुभव कर रहे रहो वैसे हर एक ब्राह्मण आत्मा का भी सम्पूर्ण स्टेज का स्वरूप है। जो अव्यक्त वतन में बापदादा इमर्ज कर देखते रहते हैं और दिखा भी सकते हैं। उसी सम्पूर्ण स्वरूप को देखते हुए बापदादा देख रहे हैं कि हरेक के सम्पूर्ण स्वरूप कितने रूहानी और झलक और फलक वाले हैं। अभी सम्पूर्णता को पा रहे हो और पाना भी ज़रूर है। लेकिन कोई बच्चों की सम्पूर्ण स्टेज समीप है। जिसकी निशानी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा-सदा अपने सम्पूर्ण स्टेज और भविष्य प्रालब्ध अर्थात् फ़रिश्ता स्वरूप और देवपद स्वरूप दोनों ही सदा ऐसे स्पष्ट स्मृति में रहते थे जो सामने जाने वाले भी पुरुषार्थी स्वरूप होते हुए भी फ़रिश्ता रूप और भविष्य श्रीकृष्ण का रूप देखते और वर्णन करते थे। ऐसे बच्चों में भी सम्पूर्णता के समीप आने की निशानी स्वयं भी समीपता का अनुभव करेंगे और औरों को भी अनुभव होगा। व्यक्त में होते अव्यक्त रूप की अनुभूति करेंगे। जिससे सामने आने वाली आत्मायें व्यक्त भाव को भूल अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगी। यह है समीपता की निशानी। और कई बच्चों को अभी सम्पूर्णता स्पष्ट और समीप नहीं अनुभव होती, उनकी निशानी क्या होगी? जो स्पष्ट चीज़ होती है और समीप चीज़ होती है उसको अनुभव करना सहज होता है। और दूर की चीज़ को अनुभव करना, उसमें विशेष बुद्धि लगानी पड़ती है। ऐसे ही ऐसी आत्माएं भी नालेज के आधार से बुद्धियोग द्वारा सम्पूर्ण स्टेज को खींचकर मेहनत से उसमें स्थित रह सकती हैं।

दूसरी बात– ऐसी आत्माओं को स्पष्ट और समीप न होने के कारण कभी कभी यह भी संकल्प उत्पन्न होता है कि बनना तो चाहिए लेकिन बन सकूंगी? स्वयं के प्रति ज़रा-सा व्यर्थ संकल्प के रूप में शक पैदा होगा-जिसको कहा जाता है – ''संशय का रायल रूप''। शक ज़रा-सा लहर के माफिक भी आया तो गया। लेकिन निश्चय बुद्धि विजयन्ति। उसमें यह स्वप्न मात्र संकल्प, लहर मात्र संकल्प भी फाइनल नम्बर में उसे दूर कर देता है। उसका विशेष संस्कार वा स्वभाव अभी अभी बहुत उमंग-उत्साह में उड़ने वाले और अभी अभी स्वयं से दिलशिकस्त। बार-बार जीवन में यह सीढ़ी उतरते और चढ़ते रहेंगे। दिलखुश और दिलशिकस्त की सीढ़ी, कारण? अपनी सम्पूर्ण स्टेज स्पष्ट और समीप नहीं। तो अभी क्या करना है? अभी सम्पूर्ण स्टेज को समीप लाओ। कैसे लायेंगे? उसकी विधी को जानते भी हो। क्या जानते हो? है तो हंसी की बात। बापदादा क्या देखते हैं। कई बच्चे, सब नहीं लेकिन मैजारिटी, क्या करते हैं? ऊंचे ते ऊंचे बाप के लाडले होने के कारण ज्यादा लाडले हो जाते हैं। तो ज्यादा लाडले होने के कारण नाजुक बन जाते हैं। नाजुक तो नाज़-नखरे ही करेंगे। नाज़ नखरे भी कौन से करते हैं? बाप की बातें बाप को ही सुनाने लगते हैं। आप नाजुक बनते और बाप को कहते हैं हमारे तरफ से आप करो। सहनशक्ति की मजबूती कम है, सहनशक्ति है सर्व विघ्नों से बचने का कवच। कवच न पहनने के कारण नाजुक बन जाते हैं। मुझे करना है,यह पाठ बहुत कच्चा रहता है। लेकिन दूसरा करे या बाप करे, यह पाठ नाजुक बना देता है। इसी कारण अलबेलेपन का पर्दा आ जाता है और सम्पूर्ण स्टेज समीप और स्पष्ट नहीं दिखाई देती है। इसलिए तीन लोकों में चक्कर लगाने के बजाऐ इसी दिलखुश और दिलशिकस्त की बातों में, इसी दुनिया में या

इसी सीढ़ी पर उतरते चढ़ते हैं। तो इसीलिए क्या करना पड़े? लाड़ले भले बनो लेकिन अलबेलेपन के लाडले नहीं बनो। तो क्या हो जायेगा? अपनी सम्पूर्णता को सहज पा सकेंगे। पहले तो अपने सम्पूर्ण स्टेज को, स्वयं को वरना है अर्थात् सदा उमंगउत्साह की वरमाला पहननी है तब फिर लक्ष्मी को वरेंगे। वा नारायण को वरेंगे। समझा क्या करना है? आप सबकी सम्पूर्ण स्टेज आप पुरुषार्थी का आह्वान कर रही है। जब आप सब सम्पूर्ण स्टेज को पाओ तब ही सम्पूर्ण ब्रह्मा और ब्राह्मण साथ-साथ ब्रह्मघर में जा सकें और फिर राज्य अधिकारी बन सकें। अच्छा!

ऐसे सम्पूर्ण स्टेज के समीप आत्मायें, ब्रह्मा बाप के साथ-साथ सम्पूर्ण स्टेज को वरने वाले, सदा अपने सम्पूर्ण स्टेज के अनुभूति द्वारा औरों को भी सम्पूर्ण बनने की प्रेरणा देने वाले, हरेक को अपने स्पष्टता द्वारा दर्पण बन, सम्पूर्ण स्टेज का स्पष्ट साक्षात्कार कराने वाले, सदा दिलखुश, ऐसे खुशनसीब बच्चों को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।''''

टीचर्स के साथ–''बाप समान रूहानी सेवाधारी। तो सेवाधारियों को कौन सी सौगात चाहिए? जब एक दो में समान मिलते हैं ते एक दो को सौगात देते हैं ना! तो सेवाधारी हैं ही बाप समान। तो बाप क्या सौगात देगा? वा आप देंगे? ज्ञान तो बहुत सुना है। मुरली भी सुनी। अभी बाकी क्या रह गया? सेवाधारी बापदादा के अति समीप आत्मायें हो, समीप आत्माओं को बापदादा कौन-सी सौगात देंगे? सेवाधारियों को आज बापदादा विशेष एक गोल्डन वर्शन्स की सौगात देते हैं। वह क्या है? ''सदा हर दिन स्व-उत्साह और सर्व को भी उत्साह दिलाने का उत्सव मनाओ।'' यह है सेवाधारियों के लिए स्नेह की सौगात। इसी सौगात को फिर मुरली में स्पष्ट करेंगे लेकिन सौगात तो छोटी अच्छी होती है। तो आज मुरली नहीं चलायेंगे लेकिन सार रूप में सुना रहे हैं कि उत्साह में रहने और उत्साह दिलाने का उत्सव मनाओ। इससे क्या होगा? जो मेहनत करनी पड़ती है वह खत्म हो जायेगी। संस्कार मिलाने की, संस्कार मिटाने की मेहनत से छूट जायेंगे। जैसे जब कोई विशेष उत्सव मनाते हो तो उसमें तन का रोग, धन की कमी, सम्बन्ध सम्पर्क की खिटपिट सब भूल जाता है। ऐसे अगर यह उत्सव सदा मनाओ तो सारी समस्यायें खत्म हो जायेंगी। फिर समय भी नहीं देना पड़ेगा, शक्तियाँ भी नहीं लगानी पड़ेंगी। सदा ऐसे अनुभव करेंगे जैसे सभी फ़रिश्ते बनकर चल रहे हैं। वैसे भी कहावत है – फ़रिश्तों के पैर धरनी पर नहीं होते। खुशी में जो नाचता रहता है उसके लिए भी कहते हो कि यह तो उड़ता रहता है, इसके पाँव धरनी पर नहीं हैं। तो सब उड़ने वाले फ़रिश्ते बन जायेंगे। इसलिए रूहानी सेवाधारी अब यह सेवा करो। कोर्स देना, दिलाना, प्रदर्शनी करना-कराना, मेले करना-कराना, यह बहुत मेहनत की। अभी इस मेहनत को सहज करने का साधन यह है (जो ऊपर सुनाया) इससे घर बैठे अनुभव करेंगे जैसे शमा के ऊपर परवाने स्वत: ही भागते हुए आ रहे हैं। आखिर भी यह मेहनत कब तक करेंगे, यह साधन भी तो परिवर्तन होंगे ना! तो कम खर्च वाला मशीन, वा कम मेहनत सफलता ज्यादा उसका साधन है– यह सौगात। फिर आपको मेला नहीं करना पड़ेगा लेकिन मेला करने वाले और अनेक निमित्त बन जायेंगे। आपको निमन्त्रण देकर बुलायेंगे। जैसे अभी भी भाषण के लिए बनी बनाई स्टेज पर बुलाते हैं ना! वैसे मेले आदि की फिर इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। अभी आप सब दीदी-दादियों को उद्घाटन के लिए बुलाते हो फिर आप भी दीदी-दादीयाँ हो जायेंगी, उद्घाटन करने वाली दर्शनीय मूर्त्त हो जायेंगी। तो यह अच्छा है ना! अभी तक भी लगाओ टेन्ट, गाइड बुलाओ, लगाने वालों को बुलाओ... यही मेहनत करनी है! अच्छा-अभी तो सौगात मिल गई ना? अभी देंगी क्या? यही संकल्प करो कि ''न कभी उत्साह कम करेंगे और न दूसरों का उत्साह कम होने देंगे।'' यही देना है। कुछ भी हो जाय, जैसे स्थूल व्रत रखते हैं, तो उसमें भी भूख और प्यास लगती है लेकिन लगते हुए भी व्रत नहीं छोड़ते, चाहे बेहोश भी क्यों न हो जायें। तो आप भी व्रत लो– कोई भी समस्या आ जाए, कोई उत्साह को मिटाने वाला आ जाए लेकिन न उत्साह छोड़ेंगे, न औरों में कम करायेंगे। बढ़ेंगे और बढ़ायेंगे। तो सदा ही उत्सव होंगे, सदा मेले होगे, सदा सेमीनार होंगे, सदा इन्टरनेशनल कानफ्रेंस होगी अच्छा-मिली भी सौगात, ले भी ली और क्या चाहिए।''

विदेशी बच्चों की सेवा की मुबारक देते हुए-सेवा के प्रति और भी इशारा-

''बापदादा सेवा के लिए कभी भी मना नहीं करते हैं, खूब धूमधाम से सेवा करो। जिन्हों को भी निमन्त्रण देना हो दे सकते हो। फारेन वालों को सेवा की मुबारक हो। सभी सेवा की उमंग-उत्साह में अच्छे आगे बढ़ रहे हैं। और ऐसे बड़ते हुए विशेष आत्माओं की सेवार्थ निमित्त बन जायेंगे। जिनको विशेष वी.आई.पी. कहते हो, अभी वी.आई.पीज. के निकलने का समय पहुँच गया है। इसलिए सेवा से स्वत: निकलते रहेंगे।

सभी को विशेष रूहानियत का अनुभव कराओ। शान्ति, शक्ति का अनुभव कराओ। नालेज तो बहुत है लेकिन एक सेकेण्ड की अनुभूति ही उन्हों के लिए नवीनता है। सारी विदेश की मैजारिटी आर्टीफिशल शान्ति है, तो रीयल शान्ति, रीयल सुख रीयल स्वरूप की अनुभूति है ही नहीं। अगर वह एक सेकेण्ड की भी हो जायेगी तो नवीनता का अनुभव करेंगे। वैसे भी विदेश में सदा नई चीज़ पसन्द करते हैं। इसलिए यह नवीनता करो। कोई भी नामधारी महात्मा यह अनुभूति नहीं करा सकते। आत्मा परमात्मा का शब्द तो सुनते रहते हैं लेकिन कनेक्शन जुड़वाकर अनुभव करना यह नवीनता है। जिसको कहा जाता है– रीयल्टी का अनुभव करना। यही साधन है। सभी सर्विसएबुल समीप रत्नों को नाम सहित याद। अच्छा!''

कुमारों के साथ-अव्यक्त बापदादा की मुलाकात–''कुमारों को सदा यह स्मृति रहे कि हम कुमार नहीं लेकिन ब्रह्माकुमार हैं, रूहानी सेवाधारी हैं। सेवाधारी अर्थात् स्वयं सम्पन्न स्वरूप होकर औरों को देने वाले। तो सदा अपने को सर्व ख़ज़ानों से सम्पन्न अनुभव करते हो? सेवाधारी समझ कर सेवा करेंगे तो सफलतामूर्त होंगे। सेवा की विशेषता ही है सदा नम्रचित। निमित्त और नम्रचित यह दोनों विशेषताएं सेवा में सफलता स्वरूप बनाती हैं। कुमार सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाले होते हैं। लेकिन बागे बढ़ते हुए निमित्त और नम्रचित की विशेषता नहीं होगी तो सेवा करेंगे, मेहनत करेंगे सफलता कम दिखाई देगी। तो कुमार सेवा में तो होशियार हो ना? सभी प्लैनिंग बुद्धि हो। जैसे सेवा की भाग दौड़ में होशियार हो वैसे इन दो विशेषताओं में भी होशियार बनो। विशेषताओं सहित विशेष सेवाधारी बनो। नहीं तो टैम्प्रेरी टाइम की सफलता तो होगी लेकिन चलते-चलते थोड़े टाइम के बाद कनफ्युजड हो जायेंगे। यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह दीवार आ जायेगी।

तो सदा यह दो बातें स्मृति में रखना। इससे सर्विस में फास्ट और फर्स्ट हो जायेंगे। कुमारों को सेवा तो करनी है लेकिन मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहकर करनी है फिर देखो सफलता हुई पड़ी है।

कुमारों को सब प्रकार के चांस हैं, सेवा करने में भी चांस, पुरुषार्थ में आगे जाने का भी चांस और साथ-साथ अपने परिवार को आगे बढ़ाने का चांस है। कुमार जीवन लकी जीवन है। कुमार अर्थात् सदा स्वतन्त्र। किसी भी प्रकार के बंधन के वश नहीं। ऐसे स्वतन्त्र अनुभव करते हो ना? स्वयं के व्यर्थ संकल्प भी एक बंधन है,यह बंधन भी उड़ती कला से नीचे ले आते हैं। तो निर्बन्धन कुमार। व्यर्थ संकल्प भी समाप्त। निर्बन्धन आत्मा ही तीव्रगति में जा सकती है। बापदादा को कुमारों के ऊपर नाज़ है कि कुमार अपने जीवन को कितना श्रेष्ठ बना रहे हैं। सदा इसी स्मृति में रहो कि हमारे जैसा भाग्यवान कोई नहीं, कुमारों का अपना भाग्य, कुमारियों का अपना। कुमारियाँ स्वतन्त्र होकर सेवा नहीं कर सकती। कुमार तो कहाँ भी अकेले जाकर सेवा कर सकते हैं। कुमारों को क्या बंधन है। कुमारियाँ तो फिर भी आजकल की दुनिया के हिसाब से बंधन में हैं, कुमार तो आलराउन्ड सेवा कर सकते हैं।

कुमार हैं डबल लाइट। किसी भी प्रकार का बोझ नहीं। न संकल्पों का बोझ, न संबंध सम्पर्क का बोझ। कुमार हैं ही निर्बन्धन, क्योंकि नालेजफुल हो गये। नालेजफुल व्यर्थ की तरफ कभी भी जा नहीं सकते। व्यर्थ संकल्प भी नालेजफुल के आगे आ नहीं सकता। संकल्प में भी शक्तिवान, कर्म में भी शक्तिवान। मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तो सदा ऐसे अनुभव करते हो कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं? क्योंकि कुमारों के पीछे माया चक्र बहुत लगाती है। माया को भी कुमार-कुमारियाँ अच्छे लगते हैं। जैसे बाप को बहुत प्रिय हो, ऐसे माया को भी प्रिय हो। इसलिए माया से सावधान रहना। सदा अपने को कम्बाइन्ड समझना, अकेला नहीं, युगल साथ है। सदा कम्बाइन्ड समझेंगे तो माया आ नहीं सकती। अच्छा!''

पार्टियों के साथ-व्यक्तिगत मुलाकात

1. वर्तमान समय का विशेष अटेन्शन– व्यर्थ संकल्पों की समाप्ति : ''सभी अपने को समर्थ आत्मायें समझते हो? समर्थ आत्मायें अर्थात् जिनका व्यर्थ का खाता समाप्त हो। नहीं तो ब्राह्मण जीवन में व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म बहुत समय व्यर्थ गंवा देते हैं। जितनी कमाई जमा करने चाहो उतनी नहीं कर सकते हो। व्यर्थ का खाता समर्थ बनने नहीं देता। अब व्यर्थ का खाता समाप्त करो। जब नया चौपड़ा रखते हो तो पुराने को खत्म कर देते हो ना! तो वर्तमान समय यही विशेष अटेन्शन रखो कि व्यर्थ का समाप्त कर सदा समर्थ रहें। मास्टर सर्वशक्तिवान जो चाहो वह कर सकते हो। जैसे किसको तन की वा धन की शक्ति है तो जो चाहो वह कर सकता है, अगर शक्ति नहीं तो चाहते भी मजबूर हो जाता। ऐसे आप मा. सर्वशक्तिवान क्या नहीं कर सकते! सिर्फ़ अटेन्शन। बार-बार अटेन्शन चाहिए। अमृतवेले अटेन्शन दिया, रात को दिया, बाकी मध्य में अलबेलापन हो गया तो रिजल्ट क्या होगी? व्यर्थ का खाता समाप्त नहीं होगा। कुछ न कुछ पुराना खाता रह जायेगा। इसलिए बार-बार यही अटेन्शन दो कि हम मा. सर्वशक्तिवान हैं। चैकिंग चाहिए अच्छी तरह से। क्योंकि माया अभी भी अपनी बारी लेने के लिए होशियार बैठी है। वह अन्त में सबसे ज्यादा होशियार हो जाती है क्योंकि सदा के लिए विदाई लेनी है ना! तो अपनी होशियारी तो दिखायेगी ना! इसलिए सदा अटेन्शन रखो। क्लास में गये, याद में बैठे उस समय तो अटेन्शन रहता है लेकिन बार-बार अटेन्शन। और जिसका बार-बार अटेन्शन है उसकी निशानी है– सब टेन्शन से परे। लाडले तो हो ही, बाप के बने, श्रेष्ठ भाग्य का सितारा चमका और क्या चाहिए। सिर्फ़ यही छोटा-सा काम दिया है-कि बार-बार बुद्धि द्वारा अटैन्शन रखो। अच्छा!''

पार्टियों से:–

1.मायाजीत बनने के साथ-साथ प्रकृतिजीत भी बनो:– सदा मायाजीत और प्रकृतिजीत हो? मायाजीत तो बन ही रहे हो लेकिन प्रकृतिजीत भी बनो क्योंकि अभी प्रकृति की हलचल तो बहुत होनी हैं ना! हलचल में अचल रहो, ऐसे अचल बने हो? कभी समुद्र का जल अपना प्रभाव दिखायेगा तो कभी धरनी अपना प्रभाव दिखायेगी। अगर प्रकृतिजीत होंगे तो प्रकृति की कोई भी हलचल अपने को हिला नहीं सकेगी। सदा साक्षी होकर सब खेल देखते रहेंगे। जैसे फ़रिश्तों को सदा ऊंची पहाड़ी पर दिखाते हैं, तो आप

फ़रिश्ते सदा ऊंची स्टेज अर्थात् ऊंची पहाड़ी पर रहने वाले। ऐसी ऊंची स्टेज पर रहते हो? जितना ऊंचे होंगे उतना हलचल से स्वत: परे रहेंगे। अभी देखो यहाँ पहाड़ी पर आते हो तो नीचे की हलचल से स्वत: ही परे हो ना! शहरों में कितनी हलचल और यहाँ कितनी शान्ति और साधारण स्थिति में भी कितना रात-दिन का अन्तर होगा।

21-11-81

छोड़ो तो छूटो

सदा कर्मबन्धन-मुक्त, बीजरूप, वृक्षपति शिव बाबा बोले-

''सदा सहयोगी,सदा बच्चों के साथी बापदादा अपने सहयोगी बच्चों को, सदा के साथी बच्चों को आज वतन की,बापदादा की रमणीक बात सुनाते हैं। आप सभी भी रूहानी रमणीक मूर्त हो ना! तो ऐसे बच्चों को बाप भी रमणीक बात सुनाते हैं। आज वतन में बापदादा के सामने, एक बड़ा सुन्दर अलौकिक अर्थ सहित वृक्ष इमर्ज हुआ। वृक्ष बड़ा सुन्दर था और वृक्ष की डालियाँ अनेक थीं, कोई छोटी कोई बड़ी, कोई मोटी कोई पतली थीं। लेकिन उस अलौकिक वृक्ष के ऊपर भिन्न-भिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे बहुत सुन्दर पंछी थे। जो हरेक अपनी-अपनी डाली पर बैठे थे। पंछियों के कारण वृक्ष बड़ा सुन्दर लग रहा था। कई पंछी उड़ते हुए बापदादा की अंगुली पर भी आकर बैठते। कई कंधे पर भी आकर बैठते और कोई आगे पीछे चक्कर लगाते रहते। कोई डाली पर बैठे-बैठे दूर से नयन मुलाकात भी करते, खुश भी बहुत थे। लेकिन दूसरे पंछियों के मिलन का खेल देखते हुए खुश थे। स्वयं समीप नहीं आये। ऐसा दृश्य देख ब्रह्मा बाप मुस्कराते हुए ताली बजाए उन पंछियों को बुलाने लगे– ''आओ बच्चे, आओ बच्चे,'' कहकर बहुत मीठा बुलावा कर रहे थे। फिर भी पंछी नहीं आये। पंख भी थे। पंख हिला भी रहे थे लेकिन अपने ही पाँव से डाली को ऐसा मजबूत पकड़े हुए थे जो उड़कर समीप नहीं आ सकते थे। फिर क्या हुआ? चाहते हुए भी उड़ नहीं पाये। ''बाबा-बाबा'' कहकर बड़े प्यार से बुलाने लगे, बोलने लगे, क्या बोला होगा? ''उडाओ, उड़ाओ'' बोलने लगे। वा ''छुड़ाओ-छुड़ाओ, 'बोलने लगे। बापदादा बोले– ''छुड़ाओ-छुड़ाओ नहीं, लेकिन छोड़ो तो छूटो।'' लेकिन वे पंछी इतने कोई चतुर थे, कोई कमज़ोर थे जो डाली को भी छोड़ने नहीं चाहते और बाप का साथ भी लेना चाहते थे। दोनों बातें साथ चाहते थे, यह थे चतुर पंछी। और कमज़ोर व भोले पंछी छोड़ने चाहते, लेकिन युक्ति नहीं आती मुक्ति पाने की। और भोले पंछी तो अपने भोलेपन में यह भी नहीं समझते कि यह छोड़ना भी है। तो ऐसे पंछियों को देख बापदादा बार-बार उन्हों को यही बोले–''छोड़ो तो छूटो''। लेकिन वे अपनी बोली बोलते रहे। बापदादा युक्ति भी बताते लेकिन थोड़ा-सा डाली का साथ छोड़ते हुए फिर पकड़ लें। इसलिए बुलाते रहे, बोलते रहे लेकिन उड़ता पंछी बन बाप के साथ समीप मिलन का अनुभव और विश्व-परिक्रमा अर्थात् बेहद की सेवा की परिक्रमा का अनुभव कर नहीं सकते।

अभी आप हरेक अपने से पूछो कि मैं कहाँ था? डाली पर वा बाप के कंधे पर? वा अगुंली पर नाच रहे थे? वा आसपास घूम रहे थे? अपने आपको तो जानते हो ना? अपने आप से पूछो–' 'छोड़ो तो छूटो'', यह पाठ कितना पक्का किया है? ''छोड़ो तो छूटो''– यह पाठ सदा याद है? वा दूसरा छोड़े तो मैं छूटूँ? वा बाप छुड़ाये तो मैं छूटूँ? ऐसा पाठ तो नहीं पढ़ लेते हो? किसी भी प्रकार की ड़ाली को अपने बुद्धि रूपी पाँव से पकड़ के तो नहीं बैठे हो? किसी भी पुराने स्वभाव-संस्कार वा किसी भी शक्ति की कमी होने कारण, निर्बल होने कारण डाली पर ही तो नहीं बैठ गये हो? हर बात में ''छोड़ो तो छूटों'', यह प्रैक्टिकल में लाते हो? यही पाठ ब्रह्मा बाप को नम्बरवन ले गया। शुरू से छोड़ा तो छूट गया ना! यह नहीं सोचा कि– साथी मुझे छोड़ें तो छूटूँ, सम्बन्धी छोड़ें तो छूटूँ। विघ्न डालने वाले विघ्न डालने से छोड़ें तो छूटूँ। भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ मुझे छोड़ें तो छुटूँ। यह कभी सोचा? सदा स्वयं को यही पाठ पक्का प्रैक्टिकल में दिखाया वैसे फालो फादर किया है? इसको कहा जाता है– जो ओटे सो अर्जुन। तो अर्जुन बन गया ना! अर्थात् बाप के अति समीप, समान, कम्बाइन्ड बन गये। जो आप सभी भी बापदादा कम्बाइन्ड बोलते हो ना? तो ऐसे बने हो? वा कभी कैसे, कभी कैसे? जैसे यह बिजली कर रही है। (बिजली बार-बार आती और जाती थी) तो कभी छोड़ो तो छूटो, कभी दूसरा छोड़े तो छूटो, यह खेल तो नहीं खेलते हो? यह बिजली का भी खेल है ना? कभी आना, कभी जाना यह भी खेल हुआ। तो ऐसा खेल तो नहीं करते हो? सदा अच्छा लगता है या आना-जाना अच्छा लगता है? तो हर बात में चाहे स्वभाव परिवर्तन में, संस्कार परिवर्तन में, एक दो के सम्पर्क में आने में, परिस्थितियों या विघ्नों को पार करने में, क्या पाठ पक्का करना है? ''स्वयं छोड़ो तो छूटो''। परिस्थिति आपको नहीं छोड़ेगी, आप छोड़ो तो छूटो। दूसरी आत्मायें संस्कार के टकराव में भी आती हैं। तो भी यही सोचो कि मैं छोडूं तो छूटूँ, यह टकराव छोड़ें तो छूटूँ, यह नहीं। अगर यह छोड़ें तो छूटूँ होगा तो टकराव समाप्त होकर फिर दूसरा शुरू हो जायेगा। कहाँ तक इन्तजार करते रहेंगे कि यह छोड़े तो छूटूँ! यह माया के विघ्न वा पढ़ाई में पेपर तो समय प्रति समय भिन्न भिन्न रूपों से आने ही हैं। तो पास होन के लिए- मैं पढूं ते पास हूँ या टीचर पेपर हल्का करे तो पास हूँ? क्या करना पड़ता है? मैं पढूं तो पास हूँ, यही ठीक है ना! ऐसे ही यहाँ भी सब बातों को– मैं स्वयं पास कर जाऊं। फलाना व्यक्ति

पास करे– यह नहीं। फलानी परिस्थिति पास करे-यह नहीं। मुझे पास करना है।इसको कहा जाता है– ''छोड़ो तो छूटो।'' इन्तजार नहीं करो, इन्तजाम करो। नहीं तो पंछी भी हो, पंख भी हैं और सुन्दर भी बहुत हो, बाप के वृक्ष पर भी बैठ गये हो अर्थात् ब्राह्मण परिवार के भी बन गये हो लेकिन किसी भी प्रकार के स्व के संस्कार वा स्वभाव, वा दूसरों के स्वभाव और संस्कार देखने और वर्णन करने की कमजोरी है, पुरुषार्थ में निराधार नहीं, आधार है, किसी भी व्यक्ति या वस्तु का लगाव है, किसी भी गुण वा शक्ति की कमी है– यह हैं भिन्न-भिन्न डालियाँ। तो इन डालियों में से किसी डाली को पकड़ के तो नहीं बैठे हो? अगर किसी भी डाली को पकड़ा हुआ है तो बाप के सदा अगुंली पर नाचने अर्थात् सदा श्रीमत की अंगुली के आधार पर चलने, ऐसा समीप का अनुभव नहीं कर सकेंगे। वा सदा बाप के हर कर्त्तव्य में सहयोगी अर्थात् कन्धे पर नाच नहीं सकेंगे। एक हैं सदा सहयोगी और दूसरे हैं कभी सहयोगी, कभी वियोगी। क्यों? क्योंकि किसी न किसी डाली को पकड़ लेते हैं तो सहयोगी के बजाए वियोगी बन जाते हैं। अब अपने आप से पूछो– मैं कौन? समझा! तो आज का पाठ क्या पक्का किया? ''छोड़ो तो छूटो?'' पक्का किया ना! डाली को तो नहीं पकड़ेंगे ना! थक जाते हैं ना तो ड़ाली को पकड़कर बैठ जाते हैं। कभी स्वयं से थक जाते हैं, कभी दूसरों से थक जाते हैं, कभी सेवा से थक जाते हैं। तो डाली को पकड़ कर फिर चिल्लाते हैं ''अब छुड़ाओ अब छुड़ाओ।'' पकड़ा खुद ओर छुड़ावे बाप। यह क्यों? इसीलिए बाप सदा छोड़ने की युक्ति बताते। छोड़ेंगे तो खुद ना! करेंगे तो पायेंगे। यह भी बाप करेंगे तो पायेंगे कौन? करें बाप और पायें आप? इसलिये बाप करावनहार बन निमित्त आपको बनाते हैं। तो महाराष्ट्र और राजस्थान में पंछी तो सब सुन्दर हो ना?

बाम्बे में सुन्दर पंछी होते हैं ना! और राजस्थान में भी! हो तो बाप के सभी सुन्दर पंछी, पंखों वाले पंछी। लेकिन डाली वाले पंछी हैं वा उड़ने वाले हैं– यह चैक करो। कइयों की आदत भी होती है, कितना भी उड़ावें फिर जाकर बैठ जायेंगे। किसी भी बात में वशीभूत होना अर्थात् डाली को पाँव से पकड़ना, वशीकरण मंत्र भूल जाते तो वशीभूत हो जाते। तो महाराष्ट्र के पंछी कौन हैं? उड़ते पंछी। सारा महाराष्ट्र का ग्रुप कौन से पंछी हैं? उड़ते पंछी हैं वा डाली वाले हैं? और राजस्थान से कौन से पंछी आए हैं? ''छोड़ो तो छूटो'' या ''छोड़ दिया है और छूट गये हैं।'' थक जाते हैं तो डाली को पकड़ लेते हैं। राजस्थान के पंछी तो बहुत सुन्दर प्रसिद्ध हैं। नाचने वाले पंछी हैं ना! किसके वश तो नहीं होते ना! चक्कर लगाने वाले पंछी अर्थात् सोचते बहुत हैं– यह करेंगे, यह करके दिखायेंगे, लेकिन फिरते रहते हैं आस पास, उड़ते नहीं हैं। ऐसे भी बहुत हैं– ''करेंगे-करेंगे, होगा, दिखायेंगे सोचेंगे...।'' गें-गें करने वाले हैं। यह है आस पास चक्कर लगाने वाले। तो कौन सा ग्रुप लाई हो? बाम्बे से कौन लाई हो? राजस्थान से कौन सा लाई हो? सुन्दर तो सभी हैं क्योंकि बाप के बन गये। ब्राह्मण बनना अर्थात् रंग लग गया। रंग तो आ गया और पंख् भी आ गये। बाकी है ''छोड़ो तो छूटो।'' अच्छा। तो आज रमणीक बच्चे आये हैं ना! तो बापदादा ने भी वतन की रमणीक बातें सुनाई। अच्छा! ऐसे सदा बाप समान, उड़ते पंछी, सदा बेहद के सेवा की सदा परिक्रमा लगाने वाले, सदा सर्व डालियों के बंधन से मुक्त, जब चाहें उड़ जाए, ऐसे सदा स्वतन्त्र पंछी, सदा बाप के अंगुली पर नाचने वाले अर्थात् श्रीमत के आधार पर सदा श्रेष्ठ संकल्प, बोल और कर्म करने वाले ऐसे श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।''

पार्टियों के साथ अव्यक्त बापदादा की मधुर मुलाकात (राजस्थान और महाराष्ट्र जोन)।

1.सच्ची सीता वह, जिसकी नस-नस में राम के स्मृति का आवाज़ हो– अपने को सच्ची सीता समझते हो? सच्ची सीता अर्थात् हर कदम श्रीमत की लकीर के अन्दर। तो सदा लकीर के अन्दर रहते हो ना? राम एक है, बाकी सब सीतायें हों। सीता को लकीर के अन्दर ही बैठना है। सदा बाप की याद, सदा बाप की श्रीमत– ऐसी लकीर के अन्दर रहने वाली सच्ची सीता। एक कदम भी बिना श्रीमत के नहीं। जैसे ट्रेन को पटरी पर खड़ा कर देते हैं तो आटोमेटिकली रास्ते पर चलती रहती है, ऐसे ही रोज़ अमृततवेले याद की लकीर पर खड़े हो जाओ। अमृतवेला है फाउन्डेशन। अमृतवेला ठीक है तो सारा दिन ठीक हो जायेगा। प्रवृत्ति में रहने वालों का विशेष अमृतवेले का फाउन्डेशन पक्का होना चाहिए तो सारा दिन स्वत: सहयोग मिलता रहेगा। लौकिक प्रवृत्ति में रहते भी सदा एक बाप की सच्ची सीता बनकर रहो। सीता को सदा राम ही याद रहे। नस-नस में राम के स्मृति की आवाज़ हो- ऐसी सच्ची सीताएं हो ना! इसी को कहा जाता है न्यारा और प्यारा। जितना न्यारे उतना बाप के प्यारे।

2.हर कदम में पदमों की कमाई का साधन–अपने को विशेष आत्मा समझकर चलो

सदा हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने का साधन है। हर कदम में अपने को विशेष आत्मा समझो-तो जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति स्वत: हो जायेगी। कर्म भी विशेष हो जायेंगे। तो सदा यह स्मृति रहे कि मैं विशेष आत्मा हूँ क्योंकि बाप ने अपना बना लिया। इससे बड़ी विशेषता और क्या हो सकती है? भगवान के बच्चे बन जाना, यह सबसे बड़ी विशेषता है। सदा इसी स्मृति में रहना अर्थात् पदमों की कमाई जमा करना। किसके बने और क्या बने हैं यह भी याद रखो तो कमाई होती रहेगी।

विश्व के आत्माओं की निगाह आपके ऊपर है, इतनी ऊंचे ते ऊंची आत्माएं हो, तो सदा हर पार्ट बजाते, उठते-बैठते, चलते-फिरते इस स्मृति में रहो कि हम स्टेज पर पार्ट बजा रहे हैं। यह ब्राह्मण जीवन है ही आदि से अन्त तक स्टेज के ऊपर पार्ट बजाने वाले।

जब सदा यह स्मृति रहेगी कि मैं बेहद विश्व की स्टेज पर हूँ तो स्वत: हर कर्म के ऊपर अटेन्शन रहेगा। इतना अटेन्शन रखकर कर्म करेंगे तो कमाई जमा होती रहेगी।

3.समीप आत्माओं की निशानी– सदा बाप के समान

सदा अपने को बाप के समीप आत्मा समझते हो? समीप आत्माओं की निशानी क्या होती है? सदा बाप के समान। जो बाप के गुण वह बच्चों के गुण। जो बाप का कर्त्तव्य वह सदा बच्चों का कर्त्तव्य। हर संकल्प और कर्म में बाप समान, इसको कहते हैं समीप आत्मा। जो समीप स्थिति वाले हैं वे सदा विघ्न-विनाशक होंगे। किसी भी प्रकार के विघ्न के वशीभूत नहीं होंगे। अगर विघ्न के वशीभूत हो गये तो विघ्न-विनाशक नहीं कह सकते। किसी भी प्रकार के विघ्न को पार करने वाला, इसको कहा जाता है विघ्न-विनाशक। तो कभी किसी भी प्रकार के विघ्न को देखकर घबराते तो नहीं हो? क्या और कैसे का क्वेश्चन तो नहीं उठता है। अनेक बार के विजयी हैं– यह स्मृति रहे तो विघ्न-विनाशक हो जायेंगे। अनेक बार की हुई बात रिपीट कर रहे हो, ऐसे सहजयोगी। इस निश्चय में रहने वाली विघ्न-विनाशक आत्माँ स्वत: और सहजयोगी होंगी।

4.संगमयुग है समर्थ युग, इससे व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ बनो

सदा अपने को समर्थ आत्माएं समझकर चलते हो? जब सर्वशक्तिवान की स्मृति है तो स्वत: समर्थ हो। समर्थ आत्मा की निशानी क्या होगी? जहाँ समर्थी है वहाँ व्यर्थ सदा के लिए समाप्त हो जाता है। समर्थ आत्मा अर्थात् व्यर्थ से किनारा करने वाले। संकल्प में भी व्यर्थ नहीं। ऐसे समर्थ बाप के बच्चे सदा समर्थ। आधा कल्प तो व्यर्थ सोचा, व्यर्थ किया-अब संगमयुग है समर्थ युग। समर्थ युग, समर्थ बाप और समर्थ आत्माएं। तो व्यर्थ समाप्त हो गया ना! सदा यह स्मृति मे रखो कि हम समर्थ युग के वासी, समर्थ बाप के बच्चे, समर्थ आत्मा हैं। जैसा समय, जैसा बाप वैसे बच्चे। कलियुग है व्यर्थ। जब कलियुग का किनारा कर चुके,संगमयुगी बन गये तो व्यर्थ से किनारा हो ही गया। तो सिर्फ़ समय की याद रहे तो समय के प्रमाण स्वत: कर्म चलेंगे। अच्छा-ओम् शान्ति।

23-11-81

त्याग का भी त्याग

सदा सहयोगी, आज्ञाकारी सपूत बच्चों प्रति अव्यक्त बापदादा बोले:–

''आज बापदादा किससे मिलने आये हैं? जानते हो? आज अनेक भुजाधारी बाप अपनी भुजाओं से अर्थात् सदा सहयोगी बच्चों से मिलने आये हैं। कितनी विशेष सहयोगी आत्मायें बाप की राइट हैण्ड बन हर कार्य में सदा एवररेडी हैं। बापदादा ने डायरेक्शन का इशारा दिया, और राइट हैण्ड अर्थात् विशेष भुजायें अर्थात् आज्ञाकारी बच्चे सदा कहते–''हाँ बाबा, हम सदा तैयार हैं।'' बाप कहते– ''हे बच्चे।'' बच्चे कहते– ''हाँ बाबा।'' ऐसी विशेष भुजाओं को बाप देख रहे हैं। चारों ओर की विशेष भुजाओं द्वारा यही आवाज़ बच्चों का सुन रहे हैं। ''हाँ जी बाबा, अभी बाबा, हाज़िर बाबा।'' ऐसे बच्चों के मधुर आलाप बापदादा के पास पहुँच रहे हैं। बाप भी ऐसे बच्चों को सदा, ''मुरबी बच्चे, सपूत बच्चे, विश्व के श्रृंगार बच्चे, मास्टर भाग्य विधाता, मास्टर वरदाता बच्चे'' कहकर बुलाते हैं।

आज बापदादा ऐसे बच्चों के नाम गिन रहे थे। बताओ कितनी माला बनाई होगी? छोटी माला वा बड़ी माला? और उस माला में आप सबका नम्बर कहाँ होगा? लास्ट के रिज़ल्ट माला की नहीं कह रहे हैं। वर्तमान समय ऐसे राइट हैण्डस कितने हैं? वह माला बना रहे हैं। वर्तमान का नम्बर तो सहज लगा सकते हो ना? माला के नम्बर गिनती करते-करते ब्रह्मा बाप ने एक विशेष बात बोली, क्या बोला होगा? आज विशेष विषय, राइटहैण्ड अर्थात् सहयोग का था। इसी सहयोग की विषय पर आज प्रवृत्ति में रहते, प्रवृत्ति की वृत्ति से परे रहने वाले, व्यवहार में रहते अलौकिक व्यवहार का सदा ध्यान रखने वाले ऐसे न्यारे और बाप के प्यारे विशेष बच्चों की विशेषता देख रहे थे। वायुमण्डल की अग्नि के सेक से भी परे। ऐसे अग्नि प्रूफ बच्चे बापदादा ने देखे। आज ऐसे डबल पार्टधारी, लौकिक में अलौकिकता का पार्ट बजाने वाले बच्चों की महिमा कर रहे थे।

डबल पार्टधारियों की एक यह विशेषता वर्णन हुई-कि कई ऐसे अनासक्त बच्चे भी हैं, जो कमाते हैं, सुख के साधन जितने जुटाने चाहें इतना जुटा सकते हैं लेकिन साधारण खाते,साधारण चलते, साधारण रहते हैं। पहले अलौकिक सेवा का विशेष हिस्सा निकालते हैं। लौकिक कार्य, लौकिक प्रवृत्ति, लौकिक सम्बन्ध, सम्पर्क निभाते भी हैं लेकिन अपनी विशाल बुद्धि के कारण नाराज़ भी नहीं करते और ईश्वरीय कमाई के जमा का राज़ जानते हुए विशेष हिस्सा राजयुक्त हो निकाल भी लेते। इस विशेषता में गोपिकायें भी कम नहीं। ऐसी-ऐसी गुप्त गोपिकायें भी हैं, जो लौकिक में हाफ पार्टनर कहलाती हैं लेकिन बाप के साथ सौदा करने में फुल पार्टनर हैं। ऐसी सच्ची दिल वाली फ़राख़दिल गोपिकायें भी हैं तो पाण्डव भी हैं। सुनाया ना-आज ऐसे बच्चों के नाम गिन रहे थे। ऐसे भी एकनामी कर अलौकिक कार्य में फ़राख़दिल से लगाते हैं। अपने आराम का समय भी, अपने आराम के लिए नहीं, धन का हिस्सा होते हुए भी 75 अलौकिक कार्य में लगाते हैं और निमित्त मात्र लौकिक कार्य को निभाते हैं। ऐसे त्यागवान बच्चे सदा अवि-

नाशी भाग्यवान हैं। लेकिन ऐसे युक्तियुक्त पार्ट बजाने वाले ज्यादा संख्या में नहीं थे। अगुंलियों पर गिनने वाले थे। फिर भी डबल पार्टधारी ऐसी विशेष आत्माओं की महिमा ज़रूर वर्णन हुई।

दूसरे नम्बर के बच्चे भी थे– जो करते भी हैं लेकिन सेकण्ड नम्बर बन जात हैं। इसी गुप्त दान-महादान, गुप्त महादानी की विशेषता है– त्याग के भी त्यागी। जो श्रेष्ठ कर्म का फल प्राप्त होता है वह प्रत्यक्षफल है– सर्व द्वारा महिमा होना। सेवाधारी को श्रेष्ठ गायन की सीट मिलती है– मान, मर्तबे की सीट मिलती है, यह सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है। क्योंकि यह सिद्धियाँ रास्ते की चट्टियाँ हैं, यह फाइनल मंजिल नहीं है, इसलिए इसके त्यागवान, भाग्यवान बनो। इसको कहा जाता है– महात्यागी।

अभी-अभी किया, अभी-अभी खाया, जमा नहीं होता। यह अल्पकाल की सिद्धियाँ कर्म के प्रत्यक्षफल के रूप में प्राप्त ज़रुर होंगी क्योंकि संगमयुग प्रत्यक्षफल देने वाला युग है। भविष्य तो अनादि नियम प्रमाण मिलना ही है लेकिन संगमयुग वरदान युग है। अभी-अभी किया, अभी-अभी मिला। लेकिन अभी-अभी खाया, यह नहीं करना। यह प्रसाद समझकर बाँट लो या बाप के आगे भोग लगा दो। तो एक का पदमगुणा जमा हो जायेगा। तो सौगा करने में होशियार बनो, भोले नहीं बनो। सुना-यह हैं सेकेण्ड नम्बर। अच्छा-तीसरा नम्बर भी सुनेंगे? तीसरा नम्बर– सेवा में सहयोगी कम बनते हैं लेकिन सीट पहले जैसी लेनी चाहते हैं। सर्व खज़ाने स्वयं के आराम प्रति ज्यादा लगाते हैं।

पहला नम्बर एकनामी और एकानामी वाले, दूसरा नम्बर कमाया और खाया। और तीसरा नम्बर कमाई कम और खाना ज्यादा। औरों की भी कमाई को खाने वाले। वह हैं– लाओ और खाओ। श्रेष्ठ आत्माओं के भाग्य का हिस्सा, त्यागवान बच्चों कें प्रत्यक्ष-फल, सर्व प्राप्तियों को त्यागवान त्याग करते लेकिन तीसरे नम्बर वाले उन्हों के हिस्से का भी स्वयं स्वीकार कर लेते हैं। कमाने वाले नहीं सिर्फ़ खाने वाले। इस कारण नम्बरवन बच्चे बोझ उतारने वाले और वह बोझ चढ़ाने वाले क्योंकि अपनी मेहनत की कमाई नहीं खाते। ऐसी खाती-पीती आत्मायें भी देखीं।

अभी सुना तीन नम्बर? अभी सोचा मैं कौन? अच्छा, फिर भी आज की रूह-रूहान में प्रवृत्ति में रहकर एकनामी और एकनामी वाले बच्चों की बार-बार महिमा गाई। अच्छा!

ऐसे सदा हाँ बाबा, हाज़िर बाबा कहने वाले, सदा स्वयं त्याग का भी त्याग कर औरों को भाग्यवान बनाने वाले, सदा बापदादा से श्रेष्ठ सौदा करने वाले, सदा सेवा में सर्व खज़ानें लगाने वाले, ऐसे गुप्त दानी महाभागी आत्माओं को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।''

राजस्थान (जयपुर) ग्रुप को सेवा की वृद्धि का विशेष इशारा तथा प्लैन-

राजस्थान वाले भी राजगद्दी के स्थान वाले हो। तो राजगद्दी के स्थान पर क्या-क्या कर रहे हो? इस सारे साल के अन्दर क्या-क्या नवीनता की है? महातीर्थ कराने के लिए यात्रियों की पार्टियाँ लाई? लौकिक यात्रा पर भी संगठन बनाकर ले जाते हैं, पूरी ट्रेन की ट्रेन ले जाते हैं, तो राजगद्दी वालों ने इस महातीर्थ की यात्रा कितनों को कराई? राजस्थान की राजगद्दी वालों ने मुख्य स्थान (हैड-क्वार्टर) पर कितनों को लेकर आये? बस भरकर लाये? या राजस्थान में यात्री हैं ही नहीं, क्या समझते हो? यात्री नहीं है या पण्डे तैयार नहीं हैं? अगर इतने सब पण्डे हों तो यात्री कितने होने चाहिए? तो यात्रियों को लायेंगे या खुद को ही लायेंगे। इस साल प्रोग्राम बनायेंगे या दूसरे साल? अच्छा, कोई नया प्लैन बनाया है? जैसे जयपुर का इन्टरनेशनल स्थान है तो कम से कम यह विशेषता ज़रूर करो जो अब तक कोई ने नहीं की हो! मेन स्थान पर बहुत अच्छा सुन्दर बड़ा बोर्ड लगाओ। यह तो कर सकते हो ना? बोर्ड ऐसा आकर्षण वाला हो जो चलते फिरते सबकी नज़र जाए। उसकी सजावट और मैटर ऐसा हो जो न चाहते भी सब उसे देखें ज़रूर। और मैटर भी ऐसा बनाओ जो सब पढ़ कर समझें यह करना चाहिए, यहाँ जाना चाहिए। ऐसे चलते फिरते सन्देश मिलता रहे, एड्रेस हो और वहाँ का विशेष निमन्त्रण भी हो। ऐसा कम शब्दों में आकर्षण वाला मैटर भी बनाओ और बोर्ड की सजा-वट का प्लैन निकालो जिससे अनेकों को सन्देश मिलता रहेगा। ऐसे मुख्य स्थान पर खर्चा हो तो भी कोई हर्जा नहीं। तो अभी यह करके दिखाओ। कोई नई इन्वेंशन हो जो न चाहते हुए भी सबको चमकता हुआ नज़र आता रहे। ऐसा कोई प्लैन बनाओ, एड्रेस, फोन नम्बर सब लिखा हुआ हो, निमन्त्रण भी हो। तो कोई न कोई विशेष आत्मा जाग जायेगी। जहाँ मेन सबका आना जाना है, नज़र जाने वाली है, ऐसे स्थान पर कुछ करो लेकिन ऐसा आकर्षण वाला हो जो देखने के बिना कोई भी रह न सके। अच्छा, दूसरा क्या करेंगे? किसी न किसी विशेष आत्मा को हर मास यात्रा ज़रूर करानी है। ऐसा लक्ष्य रखो। बस भराकर न आओ लेकिन एक दो को तो ले आ सकते हो ना! एक विशेष ऐसी आत्मा लाओ जो अनेकों को सन्देश सुनाने के निमित्त बन जाए। साधन तो सब हैं सिर्फ़ करने वाले करें तो सहज हो। एक बार सम्पर्क करके छोड़ नहीं देना है, बार-बार सम्पर्क रखते रहो। ऐसे सम्पर्क वाले फिर कहना न मानें यह होता नहीं है। तो क्या करेंगे? सदैव सोचो-कि मुझे करना है। दूसरे को नहीं देखो। इनमें जो ओटे सो अर्जुन। मुझे देख और करेंगे...तो फिर क्या हो जायेगा? हरेक यह पाठ पढ़ ले कि मुझे करना है तो सब करने लग जायेंगे। इसमें दूसरों को न देख स्वयं को मैदान में लाओ। अच्छा, स्व में तो ठीक हो लेकिन सेवा में भी नम्बरवन। सेवा में भी फुल मार्क्स लेनी हैं। अच्छा!

टीचर्स के साथ– टीचर्स को डबल चांस मिला है। डबल इसीलिए मिल रहा है कि अनेंकों को बाटेंगी। क्योंकि शिक्षक अर्थात् सदा औरों की सेवा के लिए जीने वाली। शिक्षक की जीवन सदा औरों को सिखाने के लिए होती है। स्व के प्रति नहीं लेकिन सेवा के प्रति। जब मास्टर शिक्षक वा सच्चेधारी यह लक्ष्य रखते हैं कि हमारा हर सैकण्ड और हर संकल्प दूसरों को पढ़ाने के लिए है तो ऐसा मास्टर शिक्षक वा सेवाधारी सदा सफलता मूर्त्त होते हैं। जीना ही सेवा है, चलना ही सेवा है, बोलना, सोचना अब सेवा के लिए। हर नस-नस में सेवा का उमंग और उत्साह भरा हुआ हो। जैसे नसों में खून चलता है तो जीवन है। ऐसे सेवाधारी अर्थात् हर नस यानी हर संकल्प, हर सैकण्ड में सेवा के उमंग-उत्साह का खून भरा हुआ हो। ऐसे ही सेवाधारी हो ना? गुडनाइट करें तो भी सेवा, गुड मार्निंग करें तो भी सेवा। उसमें स्व की सेवा स्वत: समाई हुई है। तो इसको कहा जाता है– सच्चे सेवाधारी। सेवाधारी के स्वप्न भी कौन से होंगे? सेवा के। स्वप्न में भी सेवा करते रहेंगे। ऐसे ही हो ना?

सेवाधारियों को लिफ्ट भी बहुत बड़ी है। अनेक दुनिया के बन्धनों से मुक्त हो। यहाँ ही जीवनमुक्त स्थिति की प्राप्ति है। सेवाधारी का अर्थ ही है – बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त। कितने हद की जिम्मेवारियों से छूटे हुए हो। और अलौकिक जिम्मेवारी भी बाप की है, इससे भी छूटे हुए हो। सिर्फ़ सेवा किया-आगे चलो। जिम्मेवारी का बोझ नहीं है। क्या किसी के ऊपर कोई बोझ है? सेन्टर का बोझ है क्या? सेन्टर को चलाने का बोझ नहीं है, यह फिकर नहीं रहता है कि जिज्ञासू कैसे आवें (रहता है) तो बोझ हुआ ना!

सफलता भी तब होगी जब यह समझो कि मैं बढ़ाने वाली नहीं हूँ लेकिन बाप की याद से स्वत: बढ़ेगी। मैं बढ़ाने वाली हूँ, तो बढ़ नहीं सकती। बाप को बोझ दे देंगे तो बढ़ती रहेगी। इसलिए इससे भी निश्फुरने रहना। जितना स्वयं हल्के होगे उतना सेवा और स्वयं सदा ऊपर चढ़ती रहेंगी अर्थात् उन्नति को पाती रहेंगी। जब मै-पन आता है तो बोझ हो जाता है और नीचे आ जाते हो। इस-लिए इस बोझ से भी निश्चिन्त। सिर्फ़ याद के नशे में सदा रहो। बाप के साथ कम्बाइन्ड सदा रहो तो जहाँ बाप कम्बाइन्ड हो गया वहाँ सेवा क्या है? स्वत: हुई पड़ी है। अनुभवी हो ना?

तो शिक्षक अर्थात् सेवाधारी को यह भी लिफ्ट हो गई ना! याद में रहो और उड़ते रहो। सेवा तो निमित्त हैं। करावनहार करा रहा है तो हल्के भी रहेंगे और सफलतामूर्त्त भी रहेंगे। क्योंकि जहाँ बाप है वहाँ सफलता है ही। अच्छा!

बापदादा अपनी हमजिन्स को देखकर खुश होते हैं। मास्टर भाग्यविधाता हो। भाग्यविधाता को याद कर अनेंको के भाग्य के तक-दीर की लकीर खींचने वाले हो। सन्तुष्ट तो सदा हो ही। पूछने की ज़रूरत है क्या? मास्टर शिक्षक से पूछना यह भी इनसल्ट हो जायेगी ना! सदा सन्तुष्ट हो और सदा रहेंगी।

अच्छा, महाराष्ट्र और राजस्थान का मेला पूरा हुआ? यह दिन भी ड्रामा में लिपटता जा रहा है। फिर कब आयेगा? हर घड़ी का, हर सैकण्ड का अपना-अपना महत्व है। संगमयुग है ही महत्व का युग। महान बनने का युग और महान बनाने का युग। इसलिए संगम के हर सैकण्ड का महत्व है। संगम पर शिक्ष्क अर्थात् सेवाधारी बनने का भी महत्व है, प्रवृत्ति में रहकर न्यारे रहने का भी महत्व है। गोपिकायें बनने का भी महत्व है, पाण्डव बनने का भी महत्व है। सबका अपना-अपना महत्व है। लेकिन निमित्त शिक्षक को चांस बहुत अच्छा है। तो सभी चांस लेने वाली हो ना! अच्छा-ओम् शान्ति।

26-11-81

सहयोगी ही सहजयोगी

राजऋषि, सहयोगी, सहजयोगी बच्चों के प्रति अव्यक्त बापदादा बोले-

''आज बापदादा अपने स्वराज्य-अधिकारी, राजऋषि भविष्य में राज्य-वंशी बच्चों को देख रहे हैं। सभी सहजयोगी अर्थात् राज-ऋषि हो। बापदादा सभी बच्चों को वर्तमान वरदानी समय पर विशेष वरदान कौन-सा देते हैं? सहजयोगी भव! यह वरदान अनुभव करते हो? योगी तो बहुत बनते हैं लेकिन सहजयोगी सिर्फ़ संगमयुगी आप श्रेष्ठ आत्मायें बनती हो। क्योंकि वरदाता बाप का वर-दान है। ब्राह्मण बने अर्थात् इस वरदान के वरदानी बने। सबसे पहला जन्म का वरदान यही सहजयोगी भव का वरदान है। तो अपने आप से पूछो– वरदानी बाप, वरदानी समय और आप भी वरदान लेने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। इस वरदान को सदा बुद्धि में याद रखना-यह है वरदान को जीवन में लाना। तो ऐसे वरदान को सदा प्राप्त की हुई आत्मा, प्राप्ति स्वरूप आत्मा समझते हो? वा मेह-नत भी करनी पड़ती है? सदा वरदानी आत्मा हो? इस वरदान को सदा कायम रखने की विधि जानते हो? सबसे सहज विधि कौन-सी है? जानते हो ना? सदा सर्व के और सेवा में सहयोगी बनो। तो सहयोगी ही सहज योगी हैं। कई ब्राह्मण आत्मायें सहज योग का अनुभव सदा नहीं कर पाती। योग कैसे लगायें? कहाँ लगायें? इसी क्वेश्चन में अब तक भी हैं। सहज योग में क्वेश्चन नहीं होता हैं। साथ-साथ वरदान है, वरदान में मेहनत नहीं होती है। और सहज, सदा स्वत: ही रहता है अर्थात् सहज योगी वरदानी आत्मा स्वत: निरन्तर योगी होती है। नहीं रहते इनका कारण? प्राप्त हुए वरदान को वा ब्राह्मण जन्म के इस अलौकिक गिफ्ट को सम्भा-लना नहीं आता। स्मृति द्वारा समर्थी रखने में अलबेले बन जाते हो। नहीं तो ब्राह्मण और सहज योगी न हों तो ब्राह्मण जीवन की

विशेषता ही क्या रही। वरदानी होते भी सहज योगी नहीं तो और कब बनेंगे? यह नशा और निश्चय सदा याद रखो– यह हमारा जन्म का वरदान है। इसी वरदान को सर्व आत्माओं के प्रति सेवा में लगाओ। सेवा में सहयोगी बनना– यही विधी है सहजयोगी की। अमृतवेले से लेकर सहयोगी बनो। सारे दिन की दिनचर्या का मूल लक्ष्य एक शब्द रखो कि सहयोग देना है। सहयोगी बनना है। अमृतवेले बाप से मिलन मना कर बाप समान मास्टर बीजरूप बन, मास्टर विश्व-कल्याणकारी बन सर्व आत्माओं को अपनी प्राप्त हुई शक्तियों के द्वारा आत्माओं की वृत्ति और वायुमण्डल परिवर्तन करने के लिए सहयोगी बनो। बीज द्वारा सारे वृक्ष को रूहानी जल देने के सहयोगी बनो। जिससे सर्व आत्माओं रूपी पत्तों को प्राप्ति के पानी मिलने का अनुभव हो। ऐसे अमृतवेले से लेकर जो भी सारे दिन में कार्य करते हो, हर कार्य का लक्ष्य– ''सहयोग देना'' हो। चाहे व्यवहार के कार्य में जाते हो, प्रवृत्ति को चलाने के कार्य में रहते हो। लेकिन सदा यह चैक करो– लौकिक व्यवहार में भी स्व प्रति वा साथियों के प्रति शुभ भावना और कामना से वायुमण्डल रूहानी बनाने का सहयोग दिया? वा ऐसे ही रिवाजी (साधारण) रीति से अपनी डियुटी बजाकर आ गये। जैसा जिसका आक्युपेशन होता है, वह जहाँ भी जायेंगे, अपने आक्युपेशन प्रमाण कार्य ज़रूर करेंगे। आप सबका विशेष आक्युपेशन ही है– ''सहयोगी बनना''। वह कैसे भूल सकते! तो हर कार्य में सहयोगी बनना है अर्थात् सहजयोगी बन जायेंगे। कोई भी सेकण्ड सहयोगी बनने के सिवाए न हो। चाहे मंसा में सहयोगी बनो चाहे वाचा से सहयोगी बनो। चाहे सम्बन्ध सम्पर्क के द्वारा सहयोगी बनो। चाहे स्थूल कर्म द्वारा सहयोगी बनो। लेकिन सहयोगी ज़रुर बनना है। क्योंकि आप सभी दाता के बच्चे हो। दाता के बच्चे सदा देते रहते हैं। तो क्या देना है? ''सहयोग''।

स्व परिवर्तन के लिए भी स्वयं के भी सहयोगी बनो। कैसे? साक्षी बन स्व के प्रति भी सदा शुभचिन्तन की वृत्ति और रूहानी वायुमण्डल बनाने के लिए स्व प्रति भी सहयोगी बनो। जब प्रकृति अपने वायुमण्डल के प्रभाव में सभी को अनुभव करा सकती है– जैसे सर्दी, गर्मी प्रकृति अपना वायुमण्डल पर प्रभाव डाल देती है, ऐसे प्रकृतिजीत, सदा सहयोगी, सहज योगी आत्मायें अपने रूहानी वायुमण्डल का प्रभाव अनुभव नहीं करा सकती? सदा स्व प्रति और सर्व के प्रति सहयोग की शुभ भावना रखते हुए सहयोगी आत्मा बनो। वह ऐसा है, वा ऐसा कोई करता है, यह नहीं सोचो। कैसा भी वायुमण्डल है, व्यक्ति है– ''मुझे सहयोग देना है''।

ऐसे सभी ब्राह्मण आत्मायें सदा सहयोगी बन जाएं तो क्या हो जायेगा? सभी सहज योगी स्वत: हो जायेंगे क्योंकि सर्व आत्माओं का सहयोग मिलने से कमज़ोर भी शक्तिशाली हो जाते हैं। कमज़ोरी समाप्त होने से सहयोगी तो हो ही जायेंगे ना! कोई भी प्रकार की कमज़ोरी, मुश्किल वा मेहनत का अनुभव कराती है। शक्तिशाली हैं तो सब सहज है। तो क्या करना पड़े? सदा चाहे तन से, मन से, धन से, मंसा से, वाणी से वा कर्म से सहयोगी बनना है। अगर कोई मन से नहीं कर सकते तो तन और धन से सहयोगी बनो। मंसा, वाणी से नहीं तो कर्म से सहयोगी बनो। सम्बन्ध जुड़वाने वा सम्पर्क रखाने के सहयोगी बनो। सिर्फ़ सन्देश देने के सहयोगी नहीं बनो, अपने परिवर्तन से सहयोगी बनो। अपने सर्व प्राप्तियों के अनुभव सुनाने के सहयोगी बनो। अपने सदा हर्षित रहने वाली सूरत से सहयोगी बनो। किसी को गुणों के दान द्वारा सहयोगी बनो। किसी को उमंग-उत्साह बढ़ाने के सहयोगी बनो। जिसमें भी सहयोगी बन सको उसमें सहयोगी सदा बनो। यही सहज योग है। समझा क्या करना है? यह तो सहज है ना! जो है वह देना है। जो कर सकते हो वह करो। सब नहीं कर सकते हो तो एक तो कर सकते हो? जो भी एक विशेषता हो उसी विशेषता को कार्य में लगाओ अर्थात् सहयोगी बनो। यह तो कर सकते हो ना यह तो नहीं सोचते हो कि मेरे में कोई विशेषता नहीं। कोई गुण नहीं। यह हो नहीं सकता। ब्राह्मण बनने की ही बड़ी विशेषता है। बाप को जानने की बड़ी विशेषता है। इसलिए अपनी विशेषता द्वारा सदा सहयोगी बनो। अच्छा!

ऐसे सदा सहयोगी अर्थात् सहजयोगी, सदा अपने श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वायुमण्डल बनाने के सहयोगी आत्मा, कमज़ोर आत्माओं को उत्साह दिलाने की सहयोगी आत्मा, ऐसे अमृतवेले से हर समय सहयोगी बनने वाली आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

पार्टियों के साथ-

1. साइलेन्स की शक्ति से दैवी स्वराज्य की स्थापना– साइलेन्स की शक्ति से सारे विश्व पर दैवी राजस्थान का फाउन्डेशन डाल रहे हो ना! वह आपस में लड़ते हैं और बाप दैवी राजस्थान बना रहे हो, क्या बनना है? यह उन्हों को क्या पता वह तो अपना-अपना प्रयत्न करते रहते हैं लेकिन भावी क्या है– उसको तो आप जानते हो? तो सभी बच्चे साइलेन्स की शक्ति से दैवी स्वराज्य बना रहे हो ना? उनकी है जबान की शक्ति, या बाहुबल, शस्त्रों की शक्ति और आपकी है– साइलेन्स की शक्ति। इसी शक्ति के द्वारा दैवी राज्य स्थापन हो ही जायेगा– यह तो अटल निश्चय है ना! वे भी समझते हैं कि वर्तमान समय कोई ईश्वरीय शक्ति चाहिए जो कार्य करे। लेकिन गुप्त होने के कारण जान नहीं सकते हैं। आप जानते हो और कर भी रहे हो। पंजाब में वृद्धि तो हो रही है ना! पंजाब भी सेवा का आदि स्थान है। तो आदि स्थान से कोई विशेष कार्य होना चाहिए। रूहानी बाप के बच्चे होने के नाते रूहानी सेवा करना हर बच्चे का कार्य है। जो बाप का कार्य वही बच्चों का कार्य। जैसे रूहानी बाप का कर्त्तव्य है– रूहानी सेवा करना ऐसे बच्चों को

भी इसी कार्य में तत्पर रहना है। यह रूहानी सेवा हर सेकेण्ड में, हर कदम में प्रत्यक्ष फल प्राप्त कराती है। प्रत्यक्ष फल है खुशी। जितनी सेवा करते उतना खुशी का ख़ज़ाना बढ़ता जाता है, एक का पदमगुणा मिलता है। ऐसे समझते हो? आपका आक्युपेशन ही है– रूहानी सेवाधारी। लौकिक में भल कोई भी पोज़िशन हो लेकिन अलौकिक में रूहानी सेवाधारी हो। अगर कोई डाक्टर है, तो रूहानी और जिस्मानी डबल डाक्टर बनो। वह सेवा करते भी मूल कर्त्तव्य है रूहानी डाक्टर बनना। बार-बार रोगी आये, इससे तो रोग ही खत्म हो जाए, सदा के लिए। तो ऐसी दवाई देनी चाहिए ना! रोगी आता ही है सदा शफा पाने के लिए। सदा शफा होगी रूहानी सेवा से। अच्छा!

28-11-81

आप पूर्वजों से सर्व आत्माओं की आशाएं

ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड-फादर तथा गाड-फादर बाप दादा बोले:–

''आज ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर अपनी सारी वंशावली से मिल रहे हैं। कितनी बड़ी वंशावली है, इसको आप सब जानते हो? आप सभी इस वंशावली के आदि फाउन्डेशन हो वा वंशावली के वृक्ष के मूल तना हो। आप लोगों द्वारा वंशावली कैसे वृद्धि को पाती है, यह सब राज़ अच्छी तरह से जानते हो ना? किसी भी आत्मा को देखते हो वा सम्पर्क में आते हो तो यह स्मृति में आता है कि सर्व आत्माओं के हम पूर्वज हैं वा सारे वृक्ष की शाखायें, उपशाखायें, सबके मूल आधार हैं अर्थात् फाउन्डेशन हैं। यह स्मृति सदा इमर्ज रूप में रहती है? इस श्रेष्ठ स्मृति से स्वत: ही समर्थ स्वरूप हो ही जायेंगे। अगर तना अर्थात् मूल फाउन्डेशन कमज़ोर होता है तो सारा वृक्ष कमज़ोर बन जाता है। तना शक्तिशाली है तो वृक्ष भी शक्तिशाली है। सारे वृक्ष के हर पत्ते का सम्बन्ध बीज के साथ-साथ तना से भी होता है। बीज की शक्ति तना द्वारा ही शाखाओं, उपशाखाओं को पहुँचती है। तो आज आपकी सर्व वंशावली को आप पूर्वजों द्वारा वा मूल आधार द्वारा कौन-सी शक्ति चाहिए? सर्व आत्मायें आप पूर्वजों का किस आशाओं से याद कर रही हैं? कौन-सी शुभ चाहना आप मास्टर दाता, वरदाताओं द्वारा चाहते हैं? सर्व आत्माओं की अर्थात् अपनी बेहद की वंशावली के शुभ संकल्प वा इच्छाओं को जानते हो?

आज सर्व आत्माओं का एक ही आवाज़ सुनने में आ रहा है। सबका एक ही आवाज़ है– दो घड़ी के लिए भी सुख और चैन से जीना चाहते हैं। बेचैन हैं। सम्पत्ति और साधन होते हुए भी सुख और चैन की नींद आँखों में नहीं है। आजकल मैजारिटी-सच्चे सुख और शान्ति के वा सच्ची खुशी के प्यासे होने के कारण रास्ता ढूंढ़ रहे हैं। अनेक अल्पकाल के रास्ते अनुभव करते, सन्तुष्टता न मिलने के कारण अब धीरे-धीरे उन अनेक रास्तों से लौट रहे हैं, यह भी नहीं, यह भी नहीं। अब नेती-नेती के अनुभव में आ रहे हैं। अभी, ''सही रास्ता कुछ और है'',– ऐसी अनुभूति करने लगे हैं। ऐसे समय पर आप पूर्वजों का कार्य है– ऐसी आत्माओं को शमा बन रास्ता दिखाना। अमर ज्योति बन अंधकार से ठिकाने पर लाना। ऐसे संकल्प आते हैं? यह स्मृति रहती है कि हम पूर्वज आत्मायें सर्व वंशावली के आगे जो करेंगे वही सारे वंशावली तक पहुँचता है? आप पूर्वजों की वृत्ति विश्व के वातावरण को परिवर्तन करने वाली है। आप पूर्वजों की दृष्टि सर्व वंशावली को ब्रदरहुड की स्मृति दिलाने वाली है। आप पूर्वजों की बाप की स्मृति, सर्व वंशावली को स्मृति दिलायेगी कि हमारा बाप आया है। आप पूर्वजों के श्रेष्ठ कर्म वंशावली को श्रेष्ठ चरित्र अर्थात् चरित्र निर्माण की शुभ आशा उत्पन्न करेंगे।

सबकी नज़र आप पूर्वजों को ढूंढ रही है। अब बेहद के स्मृति स्वरूप बनो। तो हद की व्यर्थ बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। उल्टे वृक्ष के हिसाब से बीज के साथ तना भी ऊपर ऊंचा है। डायरेक्टर बीज और मुख्य दो पत्ते, त्रिमूर्ति के साथ समीप के सम्बन्ध वाले तना हो। कितनी ऊंची स्टेज हो गई। इसी ऊंची स्टेज पर स्थित रहो तो हद की बातें क्या अनुभव होंगी! बचपन के अलबेलेपन की बातें अनुभव होंगी। अपने बेहद के बुजुर्गपन में आओ। तो सदा सर्व अनुभवीमूर्त हो जायेंगे। जो बेहद के पूर्वजपन का आक्युपेशन है, उसको सदा स्मृति में रखो। अब कितना कार्य रहा हुआ है? सदा यह स्मृति में रखो। लेकिन यह सारा कार्य सहज सम्पन्न कैसे होगा? जैसे आपकी रचना साइंस वाले विस्तार को सार में समा रहे हैं। अति सूक्ष्म और शक्तिशाली साधन बना रहे हैं। जिससे समय, सम्पत्ति और शस्त्र कम से कम खर्चा हो। पहले विनाश के कार्य में कितनी बड़ी सेना, कितने शस्त्र और कितना समय लगता था और अब विस्तार को सार में लाया है ना! ऐसे आप मास्टर रचयिता बन स्थापना के कार्य में ऐसे ही सूक्ष्म द्वारा निमित्त स्थूल साधन कार्य में लगाओ। नहीं तो स्थूल साधनों के विस्तार में सूक्ष्म शक्ति गुप्त हो जाती है। स्थूल साधन का विस्तार, जैसे वृक्ष का विस्तार बीज को छुपा देता है, वैसे सूक्ष्म शक्ति की परसेन्टेज गुप्त हो जाती है। आप पूर्वज आत्माओं की अलौकिकता– ''सूक्ष्म शक्ति'' है। जो सब अनुभव करें कि पूर्वजों द्वारा कोई विशेष शक्ति उत्पन्न हो रही है। वंशावली आप आत्माओं द्वारा कोई नवीनता चाहती है। साधनों की शक्ति, वाणी की शक्ति यह तो सबके पास है। लेकिन अप्राप्त शक्ति कौन-सी है? वह है– 'श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ वृत्ति की शक्ति, स्नेह और सहयोग की दृष्टि।' यह किसके पास नहीं है। तो हे पूर्वज आत्मायें! अपनी

वंशावली के प्राप्ति के आशाओं के दीपक जलाए यथार्थ मंजिल तक लाओ। समझा क्या करना है? जो लोग करते हैं वह किया तो क्या किया! आप तो अल्लाह-लोग हो, न्यारे लोग हो। अभी वाणी के बाम्बस फेंकते हो लेकिन यह अभी बेबी बाम्बस हैं। अभी प्राप्ति के अनुभूति के बाम्बस चलाओ। जो सीधा जीवन परिवर्तन कर दें। दिमाग तक तीर लगाये हैं, दिल का तीर नहीं लगाया है। आगे क्या करना है, वह प्लैन तो देना पड़ेगा ना! अभी मुख का आवाज़ निकलता है कि अच्छा कार्य कर रहे हैं। लेकिन दिल से आवाज़ निकले कि ''यही एक मार्ग है''। मुख का सौदा करने वाले बहुत होते हैं, दिल से सौदा करने वाले कोटों में कोई होते हैं। लेकिन आप सभी दिलवाला के बच्चे हो, दिल से सौदा कराने वाले हो। तो अब क्या करेंगे? ऐसा शक्तिशाली सेवा का चक्र चलाओ जो सर्व आत्मायें अपने पूर्वजो को पहचान प्राप्ति के अधिकार को प्राप्त कर लें। कुछ सुना, अच्छा सुना, इसके बदले, कुछ मिला ऐसे अनुभूति करें। समझा? सुनाते अच्छा हैं, नहीं बनाते अच्छा हैं। कम खर्चा, कम शक्ति, कम समय इसी विधि से सिद्धि स्वरूप बनो।

पंजाब का जोन है ना? पंजाब को क्या बनायेंग ऐसी कुछ नवीनता करके दिखाओ। अनुभव कराना अर्थात् वारिस बनाना। अच्छा सुनने वाले, अच्छा-अच्छा कहने वाले, वह हो गई प्रजा। अब चाहिए वारिस क्वालिटी। एक वारिस वारिस के पीछे प्रजा तो आपेही आ जायेगी। पंजाब क्या करेगा? क्वान्टिटी नहीं बढ़ती तो क्वालिटी तो निकाल सकते हो। क्या करेंगे? अभी वारिस क्वालिटी चारों ओर कम है। तो पंजाब इसमें नम्बरवन हो जाओ। कोई क्वान्टिटी में नम्बरवन तो कोई क्वालिटी में नम्बरवन हो जाओ। समझा - पंजाब वाले क्या करेंगे? क्वालिटी वाला एक, और क्वान्टिटी कितनी होगी? क्योंकि एक क्वालिटी वाला क्वान्टिटी को स्वत: ही ले आता है। उनके नाम से आपका काम हो जायेगा। यह तो सहज है ना? अच्छा।

आज पंजाब और मधुबन का टर्न है। पंजाब वाले सबको मधुबन में आकर सरेन्डर करायेंगे। पंजाब से नदिया निकलेंगी और समा-येंगी कहाँ? मधुबन है ही सागर का कण्ठा। तो पंजाब और मधुबन का मेल हो गया। विशेष टर्न पंजाब का है इसीलिए पंजाब को कह रहे हैं। बाकी तो सब आ गये ना उसमें। मधुबन में तो सब आ गये। सबको किसमें समाना है? मधुबन में ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व पूर्वज आत्माओं को, सदा सर्व की आशायें सदाकाल के लिए पूर्ण करने वाले, अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति के अंचली की अनुभूति कराने वाले, सर्व को अनेक रास्तों से निकाल एक रास्ते पर लाने वाले, ऐसे सर्व आत्माओं के मूल आधार, सदा सर्व को एक बाप के अधिकारी बनाने वाले ऐसी श्रेष्ठ पूर्वज आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

सुना तो बहुत है अब विशेषता है स्वरूप बनाना। जितना स्वयं सर्व प्राप्ति स्वरूप होंगे उतना सर्व को प्राप्ति स्वरूप बना सकेंगे। आजकल सर्व आत्मायें पाना चाहती हैं, न कि सुनना। जब पा लेते हैं तब ही खुशी से यह गीत गायेंगे कि पाना था वो पा लिया। जैसे आप लोग यह खुशी का गीत गाते हो ना! पा लिया। ऐसे अन्य आत्मायें भी यह खुशी का गीत गायेंगी। वर्तमान समय आत्माओं को यही आवश्यकता है। जो आवश्यकता है उसी को पूर्ण कनना यही आप श्रेष्ठ आत्माओं का कर्त्तव्य है। इसी कर्त्तव्य में सदा अनुभवी मूर्त्त अनुभव कराते चलो। यही चाहते हैं ना! इसी चाहना को पूर्ण करने वाले अर्थात् सर्व को तृप्त आत्मा बनाने वाले। तो सदा तृप्त आत्मा हो? सदा सर्व ख़ज़ानों से सम्पन्न होगा वही तृप्त होगा। और जो स्वयं के पास होगा वही औरों को भी ज़रूर देगा। तो सदा प्राप्ति स्वरूप के नशे और खुशी में रहो– यही संगमयुग के जीवन की विशेषता है। बाप को पाया अर्थात् संग-मयुग का प्रत्यक्षफल पाया। प्रत्यक्षफल है– सर्व प्राप्ति। इसी स्थिति से सर्व सिद्धि हो जायेंगी।

मधुबन निवासी भाई-बहिनों के साथ:–

मधुबन निवासी इतने खुशनसीब हो जो सब देखकर खुश हो रहे हैं। इतनी अपनी तकदीर को जानते हो ना! कितने तकदीरवान हो जो सदा सागर के कण्ठे पर रहते हो। सदा स्थूल में भी बाप और श्रेष्ठ आत्माओं का साथ है तो कितना बड़ा भाग्य हो गया! तो सदा अपने भाग्य के गुण गाते रहते हो? बस यही गुण गाते और खुशी के झूले में झूलते रहो। मधुबन निवासी अर्थात् सदा मधु के समान मीठे। तो सदा मुख मीठा रहना और सदा सर्व का मुख मीठा करने वाले। सागर के कण्ठे पर रहने वाले होलीहंस हो। हंस क्या करते हैं? सदा मोती चुगते हैं। कंकड़ को देखते नहीं, रत्नों को देखते हैं। तो सभी रत्नों को ग्रहण करने वाले हो ना! महान तीर्थ-स्थान पर रहने वाली महान आत्मायें हो। तो यह महात्माओं का ग्रुप हो गया ना! महात्मा अर्थात् जो सदा महान वस्तु को देखे। तो महान वस्तु कौन-सी है? (आत्मा) तो महात्मा की नज़र कहाँ जायेंगी? महान वस्तु पर। तो सदा महान देखने वाले, महान बोल बोलने वाले और महान कर्म करने वाले, इसको कहा जाता है महात्मा। तो पाण्डव सभी महात्मा हो! बापदादा की सबसे ज्यादा आशायें किसमें हैं? मधुबन निवासियों में। मधुबन वालों को आशाओं के दीपक जगाने आते हैं ना? तो सदा मधुबन में दीवाली हैं ना! सदा शुभ आशाओं के दीप जग रहे हैं तो रोज़ दीपावली हो गई। तो मधुबन में कभी अंधकार हो नहीं सकता! मधुबन वाले मास्टर शिक्षक हो। आप सिखाओ, न सिखाओ लेकिन आपका हर कर्म हरेक आत्मा को शिक्षा देता रहता है। चाहे साधारण भी करेंगे तो भी सीखकर जाते हैं और श्रेष्ठ करते हो तो भी सीखकर जाते हैं। शिक्षा देते नहीं हो लेकिन मधुबन निवासी बनना अर्थात् मास्टर शिक्षक बनना। तो सदा याद रखो कि मैं मास्टर शिक्षक हूँ। तो हर कर्म, हर बोल शिक्षा देने वाला हो। आप लोगों को खास

तख्त पर बैठकर सिखाने की ज़रूरत नहीं। चलते - फिरते शिक्षक हो। जैसे आजकल चलती - फिरती लाइब्रेरी होती है ना! तो आप चलते - फिरते मास्टर शिक्षक हो। आपका स्कूल अच्छा है ना! तो सदा अपने सामने स्टूडेन्ट को देखो, अकेले नहीं हो, सदा स्टूडेन्ट के सामने हो। सदा स्टडी कर भी रहे हो और करा भी रहे हो। योग्य शिक्षक कभी भी स्टूडेन्ट के आगे अलबेले नहीं होंगे, अटेन्शन रखेंगे। आप सोते हो, उठते हो, चलते हो, खाते हो, हर समय समझो - हम बड़े कालेज में बैठे हैं, स्टूडेन्ट देख रहे हैं, तो वन्डरफुल शिक्षक हो गये ना!

आप सबकी क्या महिमा करें? मधुबन वालों की जो भी महिमा है वह सब है। ऐसे महान समझते हुए सदा चलो। बाप जितनी महिमा करेंगे उतनी फिर निभानी भी पड़ेगी। तो निभाने में भी होशियार हो ना! मधुबन का नक्शा सारे विश्व में चला जाता है। सबकी बुद्धि में सदा क्या याद रहता है? मधुबन में क्या हो रहा है। तो सर्व की बुद्धि में स्मृति स्वरूप हो। मधुबन निवासी हरेक लाइट, माइट का गोला बनो। तो लाइट और माइट के अन्दर निवासी हरेक लाइट स्वयं ही सभी आकर्षित होकर आयेंगे। अभी तो बाप का कर्त्तव्य चल रहा है, उसके कारण बाप के बनने वाले बच्चे सहज ही अनुभव कर रहे हैं और करते रहेंगे। आपका कर्त्तव्य अभी गुप्त है। आप अभी अपने शक्ति स्वरूप से वायुमण्डल बनाओ। यह तो ड्रामा अनुसार होना ही है, बढ़ना ही है, चलना ही है इसलिए चलाने वाला चला रहा है लेकिन अभी ऐसे ही फालो फादर करो। अभी हर आत्मा शक्ति स्वरूप हो जाए। जिसके भी सम्पर्क में आते हो वह अलौकिकता का अनुभव करे। अभी वह पार्ट चलना है। सुनाया ना अभी अच्छा-अच्छा कहते हैं, लेकिन अच्छा बनना है यह प्ररेणा नहीं मिल रही है। उसका एक ही साधन है– संगठित रूप में ज्वाला स्वरूप बनो। एक-एक चैतन्य लाइट हाउस बनो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लग जाएं। अभी सिर्फ़ बाप शमा की आर्कषण है और सर्व शमा की आकर्षण हो जाए तो क्या होगा? शमा तो हो लेकिन अभी स्टेज पर नहीं आये हो। स्टेज पर आओ तो देखो आबू वाले कैसे आपके पीछे - पीछे दौड़ते हैं। आप लोगों को जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी वह स्वयं आकर कहेंगे– जी हजूर, कोई सेवा!

अभी लाडले बच्चे बने हो, इसमें तो ठीक, बच्चे और बाप के साथ लाडकोड में, सम्बन्ध निभाने में ठीक हो लेकिन अब मास्टर शिक्षक बनकर, मास्टर सतगुरु बनकर स्टेज पर आओ। अभी यह दो पार्ट रहे हुए हैं। समझा - अच्छा। मधुबन निवासियों को बाप-दादा सदा विशेष आत्मा के रूप में देखते हैं। सदा बाप की आशाओं के दीपक मधुबन निवासी है। सभी सन्तुष्ट तो सदा हो ना? सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना यही आप सबका सदा का सलोगन हो। सदा आपके बोर्ड पर कौन-सा सलोगन लिखा है? सन्तुष्ट रहना भी है और करना भी है। इसी सर्टिफिकेट वाले भविष्य में भी राज्य भाग्य का सटीफिकेट ले लेंगे। तो मधुबन वालों ने यह सर्टीफिकेट तो लिया है ना सदा! अमृतवेले इस सलोगन को स्मृति में लाओ। जैसे बोर्ड पर सलोगन लिखते हो वैसे सदा अपने मस्तक के बोर्ड पर यह सलोगन दौड़ाओ। तो सभी सन्तुष्ट मूर्तियाँ हो जायेंगे। अच्छा।

सेवाधारियों के साथ– सेवाधारी, किस स्थान के सेवाधारी हो? यह तो अच्छी तरह से जानते हो ना कि महायज्ञ के सेवाधारी हैं। जो महायज्ञ के सेवाधारी हैं उन्हों को यज्ञ से प्रसाद मिलता है। यज्ञ के प्रसाद का बहुत महत्व होता है ना! वैसे भी लौकिक में भी प्रसाद मिलने वाले को महान आत्मा, भाग्यवान आत्मा कहा जाता है। सबको प्रसाद नहीं मिलता है। भाग्यवान को मिलता है। तो यह है महायज्ञ का महाप्रसाद। महाप्रसाद क्या है? सदा कमाई जमा होना, सर्व ख़ज़ाने प्राप्त होना यही महाप्रसाद है। क्योंकि देखो, यहाँ यज्ञ सेवा करने से जो सबसे श्रेष्ठ ख़ज़ाना है– शक्तियों का, सुख का, शान्ति का वह सर्व ख़ज़ानों की अनुभूति होती है ना! तो यही यज्ञ-प्रसाद है। इसी प्रसाद द्वारा सदा प्रसन्न भी रहते हो और आगे भी सदा प्रसन्न रहेंगे। तो सबसे बड़ा ख़ज़ाना वा प्रसाद प्रसन्नता की प्राप्ति। यहाँ रहते सदा प्रसन्न रहे हो ना? किसी भी प्रकार के वातावरण में प्रसन्न रहने के अभ्यासी बन गये। वातावरण आपको अपनी तरफ न खीचें। लेकिन आप वातावरण को परिवर्तन कर लो, यह है महावीर की निशानी। तो क्या आप समझते हो महाप्रसाद मिला? महाप्रसाद लेने वाले महान भाग्यवान हो।

जितनी भी आत्माओं की सेवा की उन सर्व आत्माओं की शुभ भावना आपके प्रति आशीर्वाद का रूप बन गई। तो कितनी आत्माओं की आशीर्वाद मिली होगी? सर्वश्रेष्ठ आत्माओं की आशीर्वाद अनेक जन्मों के लिए सदा सम्पन्न बना देती है। तो सबकी आशीर्वाद ली? सदा राज़युक्त अर्थात् राजी रहे? कभी सेवा में नाराज़ तो नहीं हुए? सदा राजी। कोई नाराज़ करे तो भी नाराज़ न हों क्योंकि जो राज क़ो जानते हैं कि यह वैरायटी वृक्ष है, तो इस राज़ को जानने वाले कभी नाराज़ नहीं होते। नाराज़ होना अर्थात् इस राज़ को न जानना। तो सभी राज़युक्त हो।

सेवा का चान्स मिला अर्थात् लाटरी का लकी नम्बर खुल गया। सेवाधारी अर्थात् लकी नम्बर वाले। लकी नम्बर हैं ना? लकी नम्बर बहुत थोड़ों का निकलता है और लकी नम्बर में सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति होती है। लकी नम्बर अर्थात् स्वयं लकी बन गये। अच्छा-माताओं ने जन्म-जन्म का खाता जमा किया। एक जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध बनाना, यह तो सस्ता सौदा हो गया ना! थोड़ा-सा समय मेहनत और जन्म-जन्म का फल। तो सभी ने सस्ता सौदा करके अपनी कमाई जमा कर ली। मातायें सदा सहयोगी रहीं,

इसकी मुबारक हो। जैसे यहाँ सेवा का भाग्य बनाया वैसे इस भाग्य को सदा साथ रखना। सदा भाग्य का दीपक जगा रहे इसके लिए सदा अटेन्शन। अपना भाग्य साथ रखना अर्थात् भाग्यविधाता को साथ रखना। आपके भाग्य का सितारा चमकता हुआ देख औरों का भी भाग्य खुल जायेगा। अच्छा।

प्रश्न– कुमारियों को कौन-सी कमाल करके दिखानी चाहिए?

उत्तर– सबसे बड़े ते बड़ी कमाल है– बाप ने कहा और बच्चों ने किया। जैसे चात्रक होता है ना, बूंद आई और धारण की। तो सबसे बड़ी कमाल है बाप का हर बोल करके दिखाना। कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है कुमारियों की कमाल। इसीलिए यादगार में भी दिखाते हैं– कुमारियों ने बाप को प्रत्यक्ष किया। विजय प्राप्त की ना! तो वह कौन-सी कुमारी थी? हरेक समझें मैं। इसमें हरेक अपने को आगे रखे। पहले मैं। इसको कहा जाता है कुमारियों की कमाल। हरेक बाप को प्रत्यक्ष करने वाली निमित्त आत्मा बन जाए, सभी अमूल्यय रत्न हो जायेंगे। अच्छा!

29-12-81

दूरदेशी बच्चों से दूर देशी बाप दादा का मिलन

दूरदेशी अव्यक्त बापदादा बोले:–

''आज बापदादा अपने लवली अर्थात् लवलीन बच्चों से मिलने आये हैं। दूरदेश से आये हैं। दूरदेश से आये हुए बच्चों से दूरदेशी बापदादा मिलन मनाने के लिए आये हैं। जितना बच्चों ने बापदादा को दिल से याद किया तो दिल की याद का रेसपान्ड दिलाराम बाप देने के लिए आये हैं। आप एक-एक लवलीन आत्मायें दिखाई दे रही हैं। जिन्होंने दूर होते हुए भी अपना याद प्यार भेजा है वो सब लवली आत्मायें आकारी रूप में इस संगठन के बीच बापदादा के सामने इमर्ज हैं। बापदादा के सामने बहुत बड़ी सभा लगी हुई है। आप सबके अन्दर जो सबका याद-प्यार समाया हुआ है वह याद का रूप आकार रूप में सबके साथ है। बापदादा सभी बच्चों के उमंग-उत्साह और खुशी के गीत सुन रहे हैं। इतने प्यार के, खुशी के गीत बापदादा सिर्फ़ देख नहीं रहे हैं। लेकिन देखने के साथ-साथ गीत-माला सुन भी रहे हैं। सभी बच्चों के अन्दर, दिल में वा नयनों में एक ही बाप के याद की एकरस स्थिति की झलक दिखाई दे रही है।

''एक बाप दूसरा न कोई'', इसी स्थिति में स्थित बच्चों को देख रहे हैं। आज मेले में आये हैं। वाणी सुनाने नहीं आये हैं। सिर्फ़ तकदीरवान बच्चों की तस्वीरें देखने आये हैं। खिले हुए रूहे गुलाब बच्चों की खुशबू लेने आये हैं। सभी बच्चों ने हिम्मत के आधार पर, स्नेह का प्रत्यक्ष फल सम्मुख मिलन का अच्छा दिखाया है। भिन्न -भिन्न प्रकार के बन्धनों को पार करते हुए अपने स्वीट होम में पहुँच गये हैं। ऐसे बन्धनमुक्त बच्चों को बापदादा पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं।

छोटे-छोटे बच्चों की भी कमाल है। यह छोटे बच्चे संगमयुग का श्रृंगार हैं और भविष्य में क्या करेंगे? अब के श्रृंगार हो, भविष्य के अधिकारी हो। सबकी हथेली पर स्वर्ग के स्वराज्य का गोला दिखाई दे रहा है ना! जो चित्र बनाया है वह एक का नहीं है, आप सबका है। अपना चित्र देखा है? समझते हो हम सबका चित्र है या एक श्रीकृष्ण का है? किसका है? आप सबका है कि नहीं? तो सदा याद रहता है कि आज ब्राह्मण और कल फ़रिश्ते से देवपदधारी बने कि बने? नालेज के दर्पण से अपना यह चित्र ''फ़रिश्ता सो देवता'' सदा दिखाई देता है? जैसे अभी सबके दिल का आवाज़ सदा निकलता है, कौन सा? ''मेरा बाबा''। ऐसे सदा नालेज के दर्पण में अपना चित्र देखते हुए यह आवाज़ निकलता है कि यह मेरा चित्र है? मेरा बाबा, मेरा चित्र! क्योंकि अभी अपने राज्य और राज्य करने के राज्य-अधिकारी स्वरूप के बहुत समीप आ रहे हो। जो समीप चीज़ आ जाती है वह स्पष्ट अनुभव होती है। तो ऐसे स्पष्ट अपना फ़रिश्ता स्वरूप, देवता स्वरूप अनुभव होता है? अच्छा।

आज तो विशेष बच्चों ने बुलाया और बापदादा बच्चों के आज्ञाकारी होने के कारण मिलन मनाने आये हैं। विशेष एक दो आत्माओं के कारण सभी बच्चों से मिलन हुआ। यही लगन का रेसपान्ड है। अच्छा- डबल फारेनर्स की पसन्दी सदा अलग-अलग मिलने की होती है। जैसे बाप बच्चों का दिल देखते हैं वैसे ही बाप भी बच्चों के दिल की रेसपान्ड करते हैं। तो मिलते रहेंगे। अब तो अल्लाह के बगीचे में पहुँच गये हो। मिलन मनाते रहेंगे। अच्छा।

ऐसे स्नेह के बन्धन में बंधने वाले और बाँधने वाले, सदा लवलीन बच्चों को, सदा बाप के गुणों के गीत गाने वाले खुशमिजाज बच्चों को, सदा खुशी के झूले में झूलने वाले खुशनसीब बच्चों को, सदा खुश रहने की मुबारक के साथ-साथ बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।''

छोटे-छोटे बच्चों से– बापदादा छोटे-छोटे बच्चों को देख बहुत खुश होते हैं। हरेक बच्चे के मस्तक पर क्या दिखाई दे रहा है? क्या है आपके मस्तक पर? आत्मा मणी के समान चमक रही है। बापदादा सभी बच्चों के मस्तक में चमकती हुई मणी देख रहे हैं। आप सबके मन में क्या संकल्प है? छोटे-छोटे बच्चे अर्थात् बापदादा के गले की माला के मणके। आप बच्चे किस नम्बर में हो, यह

जानते हो? (फर्स्ट नम्बर में) लक्ष्य कितना अच्छा रखा है। बापदादा तो छोटे बच्चों को आगे रखेंगे। पीछे नहीं। क्योंकि आप सभी छोटे बच्चे जन्म से पवित्र हो और पवित्र आत्माओं के संग में हो। इसलिए पवित्र आत्माओं को सदा नयनों पर रखते हैं। तो क्या हो गये आप सभी? ऑखों के तारे, नूरे रतन हो गये ना! ऐसे समझते हो? बच्चों की यादप्यार, आने के पहले ही पहुँच गई। सबने बहुत-बहुत, अच्छे-अच्छे चित्र भी भेजे। अच्छे-अच्छे लक्ष्य के संकल्प भी किये। जिन्होंने भी जो लक्ष्य रखा है, कोइ टीचर बनकर के जायेंगे, कोई नम्बरवन ब्रह्माकुमारी वा ब्रह्माकुमार बनकर जायेंगे। तो नम्बरवन टीचर वा ब्रह्माकुमार-कुमारी की विशेषता क्या ले जायेंगे? बहुत सहज है। सिर्फ़ एक छोटी-सी बात याद रखनी है। एक बाप की याद में रहना है। एक बाप का सन्देश हरेक को देना है। कोई भी परिस्थिति आये, बात आये, एकरस रहना है। बस यही नम्बरवन ब्रह्माकुमार कुमारी हैं। तो सहज है या मुश्किल है?

सभी सुबह को उठते ही गुडमार्निंग करते हो? याद में बैठते हो? अभी से भी रोज अमृतवेले उठते ही पहले याद में बैठना। अच्छा, आप सब छोटे-छोटे बच्चों को सबसे अच्छी कौन-सी चीज़ लगती है? (टोली) (फिर तो बापदादा ने सभी को टोली खिलाई)

डाक्टर्स के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकात:-

''सभी ने मिलकर सेकण्ड में शफा देने की कोई गोली निकाली है? आजकल के समय और सरकमस्टेन्स प्रमाण अभी सेकण्ड में शफा पाने की इच्छुक अनेक आत्मायें हैं। प्रदर्शनी समझाओ, चाहे भाषण करो लेकिन सब भाषण सुनते, प्रदर्शनी देखते, इच्छा क्या रखते हैं कि सेकण्ड में शफा पायें। दो इच्छायें सर्व आत्माओं की हैं- एक तो सदा के लिए शफा हो और दूसरे– बहुत जल्दी से जल्दी शफा हो क्योंकि अनेक प्रकार के दु:ख-दर्द सहन करते-करते सब आत्मायें थकी हुई हैं। तो आप डबल डाक्टर्स के पास किस इच्छा से आयेंगी? इन दो इच्छाओं को लेकर के आयेंगी। आपस में जो मीटिंग की उसमें ऐसी कोई चीज़ निकाली? मेडीटेशन में भी सहज तरीका निकाला? एग्ज़ीबीशन तो बनायेंगे और बनी हुई भी है लेकिन हर चित्र में ऐसा सार भरो- जो उसी सार की तरफ अटेन्शन जाते ही शान्ति और सुख की अनुभूति करें। क्योंकि विस्तार तो सब जानते हैं लेकिन हर चित्र में रूहानियत हो। जैसे कोई भी चीज़ में सेन्ट लगा दो,खुशबू लगा दो तो कोई भी चीज़ में वह खुशबू आकर्षित ज़रूर करेगी। अनुभव करेंगे– हाँ, यह खुशबू हाँ से आ रही है। चित्र तो भले बनाओ लेकिन चित्र के साथ जो प्रभाव पड़ेगा वह चित्र में भी चैतन्यता भरी हो। जैसे देखो, यहाँ मधुबन में जड़ में चैतन्यता का अनुभव करते हो ना! हर स्थान पर जाओ, चाहे झोपड़ी में जाओ लेकिन क्या अनुभव करते हो? चैतन्यता का अनुभव करते हो ना? इसी रीति से वायुमण्डल ऐसा बनाओ, वायब्रेशन ऐसे फैलाओ जो चित्रों में भी चैतन्यता का अनुभव हो। जो भी स्टाल बनाओ, तो जैसे साइंस वाले कहाँ हरियाली की फीलिंग दिलाते हैं, कहाँ सागर की, पानी की फीलिंग दिलाते हैं। ऐसा स्टाल बनाते हैं जो अनुभव होता है कि सागर में आ गये हैं, पहाड़ी पर आ गये हैं। इसी रीति से वातावरण ऐसा हो जो अनुभव करें- कि सुख के स्थान पर पहुँच गये हैं। वैसे मेहनत जो की है वह अच्छी की है। मिलन भी हुआ, प्लैन भी निकाले। अभी आवश्यकता है पॉइन्ट रूप बन पॉइन्ट देने की। पॉइन्ट द्वारा पॉइन्ट बताना यह समय अभी नहीं है। लेकिन पॉइन्ट रूप बनकर पॉइन्ट शार्ट में देनी है। तो ऐसा स्वयं को भी शक्तिशाली स्टेज पर सदा लाओ और दूसरों को भी ऐसी स्टेज पर खींचो। जो आपके सामने आते हैं ऐसे अनुभव करे कि किसी ऐसे स्थान पर पहुँच गये हैं, जहाँ जो प्राप्ति चाहिए वह होगी। जैसे स्थूल डाक्टरी द्वारा पेश्न्ट को फेथ में लाते हो ना कि यह डाक्टर बड़ा अच्छा है, यहाँ से शफा मिल जायेगी। ऐसे रूहानी डाक्टरी में भी ऐसी शक्तिशाली स्टेज हो जो सबका फेथ हो जाए कि यहाँ पहुँचे हैं तो प्राप्ति अवश्य होगी। दोनों ही बातें निकाली हैं ना? दोनों का बैलेन्स हो। वह भी जरुरी है- क्योंकि आजकल के समय अनुसार जो बहुत जन्मों के हिसाब-किताब अर्थात् कर्मभोग हैं वह समाप्त भी ज़रूर होने हैं। कर्मभोग का हिसाब खत्म करने के लिए स्थूल दवाई और कर्मयोगी बनाने के लिए यह रूहानी दवाई। अभी सब भोग कर खत्म करेंगे। चाहे मंसा द्वारा, चाहे शरीर द्वारा। सभी आत्मायें मुक्तिधाम में जायेंगी ना! अभी न रोगी रहेंगे, न डाक्टर रहेंगे। इसकी प्रैक्टिस अन्त में भी होगी। जो डाक्टर होंगे लेकिन कुछ कर नहीं सकेंगे, इतने पेशन्ट होंगे। बस उस समय सिर्फ़ अपनी दृष्टि द्वारा, वायब्रेशन द्वारा, उनको टैम्प्रेरी वरदान द्वारा शान्ति दे सकते हो। मरेंगे भी बहुत। मरने वालों के लिए जलाने का ही समय नहीं होगा। क्योंकि अति में जाना है ना अभी। अति में जाकर अन्त हो जायेगी। अभी के समाचारों के अनुसार भी देखों कोई नई बीमारी फैलती है तो कितनी फास्ट फैलती है। जब तक डाक्टर उस नई बीमारी की दवाई निकाले- तब तक कई खत्म हो जाते हैं। क्योंकि अति में जा रहा है। और जब ऐसा हो तब तो डाक्टर भी समझें कि हमसे भी कोई श्रेष्ठ चीज़ है। अभी तो अभिमान के कारण कहते हैं, आत्मा वगैरा कुछ नहीं है। डाक्टरी ही सब कुछ है। फिर वह भी अनुभव करेंगे। जब कुछ भी कन्ट्रोल नहीं कर पायेंगे तो कहाँ नज़र जायेगी? अभी तो नई-नई बीमारियाँ कई आने वाली हैं। लेकिन यह नई बीमारियाँ नया परिवर्तन लायेगी।

आप लोग तो बहुत-बहुत भाग्यवान आत्मायें हो जो विनाश के पहले अपना अधिकार पा लिया। और सब चिल्लायेंगे, हाय हमने कुछ नहीं पाया, और आप बापदादा के साथ दिलतख्त नशीन होकर उन्हों को वरदान देंगे। तो कितने भाग्यवान हो। सदा ही खुश रहते हो ना? सदा इसी मस्ती में झूमते हुए सभी पेशन्ट को भी सदा खुशी के झूले में झुलाओ। फिर आपको ही भगवान का ही

अवतार मानने लग जायेंगे लेकिन आप फिर इशारा करेंगे यथार्थ की तरफ। जब ऐसे भावना में आवें तब इशारा कर सकेंगे ना! तो सभी ऐसे तैयार हो ना? सभी डाक्टर का बहुत अच्छा ग्रुप है। अब ऐसा ही वी.आई.पीज ग्रुप लाओ। जो जैसा होता है वह वैसा ही लाता है ना! तो जितने डाक्टर्स आये हैं उतने वी.आई.पीज तो आयेंगे ही ना!

फारेन में भी अनुभव के आगे सब झुक जाते हैं। साइंस, साइलेंस की शक्ति के आगे झुकेगी ज़रूर। अभी बड़े-बड़े साइंस वाले भी नाउम्मीद होने लग गये हैं। कहाँ जायेंगे? जहाँ आप साइलेंस वालो की किरणें दिखाई देंगी वहाँ ही नज़र जायेगी। आपके एटम से ही उन्होंने एटम बनाया है। कापी तो आपको की है। अगर आत्मिक शक्ति नहीं होती तो यह एटामिक बाम्बस बनाने वाला कौन? जब चारों ओर अंधकार छा जायेगा तब आपकी किरणें अंधकार में स्पष्ट दिखाई देंगी। नालेज की लाइट, गुणों की लाइट, शक्तियों की लाइट, सब लाइट्स, लाइट हाउस का कार्य करेंगी। मधुबन में आये रिफ्रेश भी हुए और सेवा भी हुई और प्रत्यक्ष फल भी मिल गया। प्लैन्स जो बनाये हैं उनको आगे बढ़ाते रहना। बापदादा के पास तो आपके संकल्प भी पहुँच जाते हैं। कागज तो आप पीछे लिखते हो। अच्छा-

पार्टियों के साथ:-

संगमयुगी ब्राह्मणों का श्रृंगार है: सर्वशक्तियाँ और सर्वगुण:– सदा बाप की याद के छत्रछाया के अन्दर रहते हो? ऐसे अनुभव करते हो कि सदा बाप की छत्रछाया हमारे ऊपर है? जैसे कल्प पहले के यादगार में देखा है कि पहाड़ी को छत्रछाया बना दिया। तो सारे कलियुगी समस्याओं के पहाड़ को बाप की याद द्वारा समस्या नहीं लेकिन छत्रछाया बना दिया? ऐसे समस्याओं का समाधान करने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान हो? किसी भी प्रकार की समस्या स्वयं को कमज़ोर तो नहीं बनाती है? विघ्न-विनाशक हो? लगन के आधार पर विघ्न क्या अनुभव होता है? एक खिलौना। जैसे खिलौने से खेलते हैं, घबराते नहीं हैं, खुशी होती है। ऐसे किसी भी प्रकार के विघ्न एक खेल के समान खिलौने लगते हैं। इसको कहा जाता है– मास्टर सर्वशक्तिवान तो सर्वशक्तिवान अपने जीवन का एक श्रृंगार बन गई हैं? संगमयुगी ब्राह्मणों का श्रृंगार ही है सर्वशक्तियाँ। तो सर्वशक्तियों से श्रृंगारी हुई सजी सजाई मूर्त्त। अभी गुणों और शक्तियों से सजे हुए और भविष्य में स्थूल गहनों से सजे हुए। लेकिन अब का श्रृंगार सारे कल्प से श्रेष्ठ है। 16 श्रृंगार, 16 कला सम्पन्न। तो अभी से संस्कार डालने हैं ना! तो ऐसी सजी सजाई मूर्त्त हो ना! अच्छा।

31-12-81

नव वर्ष पर बापदादा द्वारा दिया गया सलोगन– ''निर्बलता हटाओ''

अति स्नेही और समीप बच्चों के प्रति नव वर्ष के अवसर पर अव्यक्त बापदा बोले:–

''बापदादा, सदा हर कदम में, हर संकल्प में उड़ती कला वाले बच्चों को देख रहे हैं। सेकण्ड में अशरीरी भव का वरदान मिला और सेकण्ड में उडा।'' अशरीरी अर्थात् ऊंचा उड़ना। शरीर भान में आना अर्थात् पिंजड़े का पंछी बनना। इस समय सभी बच्चे अशरीरी भव के वरदानी उड़ते पंछी बन गये हो। यह संगठन स्वतन्त्र आत्मायें अर्थात् उड़ते पंछियों का है। सभी स्वतन्त्र हो ना? आर्डर मिले अपने स्वीट होम में चले जाओ तो कितने समय में जा सकते हो? सेकण्ड में जा सकते हो ना! आर्डर मिले अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज द्वारा, अपनी सर्वशक्तियों की किरणों द्वारा अंधकार में रोशनी लाओ, ज्ञान सूर्य बन अंधकार को मिटा लो, तो सेकण्ड में यह बेहद की सेवा कर सकते हो? ऐसे मास्टर ज्ञान सूर्य बने हो? जब साइन्स के साधन सेकण्ड में अंधकार से रोशनी कर सकते हैं तो हे ज्ञान सूर्य बच्चे, आप कितने समय में रोशनी कर सकते हो? साइन्स से तो साइलेन्स की शक्ति अति श्रेष्ठ है। तो ऐसे अनुभव करते हो कि सेकण्ड में स्मृति का स्विच आन करते अंधकार में भटकी हुई आत्मा को रोशनी में लाते हैं? क्या समझते हो?

सात दिन के सात घण्टे का कोर्स दे अंधकार से रोशनी में ला सकते हो वा तीन दिन के योग शिविर से रोशनी में ला सकते हो? वा सेकण्ड की स्टेज तक पंहुच गये हो? क्या समझते हो? अभी घण्टों के हिसाब से सेवा की गति है वा मिनट वा सेकण्ड की गति तक पहुँच गये हो? क्या समझते हो? अभी टाइम चाहिए वा समझते हो कि सेकण्ड तक पहुँच गये हैं? जो चैलेन्ज करते हो– सेकण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त करो, उसको प्रैक्टिकल में लाने लिए तैयार हो स्व-परिवर्तन की गति सेकण्ड तक पंहुची है? क्या समझते हो? पुराना वर्ष समाप्त हो रहा है, नया वर्ष आ रहा है, अभी संगम पर बैठे हो। तो पुराने वर्ष में स्व-परिवर्तन व विश्व-परिवर्तन की गति कहाँ तक पहुँची है? तीव्र गति रही? रिजल्ट तो निकालेंगे ना तो इस वर्ष की रिजल्ट क्या रही? स्व-प्रति, सम्बन्ध और सम्पर्क प्रति वा विश्व की सेवा प्रति। इस वर्ष का लक्ष्य मिला? जानते है ना– उड़ता पंछी वा उड़ती कला। तो इसी लक्ष्य प्रमाण गति क्या रही? जब सबकी गति सेकण्ड तक पहुँचेगी तो क्या होगा? अपना घर और अपना राज्य, अपने घर लौटकर राज्य में आ जायेंगे।

तो नये वर्ष में नया उमंग, हर संकल्प और सेकण्ड में हर कर्म में प्राप्ति के सिद्धि की नवीनता हो। अभी कल से क्या शुरू होगा?

नया वर्ष तो होगा लेकिन क्या कहेंगे? नया वर्ष कहाँ से शुरू होता है? लौकिक में भी वन-वन से शुरू होगा ना! और आप क्या शुरू करेंगे? वह तो वन से शुरू होगा, आपका क्या रहेगा? ''वन और विन''। हर संकल्प में विन अर्थात् विजय हो।हर दिन अपने मस्तक पर इस वर्ष का कौन-सा तिलक लगायेंगे? ''विजय का तिलक''। सलोगन कौन-सा याद रखेंगे? ''हम विजयी रत्न कल्प-कल्प के विजयी हैं। विजयी थे, विजयी हैं और सदा विजयी रहेंगे।'' ताज कौन-सा धारण करेंगे? ''लाइट और माइट'' यह डबल ताज धारण करना। क्योंकि लाइट है और माइट कम है तो सदा सिद्धि स्वरूप नहीं हो सकते। लाइट के साथ माइट भी है तब ही सदा विजयी बन जायेंगे। लाइट और माइट के डबल ताजधारी।

कंगन कौन-सा पहनेंगे? कंगन भी जरुरी है ना? कौन-सा कंगन अच्छा लगता है? प्यूरिटी का कंगन तो है ही। लेकिन इस विशेष वर्ष का नया कंगन कौन-सा पहनेंगे? (किसी ने कहा सहयोग, किसी ने कहा संस्कार मिलन का, अनेक उत्तर मिले) यह तो सारी बाँह ही कंगनों से भर जायेगी।

इस वर्ष का यही विशेष कंगन बाँधना कि– ''सदा उत्साह में रहना है और उत्साह में सर्व को सदा आगे बढ़ाते रहना है।'' न स्वयं का उत्साह कम करना है, न औरों का कराना है। इसके लिए सदा कंगन को मजबूत रखने के लिए व टाइट रखने के लिए एक ही बात सदा याद रखना– ''हर बात में चाहे स्व के प्रति, चाहे औरों के प्रति आगे बढ़ने और बढ़ानें के लिए मोल्ड होना ही रीयल गोल्ड बनना है।'' अच्छा-कंगन भी पहन लिया। अभी विशेष सेवा का लक्ष्य क्या रखेंगे? जैसे आजकल की गवर्नमेन्ट हर वर्ष का विशेष कार्य बनाती है, उस गवर्नमेन्ट ने तो अपंगों का बनाया था। आप क्या करेंगे? जैसे बाप की महिमा में गायन करते हैं- ''निर्बल को बल देने वाला''। जैसे स्थूल में निर्बल आत्माओं को साइन्स के साधनों से बलवान बना देते हैं। लंगड़े को चलाने की शक्ति दे देते हैं। इसी प्रकार हरेक कमज़ोर को शक्ति के साधन दे देते हैं। ऐसे आप सभी भी, चाहे ब्राह्मण परिवार में, चाहे विश्व की आत्माओं में हर आत्मा को, निर्बल को बल देने वाले महाबलवान बनो। जैसे वह लोग नारा लगाते हैं– ग़रीबी हटाओ, वैसे आप निर्बलता को हटाओ। ''हिम्मत और मद'' निमित्त बन बाप से दिलाओ। तो इस वर्ष का विशेष नारा कौन-सा हुआ? ''निर्बलता हटाओ''। तब ही जो सलोगन मिला सदा उत्साह दिलाने का, वह प्रैक्टिकल में ला सकेंगे। समझा, नये वर्ष में क्या करना है?

डबल फारेनर्स को न्यू ईयर का महत्व ज्यादा रहता है। तो न्यू ईयर का महत्व इस महानता से सदा रहेगा। 82 का वर्ष महत्व मनाओ फिर 83 में क्या करेंगे? 83 में इस सर्व महानता द्वारा सिद्धि स्वरूप, सिद्धि पाने वाले, सर्व कार्य सिद्ध होने वाले, सर्व को सिद्धि प्राप्त करने की सेकण्ड की विधि बताना। ऐसा सिद्धि का वर्ष मनाओ। कार्य भी सर्व सिद्ध हों, संकल्प भी सिद्ध हो और स्वरूप भी सदा सिद्धि स्वरूप हो। तब ही प्रत्यक्षता और जय-जयकार का नारा लगेगा। साईस सदा सिद्धि स्वरूप नहीं होती। लेकिन आप सभी सदा सिद्धि स्वरूप हो। (आज लाइट बीच-बीच में बहुत आती-जाती थी) आपके राज्य में यह खिट-खिट होगी? आपके स्वीट होम में तो इसकी आवश्यकता ही नहीं है। तो अभी अपने स्वीट होम और स्वीट राजधानी को समीप लाओ अर्थात् स्वयं जाओ। समझा क्या करना है? अच्छा!

ऐसे सदा एक की याद में रहने वाले, एक के साथ सर्व का सम्बन्ध जुड़वाने वाले, सदा एक रस स्थिति में रहने वाले, ऐसे बाप समान, बापदादा को स्वयं और सेवा द्वारा प्रत्यक्ष करने वाले, प्रत्यक्ष फल स्वरूप, अति स्नेही और समीप बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

(विदेशी बच्चों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात)

नैरोबी पार्टी:– सर्व बच्चे अति स्नेही और सहयोगी आत्मायें हैं। ऐसे अनुभव करते हो? जो स्नेही होगा वह सहयोगी बनने के सिवाए रह नहीं सकता। वैसे भी लौकिक में देखो– जहाँ स्नेह होता है वहाँ तन-मन-धन से स्वत: ही न्योछावर हो जाते हैं अर्थात् सहयोगी बन जाते हैं। तो आप सभी बाप के अति स्नेही हो इसलिए सर्व प्रकार के सहयोगी आत्मायें भी हो। तो बापदादा अति स्नेही और सहयोगी बच्चों को देख खुश होते हैं। जैसे बच्चे बाप को देख खुश होते हैं, तो बाप बच्चों को देखकर और ही पदमगुणा खुश होते हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं कि बच्चा कितना तकदीरवान है। हरेक के तकदीर की रेखा कितनी महान है। वे आजकल के महात्मा तो आप लोगों के आगे कुछ भी नहीं हैं, नामधारी हैं और आप प्रैक्टिकल काम करने वाले हो। तो क्या से क्या बन गये हो और क्या बनने वाले हो? यह खुशी रहती है? धरती पर रहते हो या तख्त पर रहते हो? धरती पर तो नहीं आते? धरती को छोड़ चुके ना? बाप को बुलाते हैं– छोड़ भी दे आकाश सिंहासन...। और बाप कहते हैं– छोड़ भी दे धरती का सिंहासन और दिल का सिंहासन ले लो। तो सभी ने यह सिंहासन ले लिया है, फिर वापस अपने धरती पर तो नहीं आ जाते? धरती की आकर्षण तो नहीं खींचती है? क्योंकि धरती पर रहकर तो देख लिया है ना कि धरती की आकर्षण कहाँ ले गई? नर्क की तरफ ले गई ना! और अभी दिलतख्त सो विश्व के राज्य तख्तनशीन बन गये तो यह आकर्षण स्वर्ग की ओर ले जायेगी। तो एक बार के अनुभवी सदा के लिए समझदार बन गये। टाइटल ही है– ''नालेजफुल''। नालेजफुल कभी धोखा नहीं खा सकते। अच्छा-सभी सदा सन्तुष्ट रहने वाले हो ना? कोई कम्पलेन्ट नहीं। न अपनी न दूसरों की। कम्पलेन्ट है तो कम्पलीट नहीं। अपने प्रति भी कम्पलेन्ट रहती है-योग

नहीं लगता, नष्टोमोहा नहीं हैं, जैसा होना चाहिए वैसा नहीं हैं। तो यह कम्पलेन्ट हुई ना! तो सब कम्पलेन्ट समाप्त अर्थात् कम्पलीट सम्पूर्ण बनना। अच्छा।

बापदादा को तो सदा बच्चों के ऊपर नाज़ रहता है, यही बच्चे कल्प-कल्प के अधिकारी हैं। बापदादा हरेक रत्न की वैल्यु को जानते हैं। बच्चे कभी-कभी अपनी वैल्यु को कम जानते हैं। बाप तो अच्छी तरह से जानते है। कैसा भी बच्चा हो, भले अपने को लास्ट नम्बर में समझता हो, तो भी महान है क्योंकि कोटो में कोई-कोई में भी कोई है। तो करोड़ो में से वह एक भी महान हुआ ना! तो सदा अपनी महानता को जानो इससे महान आत्मा बन फिर देवात्मा बन जायेंगे। नैरोबी वाले कहाँ तक विस्तार करके पहुँचे हैं? नैरोबी में ही बैठे हो या चक्रवर्ती हो? जो स्वयं नहीं उड़ सकते, उन्हों को बल देकर उड़ने वाले हो ना! नैरोबी की विशेषता ही है परिवार के परिवार, छोटे से बड़े तक परिवर्तन हो गये हैं। क्योंकि गुजरात का फाउन्डेशन है। अफ्रीका में भी किन्हों का भाग्य खुला? अफ्रीका में रहते भारतवासी भाग्यवान बनें। थोड़ा सा परिचय का पानी पड़ने से बीज निकल आया। अभी की विशेष सेवा यह हो जो पहले हरेक की आवश्यकता है उसको परखो और परखने के बाद प्राप्ति स्वरूप बन प्राप्ति कराओ। परखने की शक्ति से ही सेवा की सिद्धि हो सकती है। अच्छा।

लण्डन पार्टी– लण्डन निवासी तो हैं ही सेवा के फाउण्डर। लण्डन सेवा का मुख्य स्थान है। सबकी जनर लण्डन के ऊपर है। लण्डन से क्या डायरेक्शन मिलते हैं! तो मेन सेवा का सर्विस स्थान लण्डन हो गया ना! तो लण्डन निवासी हैं विशेष सेवाधारी। ब्राह्मण जीवन का धन्धा ही है सेवा। तो सदा इसी सेवा में बिजी रहते हो? देखो, बिजनेसमैन की बुद्धि में रात को स्वप्न में भी क्या आयेगा? जो बिजनेस होगा वही आयेगा। रात को स्वप्न में भी ग्राहक व चीज़े ही दिखाई देंगी। तो आप को स्वप्न में क्या आयेगा? आत्माओं को मालामाल कर रहे हैं। स्वप्न में सेवा, उठते भी सेवा, चलते-फिरते भी सेवा। इसी सेवा के आधार पर स्वयं भी सदा सम्पन्न भरपूर और औरों को भी सदा भरपूर कर सकते हो। हरेक अमूल्य रत्न हो, चाहे लण्डन का राज्य भाग्य एक तरफ रखें, दूसरे तरफ आप लोगों को रखें तो आपका भाग्य ज्यादा है। क्योंकि वह राज्य तो मिट्टी के समान हो जायेगा, आप सदा मूल्यवान हो। सदा बाप के अमूल्य रत्न हो। बापदादा एक-एक रत्न के विशेषता की माला जपते हैं। तो सदा अपने को ऐसी विशेष आत्मा समझकर हर कदम उठाते रहो। अभी सब प्रकार के बोझ समाप्त हो गये हैं ना! अभी पिंजड़े की मैना से उड़ते पंछी हो गये। कण्ठी वाले उड़ने वाले तोते बन गये। पिंजड़े वाले नहीं, बापदादा के गीत गाने वाले। लण्डन निवासी, हिन्दी जानने वालों को पहला चांस मिला है। फिर भी डायरेक्ट मुरली सुनने वाले लकी हो। ट्रान्सलेशन तो नहीं करनी पड़ती। इसको कहेंगे– 'तवा टू माउथ'। ट्रान्स-लेशन होने में फिर भी थोड़ी तो रोटी सूखेगी ना! तो आपका भाग्य अपना है, उन्होंका भाग्य अपना है। तो सभी ऐसे नहीं समझना कि विदेश में विदेशियों की ही महिमा है। आप लोगों का संगठन देखकर यह आत्मायें भी प्रभावित हुई। आप लोग निमित्त हो। फिर भी भारतवासियों को अपने बर्थप्लेस का नशा है। अच्छा।

कुमारों से– कुमार ग्रुप अर्थात् डबल स्वतन्त्र। एक लौकिक जिम्मेवारी से स्वतन्त्र और दूसरा आत्मा सर्व बन्धनों से स्वतन्त्र। माया के बन्धन और लौकिक बन्धन से भी स्वतन्त्र। ऐसे स्वतन्त्र हो ? डबल स्वतन्त्र आत्मायें डबल सेवा भी कर सकती हैं। क्योंकि कुमारों को स्वतन्त्र होने के कारण समय बहुत है। तो समय के ख़ज़ाने से अनेकों को सम्पत्तिवान बना सकते हो। सबसे बड़े से बड़ा ख़ज़ाना संगमयुग का समय है। तो कुमार ग्रुप अर्थात् समय के ख़ज़ाने से सम्पन्न और समय होने के कारण औरों की सेवा में भी सम्पन्न बन सकते हो। सेवा की सबजेक्ट में भी 100 ले सकते हो। सदा बन्धनमुक्त अर्थात् सदा योगयुक्त। संसार ही बाप हो गया ना! कुमारों का संसार क्या हैं? ''बापदादा''। औरों का संसार तो हद में है लेकिन आप लोगों का एक ही बेहद का संसार है। तो सहजयोगी भी हो क्योंकि संसार में ही बुद्धि जायेगी ना! संसार ही बाप है तो बुद्धि बाप में ही जायेगी। तो कुमारों को सहजयोगी बनने की लिफ्ट है।

तो अब अशान्त आत्माओं को शान्ति देना, भटकी हुई आत्माओं को ठिकाना देना, यह बड़े से बड़ा पुण्य करते रहो। जैसे प्यासी आत्मा को पानी पिलाना पुण्य है वैसे यह सेवा करना अर्थात् पुण्य आत्मा बनना। तो किसी भी अशान्त आत्मा को देख तरस आता है ना! रहमदिल बाप के बच्चे हो तो सदा पुण्य का काम करते रहो। अच्छा!